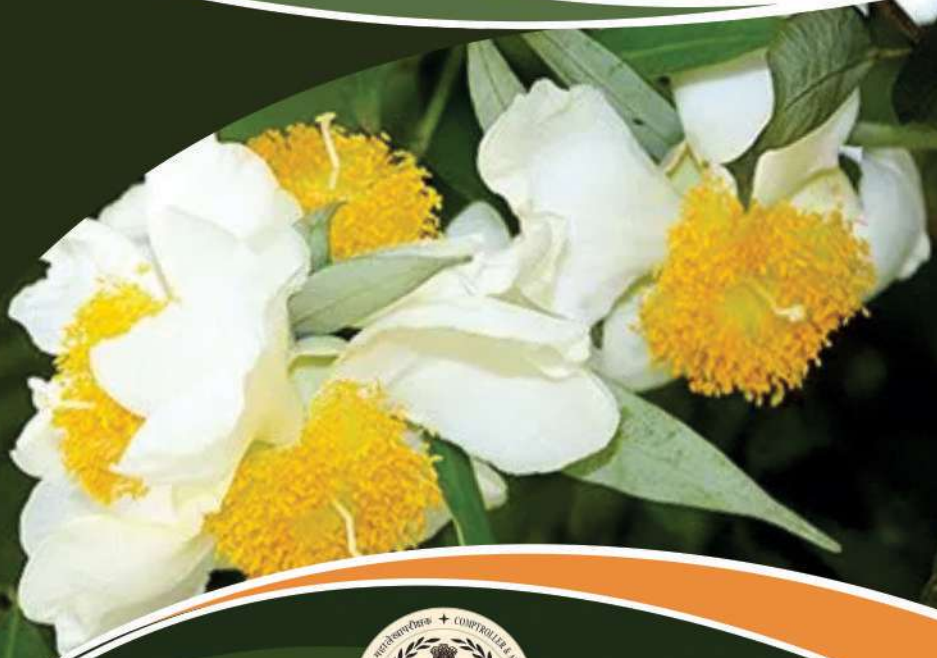


नागकेसर

प्रथम अंक | वर्ष 2023-24



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
एवं
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
त्रिपुरा, अगरतला



नागकेसर

'नागकेसर' एक सदाबहार एवं छायादार वृक्ष है जो देखने में अतीव सुंदर होता है। इसमें ग्रीष्म ऋतु में सफेद पुष्प लगते हैं जिनकी सुगंध अत्यधिक मनमोहक होती है। इसके पुष्प श्वेत और पीले रंग के होते हैं। इन फूलों के अंदर पीले केसरी रंग के पुंकेसर गुच्छों में आते हैं, इन्हें ही 'नागकेसर' कहते हैं।

इसकी लकड़ी की मजबूती के कारण इसे 'वज्रकाठ' भी कहा जाता है। इसका सूखा फूल औषधि एवं मसाले बनाने के काम में आता है तथा इसके रंग से प्रायः रेशम रंगा जाता है। इसे 'नागचम्पा' के नाम से भी जाना जाता है।

'नागकेसर' त्रिपुरा राज्य का राजकीय पुष्प है। राजकीय पुष्प से तात्पर्य राज्य के प्रतीक के रूप में चुने गये पुष्प से है। यह हिमालय के पूर्वी भाग, पूर्वी बंगाल, असम, त्रिपुरा, म्यांमार, दक्षिण भारत आदि क्षेत्रों में पाया जाता है।



नागकेसर

प्रथम अंक | वर्ष 2023-24

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
एवं
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
त्रिपुरा, अगरतला



नागकेसर

प्रथम अंक | वर्ष 2023-24

प्रधान संरक्षक

श्री हिमांशु काश्यप धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार

मुख्य संरक्षक

श्री राहुल कुमार, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
श्री पी. वी. चन्द्रशेखर, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
श्री ललित कुमार विमल, उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

संपादक मण्डल

श्री ऊदल सिंह सोलंकी, हिन्दी अधिकारी
श्री जावेद अहमद खान, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री जे. दासगुप्ता, सहायक लेखा अधिकारी
श्रीमती प्रियदर्शिनी सिंह, वरिष्ठ अनुवादक
सुश्री आरती, वरिष्ठ अनुवादक



संपादकीय



राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना न केवल हम सभी का परम कर्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी अनुक्रम में, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), त्रिपुरा, अगरतला की संयुक्त हिन्दी पत्रिका 'नागकेसर' का प्रथम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

'नागकेसर' पत्रिका के आवरण पृष्ठ और पार्श्व पृष्ठ राज्य की संस्कृति, कला और नृत्य एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की झलकियाँ प्रदर्शित करते हैं और इनसे संबंधित महत्वपूर्ण संक्षिप्त विवरण भी दर्शाते हैं। पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित व मौलिक अनुभवों, संस्मरणों, यात्रा वृत्तांतों, विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय और उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पायी है।

पत्रिका में एक ओर संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने वाले सिद्धांत वसुधैव कुटुम्बकम् का वर्णन है तो दूसरी ओर अदम्य मानवीय जिजीविषा को अभिव्यक्त करने वाला ढलता सूरज जैसा लेख है। लखनऊ के विभिन्न व्यंजनों का चित्रण, राजस्थान के रंग-बिरंगे जयपुर की सैर और अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह की यात्रा संबंधी लेख अतीव मनमोहक हैं। बाल

मनुहार कविता बाल जिज्ञासा को दशनि वाली और वात्सल्य से सिक्त है तो रिक्त स्थान की पूर्ति करें लेख जीवन के विभिन्न आयामों की परिस्थितिजन्य रिक्तता की पूर्ति करने की प्रेरणा देता है।

संपादक मण्डल और संरक्षक मण्डल दोनों ही कार्यालयों के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि वे भविष्य में पत्रिका हेतु अधिकाधिक मौलिक रचनायें अनवरत् रूप से प्रदान करते रहें और आशा करते हैं कि आगामी 'नागकेसर' पत्रिका के अंकों में विभिन्न नये-नये रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रासंगिक बनाने हेतु अपनी भूमिका का निर्वहन कर राजभाषा के विकास में अप्रतिम सहयोग प्रदान करते रहेंगे।



अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	बाल मनुहार	अनुपम कुलश्रेष्ठ	कविता	1-2
2.	कृष्ण प्रेम	अंकुर कुमार पाण्डेय	लेख	3-5
3.	पेन्शन अनुभाग और मेरा अनुभव	अनिदिता धर	लेख	6-9
4.	जीवन में कभी हार मत मानो	अनिल कुमार	लेख	10-11
5.	नन्ही-सी रोशनी	अमर आनंद मिन्ज	लेख	12-14
6.	मानव की इच्छाएँ	अमित गौरव	लेख	15-16
7.	वसुधैव कुटुम्बकम्	आरती	लेख	17-19
8.	सोशल मीडिया	आशीष कुमार गुप्ता	लेख	21-25
9.	हमारा लखनऊ	आशीष वर्मा	लेख	26-29
10.	प्राचीन भारत की महान् विभूतियाँ	ऊदल सिंह सोलंकी	लेख	30-35
11.	मेला सोनपुर का	ऋषभ राज	लेख	37-39
12.	खाली समय	कुलदीप	लेख	40-44
13.	प्रेम और स्वतंत्रता	कृष्ण कुमार	लेख	45-49
14.	अंतिम स्वतंत्र नवाब की भूमि में	गौतम सरकार	लेख	50-52
15.	अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह की यात्रा का अनुभव	चन्द्रिमा बिश्वास	लेख	53-59
16.	चाय और हमारा बचपन	पार्थसारथी चक्रवर्ती	लेख	60-62

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
17.	मेरा राजस्थान	प्रधान चौधरी	लेख	63-67
18.	वीकेन्ड	प्रियदर्शिनी सिंह	कविता	68-69
19.	राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान	-		70-75
20.	आंतरिक वातावरण में ताजा हवा की श्वास	बिल्टू साहा	लेख	76-80
21.	एक कार्यरत महिला के जीवन में मातृत्व की भूमिका	मंदाक्रांता नाथ चौधुरी	लेख	81-83
22.	नन्दलाल: एक उल्लेखनीय प्रेरणा	राहुल कुमार	लेख	84-86
23.	वन, वन विभाग और मेरा अनुभव	विनोद कुमार सोनी	लेख	87-93
24.	भारत में खेलों का भविष्य	विशाल सिंह	लेख	94-99
25.	प्रेरणा स्रोत: मेरी खता या तुम्हारी गलती	संदीप विश्वकर्मा	कविता	100-102
26.	ढलता हुआ सूरज	सायक नंदी	लेख	104-110
27.	रिक्त स्थान की पूर्ति करें	हिमांशु काश्यप धर्मदर्शी	लेख	111-115
28.	भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाएँ एवं उनकी लिपियाँ			116
29.	कार्यालय में आयोजित गतिविधियों की झलकियाँ			117-118

अस्वीकरण: 'नागकेसर' पत्रिका की रचना राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रयोजन से की गयी है। इसमें निहित लेख, कविताओं इत्यादि में अभिव्यक्त विचार, सुझाव मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय अथवा संपादक मण्डल इनसे सहमत हो।



संपादन सहयोग

श्री अनिल कुमार, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान
महालेखाकार (लेखा व हकदारी), त्रिपुरा, अगरतला

श्री अमर आनंद मिन्ज, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान
महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला

श्री कृष्ण कुमार, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान
महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला



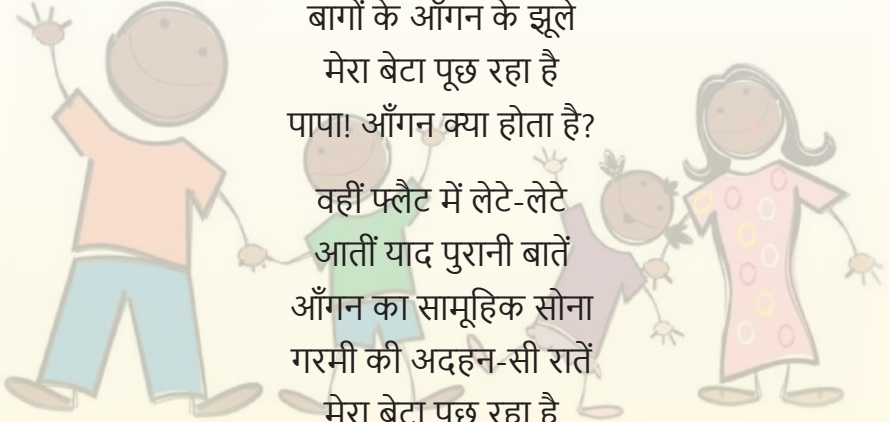
बाल मनुहार

अनुपम कुलश्रेष्ठ

भारत के उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सेवानिवृत्त)

मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा! सावन क्या होता है?
मेरी आँखें नम होती हैं
उतर रहे दिन बिसरे भूले
कुछ-कुछ उसको बतलाता हूँ
बागों के आँगन के झूले
मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा! आँगन क्या होता है?
वहीं फ्लैट में लेटे-लेटे
आर्ती याद पुरानी बातें
आँगन का सामूहिक सोना
गरमी की अदहन-सी रातें
मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा! अदहन क्या होता है?

सुनते ही यादों में महकी
माटी के चूल्हे की रोटी
छौंके हुये चने की खुशबू
बिन परथन की रोटी मोटी
मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा परथन क्या होता है?



यह कुछ भोले से सवाल हैं
उत्तर किंतु कहाँ से लाऊँ
महानगर में बँटते खटते
उसको मैं कैसे समझाऊँ?
मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा! सावन क्या होता है?



हिन्दी पखवाडा समारोह 2022 का आयोजन



अंकुर कुमार पाण्डेय
लेखाकार

भगवान क्या है? भगवान कौन है? यह हमेशा हम सब सोचते रहते हैं लेकिन कभी हम समझ नहीं पाते हैं उनकी शक्तियों को, कि आखिर वे हैं कौन? परंतु जन्म से पहले हम सभी को पता होता है कि भगवान कौन हैं, क्या हैं, फिर इस दुनिया में आने के बाद हम सभी भूल जाते हैं भगवान को। परंतु जब तक हम अपनी माँ के गर्भ में होते हैं, हम भगवान से निरंतर विनती करते हैं कि हे प्रभु! मुझे इस नर्क रूपी गड्ढे से बाहर निकालिए, हम सदैव आपकी भक्ति करेंगे, आपका स्मरण करेंगे, आपका नाम जपेंगे। इस दुनिया में और दूसरों को भी आपके नाम की महिमा बताएंगे। फिर इस दुनिया में आते ही हम सब भूल जाते हैं जो भी वादे किए होते हैं हमने भगवान से।

ये दुनिया एक ऐसा मायाजाल है जिससे हम सभी इससे प्रभावित होकर इसकी चकाचौंध देखकर भूल जाते हैं कि हमारा जन्म क्यों हुआ क्योंकि यह माया ही ऐसी है कि हमको कोई अच्छा काम नहीं करने देती है। हम बुरी चीजों की तरफ अग्रसर होते जाते हैं। जब तक हम बच्चे होते हैं तब तक हम बहुत प्रसन्न रहते हैं, फिर जब हम थोड़े से और बड़े होते हैं, तब हमें इस दुनिया की सच्चाई पता चलती है कि कोई किसी का नहीं है। हम किसी से कितना भी प्रेम करें अंत में हमें दुःख ही उठाना पड़ता है। अपने आँसू स्वयं से ही पोंछने पड़ते हैं। धीरे-धीरे करके बहुत-सी परेशानियाँ हमारे जीवन में आने लगती हैं, जैसे कि सफलता ना मिलना, नौकरी ना मिलना जैसी बहुत सारी परेशानियाँ आती हैं। हमारे जीवन में उसकी वजह से हम डिप्रेशन में जाने लगते हैं, हमें एंजाइटी होने लगती है। फिर हमें कुछ समझ में ही नहीं आता हम क्या करें? उसको ठीक करने के लिए निरंतर हम बहुत से प्रयास करते हैं। उसके बाद भी हम इन सारी चीजों से निकल

ही नहीं पाते हैं, इनमें ही फँस कर रह जाते हैं। परंतु जो हमें करना चाहिए, भगवान नाम का आश्रय लेना चाहिए, वह हम कभी नहीं करते हैं। अगर हम भगवान का चिंतन करें, भगवान से प्रेम करें, उनका स्मरण करें, तो हमें कभी कोई भी चीज परेशान नहीं कर सकती है क्योंकि भगवान से जो प्रेम करता है भगवान उससे प्रेम करते हैं। दुनिया को तो आप बहुत सारी चीजें देंगे लेकिन उसके बाद भी आपको वह सुख नहीं मिलेगा जो आप चाहते हैं। लेकिन भगवान आपसे कुछ नहीं मांगते हैं। वह सिर्फ आपसे प्रेम मांगते हैं। आप अगर उनको थोड़ा-सा प्रेम देंगे तो वह आपको बहुत सारा प्रेम करेंगे जैसे

श्री कृष्ण कहते हैं “तुम चलो एक पग मैं चलूँ पग साठ” अर्थात् यदि आप मुझ तक पहुँचने के लिए एक कदम बढ़ाएंगे तो मैं आपकी तरफ साठ कदम बढ़ाऊँगा।

यह मेरा खुद का महसूस किया हुआ है, एक टाइम था जब मैं भी बहुत परेशान था। कुछ समझ में नहीं आ रहा था मैं क्या करूँ क्या ना करूँ? बहुत कोशिशें कर ली खुद को इन सारी चीजों से निकालने की परंतु उसका कुछ असर नहीं हो रहा था। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ। फिर एक दिन मेरा मन हुआ वृंदावन जाने का। जब मैं मंदिर में पहुँचा तब भगवान के मंदिर का पर्दा लगा हुआ था। मैं बस एक टक देखे जा रहा था। सोचे जा रहा था कि जल्दी से पर्दा हटे और मैं दर्शन करूँ। प्रभु के लिए यह लालसा धीरे-धीरे इतनी ज्यादा जाग्रत हो गई मन में दर्शन करने की, एक झलक निहारने की। जैसे ही पर्दा हटा मेरी आँखें मिली प्रभु से।

उस दिन उस पल से मेरी सारी परेशानियाँ सब वहीं समाप्त हो गईं। मेरे आँखों से आँसू निकल रहे थे और ऐसा लग रहा था उन आँसुओं के जरिए मेरी सारी परेशानियाँ भगवान ग्रहण कर रहे हों और मुझे केवल

अपना प्रेम प्रदान कर रहे हों। उनके दर्शन के बाद से आज तक मैं बहुत ही खुश रहता हूँ। बहुत ही सकारात्मक अनुभव करता हूँ। ऐसा नहीं है कि मेरे जीवन में परेशानियाँ नहीं आई परंतु अब मुझे उनसे लड़ने की शक्ति श्री कृष्ण नाम से मिलती है क्योंकि श्री कृष्ण नाम जप की शक्ति ही इतनी ज्यादा है कि अगर आप दस मिनट भी भगवान को देते हैं और उनका नाम जप करते हैं, उनका भजन सुनते हैं तो आपके अंदर बहुत-सी सकारात्मकता रहेगी जो कि आपको कृष्ण भक्ति में ही मिल सकती है। भगवान को मत भूलिए, उनसे हमेशा जुड़े रहिए और उनका नाम स्मरण करते रहिए। यही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए क्योंकि आखिर में भगवान का नाम जप ही हमारे साथ रहता है और सब यहीं इसी मृत्युलोक में रह जाता है इसीलिए कहते हैं "कृष्ण नाम परम सुखदाई"।



वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः॥

पेन्शन अनुभाग और मेरा अनुभव

अनिदिता धर

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आज मैं वह लिखने जा रही हूँ जो शायद ही मेरे मित्रों को पता है। साल 2014 में मेरी पदोन्नति शाखा अधिकारी के रूप में हुई और मेरी पोस्टिंग पेन्शन अनुभाग में दी गई। हालांकि इसके पहले कभी भी मैंने पेन्शन में काम नहीं किया था, पर मेरे मन में यह विश्वास था कि मैं पूरी लगन से चाहूँ तो कोई भी काम सीख सकती हूँ। पहले ही दिन से मैंने अनुभाग के सबसे जूनियर स्टाफ से कुछ बेसिक जानकारी हासिल करना शुरू किया। दो-तीन दिन बाद से कुछ अनुभवी स्टाफ से भी सीखना शुरू किया। करीब दो हफ्तों के बाद से चीजें कुछ आसान लगने लगीं। इसी बीच पेन्शनर से मिलना और उनकी समस्याओं के बारे में सुनते-सुनते यह चिंता मन में आई कि कैसे हमारे पेन्शन अनुभाग के सिस्टम को और स्ट्रीमलाइन किया जाये कि डिस्पोसल और भी थोड़ा जल्दी हो जाये। कुछ एक महीनों में वो भी ठीक होने लगा और इसी के साथ ही पेन्शनरों से बहुत अच्छी प्रशस्ति भी मिलने लगी। जब पेंशनर आकर बोलने लगे कि जहाँ हमने इतने साल काम किया वहाँ से पेन्शन के कागजात ए.जी. ऑफिस भिजवाने के लिए इतने महीने लग गए और आप लोगों ने इतनी जल्दी काम पूरा कर दिया। तब जिस तरह की संतुष्टि मिली, उसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती।

इसी सिलसिले में कुछ अजीबोगरीब लोगों से भी मुलाक़ात हुई जिन्हें किसी भी तरह संतुष्ट नहीं कर पाई क्योंकि पेन्शन के जो नियम हैं, हम उनके बाहर नहीं जा सकते हैं। इसके कारण सभी पेंशनरों को तो हम खुश नहीं कर पाये, लेकिन सराहना करने वाले लोग इतने थे कि ये नाखुश लोग गिनती में भी नहीं आते हैं। कुछ पेन्शनरों ने तो माथे पर हाथ रखकर भी आशीष दिया। एक पेन्शनर ने आकर बोला कि उनकी बेटी की अगले

महीने शादी करवानी है। शादी को करीब 20 दिन बचे हैं। वे बोले, “जानता हूँ कि मेरे पेन्शन के कागज़ कुछ एक हफ्ते पहले ही आये हैं। क्या आप थोड़ी-सी जल्दी मुझे मेरी पेन्शन का अंतिम भुगतान दे सकते हैं? नहीं तो मुझे ब्याज पर पाँच लाख रुपये उधार लेने पड़ेंगे।” मैंने उनको शादी से पहले ही प्राधिकार पत्र भेज दिया। वो पत्र मिलने पर वह फिर से मेरे पास आए और कुछ बोले बिना रो दिये और बोले कि-“आपने हमें इतनी राशि उधार लेने से बचा लिया। कैसे आपका शुक्रिया करूँ।” मैंने कहा कि यह मेरी पूरी टीम की सहायता से हो पाया और आप सिर्फ आशीष दीजिये। वे जाते-जाते शादी का निमंत्रण दे गए।

इसी बीच एक ऐसी घटना हुई जिसने मुझे पूरी तरह हिलाकर रख दिया। मैं तब पेन्शन रिवीज़न के शाखा अधिकारी के तौर पर काम कर रही थी। तब करीब 28,000 पेन्शन रिवीज़न केस हमारे कार्यालय में भेजे गए। इसीलिए तब बहुत सारे पेंशनर भी हमारे कार्यालय में पूछने के लिए आते थे। एक दिन दोपहर को कड़ी धूप में पसीने से लथपथ एक पेंशनर मेरे पास आया। उनकी हालत देखकर मैंने उनको बैठने के लिए बोला। उनको पानी पिलाया। तब वो जरा स्वस्थ महसूस करने लगे। वे ठीक तरह से बात भी नहीं कर पा रहे थे। वे बोले, “मेरा पेन्शन रिवीज़न केस आपके कार्यालय में आया है। जरा जल्दी हो जाय तो बड़ा उपकार होगा। मैं बहुत बीमार हूँ।” मैंने पूछा, “आपको क्या हुआ है?” तब उन्होंने अपना मुँह खोलकर दिखाया कि मुँह में कैंसर के कारण उनका जीभ कटा हुआ है। तब मैं समझी कि उनको बात करने में क्यूँ तकलीफ हो रही थी। मैंने उनसे कहा कि-“आपको प्राधिकार पत्र एक हफ्ते में मिल जाएगा। आप चिंता मत कीजिएगा।” तब उन्होंने एक और हैरानी वाली बात सुनाई। वे बोले कि जब उनका कैंसर का इलाज चल रहा था, उसी समय उनकी पत्नी को भी कैंसर का मरीज पाया गया। तब दोनों का ही इलाज चलने लगा। और भी हैरानी वाली बात

यह थी कि दोनों की कोई संतान भी नहीं थी। मैं कुछ क्षण के लिए चुप बैठी रही। सोचा कि ईश्वर से पूछूँ कि एक ही साथ इतनी सारी समस्याओं का सामना यह व्यक्ति अकेला कैसे करेगा। अपनी तरफ से जो भी बन पड़ेगा, वह करने की मैंने ठान ली। प्राधिकार पत्र जल्दी से मिलेगा, यह आश्वासन लेकर जाते समय मेरा मोबाइल नंबर भी साथ ले गए।

करीब 10 दिन बाद उन्होंने मुझे प्राधिकार पत्र मिलने की खबर सुनाई। साथ ही धन्यवाद के साथ एक अनुरोध भी किया। वे बोले कि-“एक बार मेरे घर मेरी पत्नी को देखने आइएगा।” ऐसे तो बहुत से पेन्शनर मुझे उनके घर जाने के लिए बोलते हैं लेकिन किसी के यहाँ जाने की हामी मैंने कभी नहीं भरी थी। परंतु उनके बोलने में एक अलग-सा अपनापन था। ऐसे तो किसी पेन्शनर के घर जाना मुझे उचित नहीं लगता था पर न जाने क्यों उनके घर जाने से मैं मना ही नहीं कर पाई। परंतु व्यस्तता के कारण उनके घर जा नहीं पा रही थी। इसी बीच उन्होंने कई बार आने के लिए फोन भी किया। बार-बार यही पूछते थे कि मैं कब आऊँगी। मैं अपने आप को कोसती थी परंतु किसी न किसी कारण जाना हो ही नहीं पा रहा था। एक दिन उन्होंने फोन करके बताया कि पिछले हफ्ते उनकी पत्नी का देहांत हो गया। मैं दंग रह गई। वे फिर मुझसे बोले, “दीदीमनी, मेरी एक बात रखेंगी प्लीज़।” मैंने पूछा कि क्या बात है। वे बोले, “अगले रविवार मेरी पत्नी का श्राद्ध अनुष्ठान है। आपको सपरिवार उसमें आना है। आएं तो मेरी पत्नी की आत्मा को शांति मिलेगी।” मैंने जाने का वादा किया और अगले रविवार उनके घर गई। जाते ही उनकी आँखें नम हो गईं और वे मुझे अंदर अपनी पत्नी की तस्वीर के सामने ले गए और बोले, “देखो, दीदीमनी आई हैं तुमसे मिलने।” मैंने मन ही मन उनसे माफी माँगी कि उनके जीते जी मैं आकर उनसे मिल ना पाई। उसके बाद खाना खाने के बाद जब लौट रही थी तब

भी फिर से आने का वादा करना पड़ा। अभी भी उनसे बातें होती रहती हैं। ऐसे और भी कई रिश्ते बन गए पेन्शन अनुभाग में काम करने के दौरान जिन्हें मैं जिंदगी भर संजोए रखूँगी।



हिन्दी दिवस एवं पखवाड़ा समापन समारोह 2022 के दौरान श्री बी. आर. मण्डल, प्रधान महालेखाकार महोदय विभागीय हिन्दी गृह पत्रिका 'गोमती' के षष्ठम् अंक का विमोचन करते हुए

जीवन में कभी हार मत मानो

अनिल कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

एक बार एक चिड़िया ने अपने बच्चों के लिए कुछ दाने इकट्ठे किए और उनको एक पेड़ के तने में छिपा कर रख दिया। एक दिन जब चिड़िया उन दानों को लेने के लिए पेड़ पर पहुँची तो पेड़ ने उन दानों को चिड़िया को देने से मना कर दिया। चिड़िया बहुत गुस्सा हो गई और वह पेड़ को कटवाने के लिए एक पेड़ काटने वाले के पास पहुँची और बोली कि-“पेड़ ने हमारे दानों को रख लिया है और मुझे वापस नहीं दे रहा है, तुम उस पेड़ को काट दो।” इस पर पेड़ काटने वाला व्यक्ति हँसा और बोला-“तुम्हारी इतनी तुच्छ बात के लिए मैं पेड़ को क्यों काटूँ?”

यह सुनकर चिड़िया उड़ कर राजा के पास पहुँची और पूरी कहानी सुनाने के बाद राजा से प्रार्थना की कि-“आप उस पेड़ काटने वाले को दण्डित करें क्योंकि उसने पेड़ काटने से मना कर दिया है।” राजा भी हँसा और बोला-“मैं इतनी छोटी-सी बात के लिए पेड़ काटने वाले को इतनी बड़ी सजा क्यों दूँ?” चिड़िया ने हार नहीं मानी और राजा के हाथी के महावत के पास पहुँची और महावत से बोली कि- “जब राजा कल सवारी करने के लिए हाथी पर बैठें तो तुम उनको हाथी से गिरा देना।” महावत ने भी ऐसा करने से मना कर दिया और बोला-“मैं अपने राजा को तुम्हारी इस छोटी बात के लिए क्यों गिराऊँ?” फिर चिड़िया उड़ कर हाथी के पास पहुँची और कहानी सुनाने के बाद हाथी से बोली कि-“कल तुम महावत को अपनी पीठ पर से नीचे गिरा देना।” इस पर हाथी ज़ोर से हँसा और बोला-“मैं अपने मालिक को नीचे कैसे गिरा दूँ, मैं अपने मालिक के प्रति धोखा नहीं कर सकता हूँ।” उस छोटी-सी चिड़िया ने फिर भी हार नहीं मानी और चींटी के पास गयी और अपनी पूरी कहानी सुना कर बोली कि-“तुम हाथी की सूँड में घुस

जाओ जिससे वह महावत को और महावत राजा को नीचे गिरा सके।" इस पर चींटी भी इस काम के लिए तैयार नहीं हुई और बोली-"मैं ये काम नहीं कर सकती।"

चिड़िया अब सभी से विनती कर के बहुत परेशान हो चुकी थी। चिड़िया ने अब अपना रौद्र रूप धारण कर लिया और चींटी से बोली-"तुमने मेरी बात नहीं मानी, अब मेरी बात ध्यान से सुनो! मैं हाथी, महावत और राजा का तो कुछ नहीं बिगाड़ सकती हूँ। लेकिन तुमको मैं अपनी चोंच में लेकर जरूर निपटा सकती हूँ।" यह सुनकर चींटी बहुत डर गई और उसने ये बात हाथी को बताई। हाथी ने महावत को महावत ने राजा को बताई। राजा ने तुरंत ही पेड़ काटने वाले को दण्ड देने के लिए बुलाया। पेड़ काटने वाला राजा के पैरों पर गिर गया और क्षमा मांगने लगा और बोला-"महाराज! मैं अभी पेड़ को काट देता हूँ।" और जैसे ही वह पेड़ काटने के लिए पहुँचा, पेड़ डर गया और बोला-"मुझे मत काटो, मैं चिड़िया के दाने देने के लिए तैयार हूँ।" और उसने चिड़िया के सारे दाने लौटा दिये।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि यदि हौसला रखा जाए और विकट परिस्थितियों में भी हार न मानी जाए तो बड़ा से बड़ा काम एक छोटा-सा व्यक्ति भी कर सकता है। इस प्रकार एक छोटी-सी चिड़िया ने अंत तक हार नहीं मानी और अपने उद्देश्य में सफल हो गई। इसलिए मनुष्य को इतनी आसानी से हार नहीं माननी चाहिए, चाहे कितनी भी परेशानियों का सामना क्यों न करना पड़े।



नन्ही-सी रोशनी

अमर आनंद मिन्ज

कनिष्ठ अनुवादक

पूरे गाँव में रोशनी इतनी-सी है जैसे अमावस्या में कुछेक टिमटिमाते तारे हों और झोपड़ी के अंदर डिबरी की रोशनी में नौ एकम नौ, नौ दूने अठारह के लयबद्ध स्वर में रट लगाकर पहाड़ा याद कर रही है रोशनी। झोपड़ी के द्वार पर बाप और बेटा दोनों अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए हैं और भुने हुए मक्के खा रहे हैं जो नेता के खेत में काम करने से मिला है। कल से बिटिया की परीक्षा शुरू होगी।

“गणित का पेपर समझ नहीं आता, टयुशन जाऊँगा।” बेटे ने कहा। “टयुशन के पेसे तू देगा?”, बाप ने चिल्लाकर कहा। तभी अम्मा आ गई बाहर।

“अब मरने के बाद ही शांति मिलेगी। सुबह से शाम सपीकर में नेता चिल्लाता, हाथ जोड़कर भीख मांगता और तू रात में चिल्लाता। सो जा, नहीं तो घर के बाहर ही रह।” अम्मा ने पोती को इशारे से दरवाजा बंद करने को कहा।

“अब तो उठ जा! काम पर जायेगा कि नहीं”, अम्मा ने चिल्लाकर कहा। बैलों की घण्टी की आवाज से भी वह नहीं उठ रहा था। “नेतागिरी मत कर, सोने दे”, कहकर उसने चद्दर से चेहरा ढँक लिया। “आठ बज गया है, उठ!”, अब अम्मा का पारा ऊपर चढ़ रहा था। चद्दर फेंक कर वह ऐसे उठा मानो मुर्दे में किसी ने जान डाल दी हो।

“भजन कीर्तन करती रह, पर पुण्य नहीं मिलेगा तुझे, जल्दी जगा देती तो क्या हो जाता। देर हो गयी तो नेता और उसका चपरासी छोड़ेगा नहीं।” दातून चबा-चबाकर वह बड़बड़ा रहा था। “गणित का परीक्षा है, स्कूल छोड़ आ बिटिया को, फिर जहाँ मन करे चला जा।” अम्मा ने उसे

बिटिया का बस्ता थमाकर कहा। “तू छोड़ आ स्कूल, सारा दिन घर में तो रहती है, दो कदम चला नहीं जाता क्या! बिटिया पढ़-लिख के क्या करेगी? कलेक्टर बनेगी!” तीखे स्वर में उसने अम्मा से कहा।

“साईकिल भी धोना भूल गया, पता नहीं कैसे मिलेंगे या नहीं। देख, झण्डा अच्छे से लगा, नहीं तो नेता डंडा लगा देगा”, रात की बची रोटियाँ खाते-खाते ऊँची आवाज में वह कहने लगा जैसे वह किसी पुण्य काम पर जा रहा हो और उसे खुद पर गर्व हो।

बिटिया का मन उदास हो गया था। साईकिल पर स्कूल जाने का मन था उसका, साथ ही बापू से नई पेन्सिल और रबर खरीदवाने का यह सपना तो अधूरा रह गया। टीचर जी ने तो सुंदर अक्षरों में परीक्षा में लिखने को कहा है। अम्मा तो भाई के साथ जाने को कह रही है।

“परीक्षा हर साल होती है, पर चुनाव पाँच साल में एक बार, नेताइन बोली है इस बार लाल कार्ड बन जाएगा।”, अम्मा ने संकोच के साथ कहा। अब अम्मा को पर्चियाँ बाँटने जाना ही होगा।

“अम्मा! भईया कहाँ है? जल्दी जाना है स्कूल”, रोशनी दरवाजे के बाहर आकर बड़ी बेसब्री से ऊँचे स्वर में कहने लगी।

“देख, बाहर कहीं होगा, उसके साथ चली जा।” अम्मा यह कहकर पर्चियाँ हाथ में लेकर बाहर चली गई।

घर से कुछ दूर पर एक मैदान है। पता नहीं किस कमबख्त ने बीच में ही बिजली का खंभा लगा दिया है जो अब बच्चों के लिए क्रिकेट के विकेट के रूप में प्रयोग हो रहे हैं, वहीं बिजली के तारों में अब पक्षियों ने अपनी बैठक का स्थान निर्धारित कर लिया है।

“मैदान में भईया क्रिकेट खेल रहे हैं, मैच खत्म होने के पहिले नहीं आयेंगे”, वह बड़बड़ा कर घर की ओर जाने लगी पर टीचर की मार के डर से अनायास ही उसके कदम स्कूल की ओर चल पड़े।

टीचर का पहला प्रश्न आ चुका था, “तू अकेले स्कूल कैसे आ गयी, घर से कोई क्यों नहीं आया तुझे स्कूल छोड़ने?”

“बापू नेता के पास गया है, माँ पर्ची बाँट रही है, भईया क्रिकेट खेल रहा है”, रोशनी फिर बोली, “आज छुट्टी दे दो टीचर, परीक्षा हर साल होती है, पर चुनाव पाँच साल में एक बार।”

“पर रोशनी, परीक्षा भी तो जरूरी है”, कहकर टीचर ने मोबाइल हाथ में ले लिया।

“ज्ञान चुनाव से भी ऊपर है, क्योंकि ज्ञान हमें सही और गलत का फर्क समझने में मदद करता है और हमें अपने अधिकारों का सम्मान करने के लिए प्रेरित करता है। चुनाव केवल एक साधन है, जिससे हम अपनी सरकार को चुन सकते हैं, पर यह सुनिश्चित नहीं होता है कि हमें सरकार से वो सब मिलेगा, जो हमें मिलना चाहिए। कई बार, सरकारें हमारी आवश्यकताओं, मनोकामनाओं और मूल्यों को अनदेखा करती हैं और हमें प्रलोभन, धमकी या प्रचार के माध्यम से मना करती हैं। इसलिए, हमें ज्ञान की ज़रूरत होती है, ताकि हम स्व-निर्णय कर सकें कि हमें किसको समर्थन करना है, किससे मुक्ति पानी है, और किससे संघर्ष करना है।” टीचर जी ने एक साँस में ही मोबाइल से सारी बातें पढ़ डाली।

परीक्षा शुरू हो चुकी थी, साथ ही ड्यूटी रोस्टर की सूची भी आ चुकी थी। टीचर जी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कुछ टीचर ऐसे जश्न मना रहे थे जैसे वे सदियों बाद अँधेरी काल कोठरी से निकले हों। पर रोशनी को कोरे कागज़ में बस अंधेरा दिखाई दे रहा था। सब कुछ भूल चुकी थी वह, नौ का पहाड़ा, जोड़ और घटाव में फ़र्क, गिनती सब कुछ। उसका मन उन प्रश्नों के उत्तरों को ढूँढ़ने में लग गया जिसके उत्तर हम सदियों से ढूँढ़ रहे हैं।



मानव की इच्छाएँ

अमित गौरव

सहायक लेखा अधिकारी

मानव की इच्छाएँ! यह एक विचित्र और रोचक विषय है। हमारी इच्छाएँ हमारे स्वप्नों, आकांक्षाओं और ख्वाहिशों की आवाज हैं। हम चाहते हैं कि हमारी हर इच्छा हमें सच्ची खुशियाँ दे परंतु यह हमें संतोष से वंचित कर रही है।

हमारी अनंत इच्छाएँ पूरी होने के बावजूद हमें संतुष्टि की खोज में लगातार रहना पड़ता है। हम एक नया घर, एक बड़ी गाड़ी, अधिक धन, उच्च पद और स्थान, प्रेमिका या प्रेमी, सम्मान और यश की अपार संख्या की इच्छा रखते हैं। हमारी इच्छाओं का कोई अंत नहीं है और इसलिए हम अक्सर अपनी इच्छाओं के अनुरूप खोज में लगे रहते हैं। परंतु जब हमारी इच्छाएँ पूरी होती हैं तो इन इच्छाओं का हमारे जीवन पर जितना प्रभाव होना चाहिए, वह उतना नहीं होता है क्योंकि हमारा मन उन इच्छाओं की पूर्ति से उल्लासित नहीं रहता है बल्कि कोई दूसरी इच्छा पूरी होने की प्रतीक्षा करने लगता है।

जैसे-जैसे हम अपनी इच्छाओं को पूरा करते हैं, हम नई इच्छाओं की ओर ध्यान देने लगते हैं। हमें समझना चाहिए कि यह अभावी इच्छाएँ ही हमें आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती हैं और इस प्रकार हमारा अविचलित चक्र चलता रहता है। हमारी इच्छाएँ एक निरंतर दौड़ में है जहाँ एक इच्छा पूरी होती है वहीं मन दूसरी इच्छा की ओर बढ़ जाता है।

यह विचित्र है कि हम इतनी मेहनत और परिश्रम के साथ अपनी इच्छाओं की प्राप्ति के लिए संघर्ष करते हैं, परंतु जब उन्हें प्राप्त करते हैं तो हमें खुशी नहीं मिलती है। इस विषमता को व्यंग्यात्मक रूप में देखा जा सकता है क्योंकि हम अपनी इच्छाओं के चारों ओर इतने व्यस्त रहते हैं कि हमें असली खुशी और संतोष को छूने की क्षमता नहीं होती। यह एक तथ्य

है कि मानव अनंत इच्छाओं के गुलाम बने हुये हैं, जहाँ हमारा मन हमेशा कुछ नया चाहता है, लेकिन फिर भी संतुष्टि नहीं मिलती है। हम बार-बार इच्छाओं के पीछे इतना भागते हैं कि हमें अपने आनंद की पहचान ही नहीं होती। हमारी इच्छाएँ हमें खुद से अलग कर देती हैं। यह हमें संतुष्ट और आत्मनिर्भर बनाने की जगह हमें असंतुष्ट और निरंतर दौड़ के बंधन में बाँध देती है।

अतः हम कह सकते हैं कि हमारी अनंत इच्छाओं के पीछे भागकर हम वास्तविक संतुष्टि और खुशियों से वंचित हो जाते हैं। हमें अपनी इच्छाओं की सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए और साथ ही संतुष्ट और ध्यानस्थ रहने की कला को सीखना चाहिए। संतुष्टि हमें वास्तविक खुशी और आनंद का अनुभव करने की क्षमता प्रदान करती है जो कि हमारी अनंत इच्छाओं से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है।



वसुधैव कुटुम्बकम्

आरती

वरिष्ठ अनुवादक

भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में अंकित “वसुधैव कुटुम्बकम्” सनातन धर्म का मूल संस्कार एवं विचारधारा है। भारत सरकार द्वारा जारी सभी योजनाओं, सेवाओं, विज्ञापन-पत्रों आदि के नीचे लिखा यह वाक्यांश सभी का ध्यान आकर्षित कर रहा है।

महोपनिषद् सहित कई भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में वसुधैव कुटुम्बकम् का संदर्भ मिलता है। अन्य शब्दों में वसुधा एवं कुटुम्बकम्। वसुधा अर्थात् पृथ्वी एवं कुटुम्ब अर्थात् परिवार। इस प्रकार, ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ का अर्थ हुआ- संपूर्ण पृथ्वी एक ही परिवार है तथा इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी मनुष्य और जीव-जन्तु एक ही परिवार का हिस्सा हैं।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम्॥

(महोपनिषद्, अध्याय ६, मंत्र ७१)

अर्थात् यह मेरा अपना है तथा यह पराया है, इस प्रकार की भावना संकुचित हृदय के व्यक्ति रखते हैं। उदार हृदय वाले व्यक्ति के लिए तो (सम्पूर्ण) धरती ही परिवार है। यद्यपि यह एक प्राचीन अवधारणा है, किन्तु आज के समय में यह पहले से भी अधिक प्रासंगिक है। हम सभी जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज की सबसे प्रथम कड़ी होता है-परिवार। वैचारिक मतभेद के बावजूद भी परिवार ऐसी संस्था है जो कि हमें जोड़ के रखती है। परिवार के इस भाव को जब वैश्विक स्तर पर प्रयोग किया जाए, तो यह ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ कहलाता है।

मनुष्य जाति इस धरती पर उच्चतम विकास करने वाली प्रजाति है। बौद्धिक रूप से अन्य सभी जीवों से श्रेष्ठ होने के कारण पृथ्वी के अधिकांश

भू-भाग पर हमारा निवास है। हमारी पृथ्वी भौगोलिक रूप से द्वीपों, महाद्वीपों, भू-खण्डों एवं राजनैतिक दृष्टि से देशों, राज्यों में विभक्त है जिसके कारण मानव प्रजाति की शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक प्रवृत्तियों में विभिन्नता होना स्वाभाविक है। यहाँ पर विचार करने वाली बात यह है कि विभिन्नताओं के बावजूद भी समाज में रहने एवं अन्य सामाजिक सभ्यताओं से जुड़ने की ललक ने पृथ्वी के अलग-अलग हिस्सों में रहने पर भी मानव प्रजाति ने एक-दूसरे को खोज निकाला। इससे साबित होता है कि भारतीय ग्रंथों में उल्लिखित वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना मानव के मूल स्वभाव में चिरकाल से विद्यमान है। मूलतः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा की संकल्पना का उद्देश्य था- पृथ्वी पर मानवता का विकास।

यदि हम कुछ सदी पीछे जाएं तो एक-दूसरे के अस्तित्व एवं विद्यमानता की कल्पना भी नहीं करते थे। विश्व के प्रसिद्ध खोजियों जैसे कोलम्बस, वास्कोडिगामा, मार्कोपोलो आदि ने भौगोलिक कठिनाइयों को पार करते हुए विश्व को एक-दूसरे से परिचित करवाया। नए स्थानों, सभ्यताओं, मार्गों की खोज ने उपनिवेशवाद की अवधारणा को जन्म दिया। सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगीकरण का आरम्भ हुआ और यूरोपीय देशों ने अपने उपनिवेश बनाने शुरू कर दिए, तब दुनिया भर में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का हास हुआ तथा एक नई अवधारणा 'राष्ट्रवाद' का जन्म हुआ, जो राष्ट्र तक सीमित थी। एक ओर विश्व आपस में जुड़ रहा था, दूसरी ओर राष्ट्रवाद की भावना भी पनप रही थी। सिक्के के दो पहलुओं की भांति राष्ट्रवाद की भावना के भी सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव दिखने लगे।

आज भी दुनिया में राष्ट्रवाद हावी है। इसमें व्यक्ति केवल अपने राष्ट्र के बारे में सोचता है, सम्पूर्ण मानवता के बारे में नहीं। धीरे-धीरे हम कब दो विश्व युद्धों तक पहुँच गए हमें पता भी नहीं चला। आज मनुष्य धर्म, जाति,

भाषा, रंग, संस्कृति आदि के नाम पर इतना बँट चुका है कि वह सभी के शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के विचार को ही भूल चुका है। जगह-जगह पर हो रही हिंसा, युद्ध और वैमनस्य इसका प्रमाण हैं।

विश्वयुद्धों के आघातों से स्वयं को उभारते हुए वैश्वीकरण की एक नई अवधारणा सामने आई। इस भावना ने मानव प्रजाति को एक बार फिर से जुड़ने का मौका दिया। यदि वर्तमान समय में हम वसुधैव कुटुम्बकम् को वैश्वीकरण के पहलू से देखें तो वैश्वीकरण का मूल उद्देश्य वैश्विक स्तर पर ऐसे संबंध बनाना है जो मानव समाज की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करें। वैश्वीकरण को तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है: आर्थिक वैश्वीकरण, सांस्कृतिक वैश्वीकरण और राजनीतिक वैश्वीकरण। वैश्वीकरण प्रक्रियाएँ व्यवसाय और कार्य संगठन, अर्थशास्त्र, सामाजिक-सांस्कृतिक संसाधनों और प्राकृतिक वातावरण को प्रभावित करती हैं तथा वैश्विक स्तर पर हमें आपस में जोड़ती हैं।

आज पूरा विश्व अलग-अलग समूहों में बँटा हुआ है, जो अपने-अपने अधिकारों और उद्देश्यों के प्रति सजग है परन्तु देखा जाए तो सबका उद्देश्य विकास करना ही है। अतः आज सभी को अपने-पराये की भावना से ऊपर उठकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संस्कृति को अपनाने की आवश्यकता है, क्योंकि सबके साथ में ही सबका विकास निहित है। हालाँकि कुछ राष्ट्र इस बात को समझते हुए परस्पर सहयोग बढ़ाने लगे हैं, परन्तु अभी इस दिशा में बहुत काम करना बाकी है। जिस दिन पृथ्वी के सभी मनुष्य अपने सारे विभेद भुलाकर एक परिवार की तरह आचरण करने लगेंगे, उसी दिन सच्ची मानवता का उदय होगा और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सपना साकार होगा।



पारिभाषिक शब्द

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी अनुवाद
1.	Ammunition	गोला-बारूद
2.	Anticipatory pension	प्रत्याशित पेन्शन
3.	Averment	प्रकथन
4.	Bequeath	वसीयत करना
5.	Bifurcation	द्विभाजन
6.	Bipartite	द्विपक्षीय
7.	Bonafide	वास्तविक
8.	Brewery	मद्य निर्माणशाला
9.	Brigade	वाहिनी
10.	Canvassing	प्रचार, मत याचना
11.	Capitulation	(सशर्त) आत्मसमर्पण
12.	Case appraisal	प्रकरण मूल्य निरूपण
13.	Cessation	समाप्ति
14.	Chronology	कालक्रम
15.	Coalition	गठबन्धन

सोशल मीडिया

आशीष कुमार गुप्ता

एम. टी. एस.

आज के आधुनिक युग में सोशल मीडिया हम सभी के जीवन का एक अभिन्न अंग है। दुनिया में शायद ही कोई एक व्यक्ति होगा जिस पर सोशल मीडिया ने अपना प्रभाव न डाला हो। क्योंकि सिर्फ एक क्लिक के साथ हमारे पास किसी भी चीज़ की विस्तृत जानकारी मिल जाती है। इसलिए कौन इसका इस्तेमाल नहीं करना चाहेगा। अतः आज सोशल मीडिया के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना करना थोड़ा मुश्किल है।

लेकिन सोशल मीडिया के अधिक उपयोग के कारण हमें इसके कुछ खतरनाक और गंभीर परिणाम भी देखने को मिले हैं। इसलिए कुछ लोग सोशल मीडिया को एक वरदान समझते हैं जबकि कुछ लोग अभिशाप।

सरल भाषा में समझें तो इंटरनेट का उपयोग करके ऑनलाइन अपने दोस्त-रिश्तेदारों के साथ जुड़ने को सोशल मीडिया कहते हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब और टिकटॉक जैसी ऐप आज हर किसी के मोबाइल में मौजूद हैं। लेकिन इन सभी ऐप को टेक्निकल भाषा में सोशल वेबसाइट कहा जाता है। इन सभी वेबसाइटों के समूह को ही सोशल मीडिया कहते हैं।

इन सभी प्लैटफॉर्म पर विश्व का कोई भी व्यक्ति अपना एक खाता (अकाउंट) बनाकर पूरी दुनिया से जुड़ सकता है। इसके लिए आपको कोई भी डाक्यूमेंट्स या दस्तावेज़ की जरूरत नहीं है। सिर्फ आप अपने मोबाइल नंबर या किसी जीमेल अकाउंट का उपयोग करके इन सभी सोशल मीडिया पर अपना अकाउंट बना सकते हैं। अकाउंट बनाकर आप किसी व्यक्ति के साथ मित्रता कर सकते हैं और पूरी दुनिया के साथ अपने विचार और भावनाओं को शेयर कर सकते हैं।

सोशल मीडिया का महत्व

सोशल मीडिया के माध्यम से लाखों लोग एक ही प्लैटफॉर्म पर अपनी सामग्री को साझा कर सकते हैं और किसी व्यक्ति की सामग्री को देख सकते हैं। इसके अलावा अगर हम किसी ब्रांड की गुणवत्ता जाँचना चाहते हैं या उससे कोई सेवा लेना चाहते हैं तो वह भी आसानी से सोशल मीडिया पर उपलब्ध होती है।

सोशल मीडिया के माध्यम से हम अपने प्रोडक्ट की ऑनलाइन मार्केटिंग करके उसे एक ब्रांड बना सकते हैं। जैसे वर्तमान में हर कोई अपने-अपने ऑनलाइन कोर्स बना कर बेच रहा है। इसमें बायजूस, वेदांतु और खान अकादमी जैसे कई बड़े-बड़े नाम भी शामिल हैं।

सोशल मीडिया के फायदे और नुकसान

दुनिया में बसी हर चीज़ के दो पहलू होते हैं-एक फायदा और दूसरा नुकसान। सोशल मीडिया के भी दो पहलू हैं लेकिन सोशल मीडिया के लाभ और हानि उसके उपयोग करने वाले पर निर्भर करता है। अगर इसका सही उपयोग किया तो लाभ और गलत उपयोग किया तो हानि।

सोशल मीडिया के फायदे

- मनोरंजन के लिए तो सोशल मीडिया सबसे अच्छा माध्यम है। यहाँ पर आपको वीडियो, ऑडियो और फोटो जैसी हर प्रकार की सामग्री मिल जाती है।
- आज के दौर में सोशल मीडिया न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि इसका उपयोग समाज और लोगों की मदद के लिए किया जाता है।
- समाज में जागरूकता लाने और अपराध से लड़ने के लिए आज कई एन.जी.ओ. सोशल मीडिया पर काम कर रहे हैं। अच्छी बात यह है कि सरकार भी इन एन.जी.ओ. की मदद करती है।

- आज हम सोशल मीडिया के जरिये दुनिया की हर छोटी-बड़ी घटना को घर बैठे जान सकते हैं।
- कई लोग मशहूर होने के लिए भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। आपने देखा होगा कि कुछ लोगों के वीडियो सोशल मीडिया पर इतने वायरल हो जाते हैं कि वो रातों-रात मशहूर हो जाते हैं।
- अगर आपके साथ कुछ गलत हुआ है तो उसे सोशल मीडिया पर शेयर करके आप न्याय ले सकते हैं। क्योंकि जब लोग ट्विटर, फेसबुक और इन्स्टाग्राम पर आपका समर्थन करते हैं तो आपको न्याय मिलने की संभावना बढ़ जाती है।
- सोशल मीडिया पर हम नए दोस्त बना सकते हैं। केवल हमारे देश के ही नहीं बल्कि विश्व के किसी भी देश के व्यक्ति को हम अपना मित्र बना सकते हैं। इसके लिए हमें सिर्फ उस देश की भाषा आनी चाहिए। उसके बाद हम चैटिंग या लाइव वीडियो कॉलिंग के जरिये उस व्यक्ति के साथ अपने विचार और भावनाएँ साझा कर सकते हैं।
- सोशल मीडिया पर हम अपने बिज़नेस को ऑनलाइन ले जाकर लाखों कमा सकते हैं क्योंकि आज ज़्यादातर लोग ऑनलाइन ही खरीददारी करते हैं। अगर हम प्रॉडक्ट से संबंधित ग्राहकों को सोशल मीडिया पर खोज लें तो आसानी से अपना प्रॉडक्ट बेच सकते हैं।
- वर्तमान समय में कई लोग सोशल मीडिया का उपयोग करके घर बैठे पैसे कमाते हैं।

सोशल मीडिया के नुकसान

- सोशल मीडिया के जितने फायदे हैं, उतने नुकसान भी हैं। जैसे एक मनुष्य के मनोरंजन और टाइमपास के लिए सोशल मीडिया सबसे अच्छा माध्यम है। लेकिन जब मनुष्य सोशल मीडिया का अधिक

उपयोग करने लगे तो उसके समय की बर्बादी होती है। क्योंकि कई लोग पूरा दिन सोशल मीडिया पर बिताकर अपने जीवन का कीमती समय खराब करते हैं।

- कई छात्रों को मोबाइल की इतनी ज्यादा लत लग जाती है कि वे अपनी पढ़ाई पर भी ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं।
- अधिक मोबाइल देखने से हमें स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं जिसमें आँखों की जलन-खुजली, आलसीपन और तनाव जैसी समस्याएँ शामिल हैं।
- मोबाइल से हमारा मानसिक स्वास्थ्य खराब होता है जिसकी वजह से हमें सामाजिक और पारिवारिक जीवन में बहुत नुकसान होता है।
- इसके अलावा, जब आप किसी सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं तब आपके स्मार्टफोन में कई तरह की अनुमति ली जाती है जिससे हमारा निजी डाटा लीक होने का खतरा है।
- डाटा लीक होने की वजह से हमारे कॉन्टैक्ट्स, फ्रेंड्स, डाक्यूमेंट्स और बाकी प्राइवेट चीज़ों का कोई गलत इस्तेमाल कर सकता है। इसे टेक्निकल भाषा में हैकिंग कहा जाता है।
- कई बार सोशल मीडिया पर झूठी अफवाहें फैलाई जाती हैं। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के वीडियो या फोटो का उपयोग करके गलत बातें बताई जाती हैं, जबकि उसने ऐसा कुछ कहा ही नहीं था। इससे हमारे समाज और युवा पीढ़ी पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।
- सोशल मीडिया पर पुरूषों की तुलना में महिलाओं को अधिकांशतः झूठे प्रेम-प्रसंगों में बहला-फुसलाकर धोखा देते हैं।
- वर्तमान समय में सोशल मीडिया पर साइबर बुलिंग जैसी समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। साइबर बुलिंग यानि सोशल मीडिया पर अशोभनीय भाषा

और तस्वीरों का इस्तेमाल कर किसी को परेशान करना या धमकाना। इसे साइबर हरैस्मन्ट भी कहा जाता है। इसमें ज़्यादातर बच्चे ही शिकार होते हैं।



निष्कर्ष

आज के समय में अगर हम सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल करें तो यह हमारे लिए वरदान साबित होता है। लेकिन अगर गलत तरीके से करें तो यह अभिशाप भी बन सकता है। इसलिए यह आप पर निर्भर करता है कि आप सोशल मीडिया का इस्तेमाल कैसे करते हैं।



हमारा लखनऊ

आशीष वर्मा

लेखाकार

लखनऊ, उत्तर प्रदेश की राजधानी एक ऐतिहासिक शहर है, जो गोमती नदी के तट पर स्थित है। लखनऊ मुख्य रूप से अपनी संस्कृति, विशाल उद्यान, तहजीब, व्यंजन, संगीत और शायरी के लिए प्रसिद्ध है। हम इसे 'तहजीब का शहर' और 'नवाबों का शहर' और अन्य कई नामों से जानते हैं। कुछ लोग ये भी कहते हैं कि यहाँ की हवा में भी तहजीब है। यहाँ के अधिकांश लोग हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं जिसमें उर्दू भाषा का प्रभाव साफ़ तौर पर देखा जा सकता है। हिंदी और उर्दू के समन्वय से यहाँ की भाषा में एक अलग ही मिठास और तहज़ीब है जो लोगों के मन को सुकून देती है। आज मैं इस लेख के माध्यम से आप सभी को इस ऐतिहासिक शहर, इसकी तहजीब और संस्कृति से रूबरू कराने की कोशिश कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप सभी को यह पसंद आएगा।

आज लखनऊ अपनी संस्कृति और वास्तुकला के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। लखनऊ के पर्यटन का मुख्य आकर्षण यहाँ का बड़ा इमामबाड़ा है जिसमें निहित भूलभुलैया आज भी लोगों को आश्चर्यचकित कर देती है और यहाँ का रूमी दरवाज़ा और उसी के पास स्थित घंटाघर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है जिसे देखने बहुत दूर-दूर से लोग आते हैं। इसके अलावा छोटा इमामबाड़ा, दिलकुशा कोठी, अमीनाबाद बाज़ार, बेगम हज़रतमहल पार्क और ब्रिटिश रेजीडेंसी यहाँ के कुछ मुख्य पर्यटन स्थल हैं। लखनऊ में हज़रतगंज बाज़ार में आधुनिक और पुरानी वास्तुकला दोनों का मिश्रण देखने को मिलता है। यहाँ आपको दीपक/ लैंप पोस्ट की एक लंबी कतार देखने को मिल जाएगी जो विक्टोरियन युग की तरह का एक निर्माण है और इसे बहुत सुंदर और मनोरम बनाता है। इसी कड़ी में

अब जनेश्वर मिश्र पार्क, अंबेडकर पार्क के भी नाम जुड़ गए हैं जो लखनऊ के पर्यटन को एक नया आयाम भी प्रदान करते हैं।

लखनऊ में नृत्य, संगीत, साहित्य, उर्दू कविता और नाटक को बहुत महत्व दिया गया है। ये सब अवध के नवाब के संरक्षण में ही पले-बढ़े हैं तो इसकी विरासत की हिफाजत का श्रेय भी उन्हें ही दिया जाना चाहिए। क्योंकि जब दिल्ली के बहुत से शायरों और कवियों ने लखनऊ की ओर रुख किया तब उर्दू शायरी के दो ठिकाने हो गए-दिल्ली और लखनऊ। जहाँ दिल्ली सूफी शायरी का केंद्र बनी, वहीं लखनऊ गजल, विलासिता और इश्कमुश्क का। नवाबों के काल में उर्दू खूब पनपी एवं भारत की तहज़ीब वाली भाषा के रूप में उभरी। यहाँ बहुत से हिन्दू कवि एवं मुस्लिम शायर हुये हैं, जैसे बृजनारायण चकबस्त, ख्वाजा हैदर अली आतिश, विनय कुमार सरोज, आमिर मीनाई, मिर्जा हादी रुसवा, नासिख, दयाशंकर कौल नसीम, मुसाहफी, इनशा, सफी लखनवी और मीर तकी "मीर" आदि थे जिन्होंने उर्दू शायरी तथा लखनवी भाषा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। काकोरी कांड के अभियुक्त प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी राम प्रसाद बिस्मिल, वे भी उर्दू शायरी से खासे प्रभावित थे एवं बिस्मिल उपनाम से लिखते थे।

लखनऊ चिकन और लखनवी ज़ार्दोज़ी के लिए बेहद लोकप्रिय है जो यहाँ के कुर्ते और साड़ियों जैसे कपड़ों पर अपनी कलाकारी की छाप छोड़ते हैं। यहाँ की कशीदाकारी (कपड़ों पर सुई और धागा या सूत के साथ अन्य सामग्री की हस्तकला) का उत्कृष्ट नमूना है और ज़ार्दोज़ी यहाँ का लघु उद्योग है। इस उद्योग का ज़्यादातर हिस्सा पुराने लखनऊ के चौक इलाके में फैला हुआ है। यहाँ के बाज़ार चिकन कशीदाकारी की दुकानों से भरे हुए हैं। मुर्रे, जाली, बखिया, टेप्पी, टप्पा आदि 36 प्रकार के चिकन की शैलियाँ होती हैं। इसके माहिर एवं प्रसिद्ध कारीगरों में उस्ताद फ़याज़ खां और हसन मिर्जा साहिब थे। इन हस्तशिल्प कढ़ाई दोनों की बाजार में

बहुत बड़ी मांग है, न केवल भारत में बल्कि विदेशी बाजारों में भी। इसके साथ-साथ कई अन्य लघु उद्योग जैसे पतंग उद्योग, इत्र और किमाम (एक तंबाकू उत्पाद) उद्योग है। यहाँ के बाजार चाँदी और सोने के पन्नी के काम, हड्डी नक्काशीदार उत्पादों और मिट्टी के बर्तनों जैसे अन्य हस्तशिल्प से भरे हुए हैं।

लखनऊ अपनी संस्कृति, तहजीब और वास्तुकला के साथ-साथ अपने खान-पान और व्यंजनों के लिए भी बहुत अधिक प्रसिद्ध है। लखनऊ को खाद्य प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग कहा जाता है। यदि आप नॉन वेज हैं और चाट के शौकीन हैं तो लखनऊ आपके लिए स्वर्ग है। आपको यहाँ कबाब, मुगलाई व्यंजन और चाट की बहुत सारी अद्भुत विविधता मिलती है। लखनऊ के व्यंजनों को अवधी व्यंजन के रूप में जाना जाता है जो कि एक अद्वितीय नवाबी शैली है। कुछ प्रमुख अवधी व्यंजन जैसे- लखनवी बिरयानी, लखनवी कबाब, नाहारी-कुल्चा, रूमाली रोटी इत्यादि हैं। यहाँ कबाब की ही बहुत सारी किस्में मिलती हैं जैसे टुंडे के कबाब, काकोरी कबाब, शामी कबाब, गलौटी कबाब, बोटी कबाब, सींक के कबाब। इसके साथ ही वेज खाने वाले लोगों के लिए भी खाने की कोई कमी नहीं है। यहाँ के विशेष वेज कबाब, पराठों का स्वाद और बनाने का तरीका ही बहुत अलग है जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। हज़रतगंज में स्थित रॉयल चाट कैफ़े हो या फिर शर्मा जी की चाय और समोसे हों ये सब अपने स्वाद के लिए मशहूर हैं। अमीनाबाद की प्रकाश कुल्फी खाने के लिए लोगों की कतारें लगी रहती हैं। राम आसरे हलवाई की मक्खन मलाई एवं मलाई गिलौरी प्रसिद्ध है जिसका स्वाद आपको हर जगह नहीं मिलेगा और खाने के अंत में विश्व-प्रसिद्ध लखनऊ के पान जिनका कोई मुक्काबला ही नहीं है।

आज, लखनऊ को देश के सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक शहर के रूप में जाना जाता है। यह कानपुर के बाद उत्तर प्रदेश का दूसरा

सबसे बड़ा शहर है जो अब खुदरा, विनिर्माण और वाणिज्यिक जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उभर रहा है। लखनऊ शहर को अपने यात्रियों को एक अनूठी विशेषता प्रदान करना है, जो अपनी समृद्ध परंपराओं, तहज़ीब, नए तरीके के आधुनिक विकास और व्यंजनों की विविधता के सुंदर समायोजन को दर्शाता है। लखनऊ शहर में पहुँचना भी बहुत आसान है। आप हवाई मार्ग, रेल मार्ग और सड़क मार्ग किसी भी माध्यम से पहुँच सकते हैं और यहाँ की संस्कृति और व्यंजनों का लुत्फ़ उठा सकते हैं।



लखनऊ में रहने वाले लोग इस शहर को **“मेरा नहीं, हमारा लखनऊ”** कहकर इसे संबोधित करते हैं। आपने कभी ना कभी तो **“पहले आप पहले आप”** मशहूर पंक्ति तो लखनऊ शहर के लिए जरूर सुनी होगी। इसका तात्पर्य है कि यहाँ के लोग अपने से पहले दूसरों को अवसर देते हैं, उनको सम्मान देने के लिए। हमारे शहर की इन्हीं कुछ विशेषताओं के साथ मैं अपने लेख को यहीं समाप्त करता हूँ। आशा करता हूँ आप सभी को यह पसंद आया होगा और अपने जीवन में एक बार इस शहर में पधार कर यहाँ की कला, संस्कृति और व्यंजनों की अनुभूति करेंगे।

प्राचीन भारत की महान् विभूतियाँ

ऊदल सिंह सोलंकी

हिन्दी अधिकारी

भारत की पावन भूमि प्राचीन काल से ही महापुरुषों, महर्षियों, विद्वानों, विचारकों, सिद्धांतवादियों, दर्शनशास्त्रियों और महान वैज्ञानिकों की जन्म एवं कर्मस्थली रही है। यहाँ अनेक वैज्ञानिक तथा दार्शनिक व धार्मिक सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ जिससे संपूर्ण विश्व के आधुनिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है। प्राचीन भारत में न केवल गणित, विज्ञान, समाज व दर्शन शास्त्र जैसे विषयों का विशद् अध्ययन और अध्यापन कार्य किया जाता था बल्कि ज्योतिषशास्त्र, खगोलशास्त्र और योग जैसे शोधनीय विषयों का भी ज्ञान यहाँ प्रचुर मात्रा में पाया जाता था। इन विषयों पर आज भी शोध जारी है।

भारत की महत्ता संस्कृत के इस श्लोक से दृष्टव्य है:

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।

स्वर्गपवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।

(विष्णुपुराण)

अर्थ: देवता गण गीत गायन करते हुए कहते हैं कि वे लोग धन्य हैं, जिनका जन्म भारत देश में हुआ है। यह पवित्र भूमि स्वर्ग और अपवर्ग प्रदान करने योग्य साधन स्वरूप है। इसलिए यहाँ जन्म लेने वाले देवता सदृश्य माने जाते हैं।

भारत में समय-समय पर ऐसे तत्त्व ज्ञानी और सुधी जनों का आविर्भाव हुआ है जिन्होंने न केवल अपने ज्ञान से जनमानस को चमत्कृत किया अपितु विश्व को भी व्यापक रूप से प्रभावित और लाभान्वित किया

जोकि आज भी प्रासंगिक हैं। इन महान व्यक्तित्वों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है:

1. बौधायनः

भारत के महान ऋषि बौधायन रेखागणितज्ञ थे। उन्होंने प्रथम बार पाई के मान की गणना की थी। वृत्त की परिधि और क्षेत्रफल की गणना में पाई का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिसे विश्व आज पाइथोगोरस प्रमेय के रूप में जानता है वह पाइथोगोरस काल से बहुत समय पूर्व बौधायन द्वारा विरचित 'शुल्वसूत्र' नामक ग्रंथ में विद्यमान है।

उदाहरणार्थः दीर्घचतुरश्रस्याक्षणा रज्जुः पार्श्वमानी तिर्यग् मानी च यत् पृथग् भूते कुरूतस्तदुभयं करोति।।

आशय यह है कि विकर्ण पर कोई रस्सी तानी जाये तो उस पर बने वर्ग का क्षेत्रफल ऊर्ध्व भुजा पर बने वर्ग और क्षैतिज भुजा पर बने वर्ग के योग के बराबर होता है।

2. आर्यभट्टः

आर्यभट्ट पाँचवी शताब्दी के महान गणितज्ञ, ज्योतिषशास्त्री, खगोलशास्त्री और भौतिकविद् थे। उनका कार्य गणित के क्षेत्र में अग्रणी था। तेईस वर्ष की आयु में ही उन्होंने विश्वविख्यात् पुस्तक 'आर्यभटीयम्' लिखी जोकि उस समय की गणित का सार संग्रह है। इस पुस्तक के चार भाग हैं। प्रथम भाग में उन्होंने सर्वप्रथम वर्णों द्वारा बड़ी दशमलव संख्याओं को प्रदर्शित करने की विधि का वर्णन किया है और द्वितीय भाग में आधुनिक गणित यथा अंक गणित, बीजगणित, सरल त्रिकोणमिति और गोलीय त्रिकोणमिति के विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख है। शेष दो भाग ज्योतिषशास्त्र से संबंधित हैं। आर्यभट्ट ने शून्य का आविष्कार किया। आर्यभट्ट ने बताया कि शून्य एक संख्या ही नहीं बल्कि एक प्रतीक और संकल्पना भी है। शून्य के

आविष्कार ने पृथ्वी और चंद्रमा की वास्तविक दूरी की गणना करने में उनकी सहायता की। शून्य ने ऋणात्मक संख्याओं के नये आयामों की शुरुआत की।

प्राचीन भारत में, ज्योतिष विज्ञान अत्यंत उन्नत अवस्था में था और इसे खगोलशास्त्र कहा जाता था। नालंदा में स्थित 'खगोल' एक प्रसिद्ध ज्योतिष वेधशाला थी, जहाँ आर्यभट्ट ने अध्ययन किया था। ज्योतिष ज्ञान से सही पंचांगों के निर्माण, जलवायु और वर्षा के विभिन्न स्वरूपों की जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिली। ज्योतिष द्वारा ही फसलों के चयन, मौसमों और उत्सवों का तिथि निर्धारण, नौवहन, समय की गणना तथा राशिफल इत्यादि का विकास हो सका।

आर्यभट्ट ने ही सर्वप्रथम बताया कि पृथ्वी गोल है और यह अपनी धुरी पर घूमती है। उन्होंने ही यह भी बताया कि चन्द्रमा और अन्य ग्रह प्रतिबिम्बित सूर्य के प्रकाश से ही चमकते हैं तथा उन्होंने सूर्य ग्रहण व चंद्रग्रहण की भी वैज्ञानिक तरीके से व्याख्या की।

3. ब्रह्मगुप्त:

सातवीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त गणित को नयी ऊचाईयों पर ले गये। ब्रह्मगुप्त ने पृथ्वी की परिधि की गणना की थी जोकि आधुनिक मान के निकट है। इन्होंने शून्य का एक अलग अंक के रूप में उल्लेख किया है। इनके ग्रंथ 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में ऋणात्मक अंकों और शून्य पर गणित करने के सभी नियमों का वर्णन भी किया है जो आज की समझ के अत्यंत निकट हैं। इस पुस्तक से ही अरबों को गणितीय प्रणाली का ज्ञान हुआ।

4. भास्कराचार्य:

भास्कराचार्य बारहवीं शताब्दी के महान् गणितज्ञ थे। वे अपनी पुस्तक 'सिद्धांत शिरोमणि' हेतु प्रसिद्ध थे। इस पुस्तक के लीलावती

(अंकगणित), बीजगणित, गोलाध्याय और ग्रहगणित चार भाग थे। बीजगणित के समीकरणों को हल करने के लिए उन्होंने चक्रवाल विधि को अपनाया जिसे बाद में यूरोपियन गणितज्ञों द्वारा 'इनवर्स साइक्लिक' कहा गया।

5. महावीराचार्यः

महावीराचार्य ने सन् 850 ईस्वी में 'गणित सारसंग्रह' नामक ग्रंथ की रचना की। यह बात ध्यान देने योग्य है कि यूरोप में लघुत्तम समापवर्तक निकालने की विधि पंद्रहवीं शताब्दी में खोजी गयी जबकि महावीराचार्य ने इसका उल्लेख अपनी कालावधि में ही कर दिया था। बीजगणित के क्षेत्र में इन्होंने एक अज्ञात राशि के एक घातीय, द्विघातीय एवं उच्च घातीय समीकरण के साथ ही द्विघातीय समीकरणों को हल करने की विधियाँ बतायीं। इन्होंने ब्याज, क्रय-विक्रय की व्याख्या उदाहरण सहित समझायी। क्रमचय-संचय के क्षेत्र में महावीराचार्य ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

6. महर्षि कणादः

कणाद छठी शताब्दी के महान् वैज्ञानिक थे। उन्हें बाल्यावस्था से ही पदार्थ के सबसे छोटे भाग कण में रुचि थी। उनका परमाणु सिद्धांत आधुनिक सिद्धांत से मेल खाता है। कणाद के अनुसार, भौतिक ब्रह्माण्ड कणों से निर्मित है जिन्हें मानवीय नेत्रों से देखा नहीं जा सकता है। ये आगे उपविभाजित भी नहीं किये जा सकते।

7. वराहमिहिरः

वराहमिहिर गुप्त काल के विक्रमादित्य के नव रत्नों में से एक थे। उन्होंने जलविज्ञान, भू-विज्ञान, पारिस्थितिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया। उन्होंने पहली बार बताया कि दीमक और

पौधे भूमिगत जल की उपस्थिति के संकेतक होते हैं। उन्होंने छह जानवर और तीस पौधों की सूची दी जो भूमिगत जल की उपस्थिति का संकेत दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपने ग्रंथ 'बृहत् संहिता' में भूकंप का उल्लेख किया है। उन्होंने भूकंप को ग्रहों के प्रभाव, समुद्र की आंतरिक गतिविधियों, भूमिगत जल, आकाश में असामान्य बादलों के निर्माण और पशुओं के असामान्य व्यवहार से जोड़ा।

8. महर्षि सुश्रुतः

सुश्रुत शल्यचिकित्सा के क्षेत्र में अग्रणी थे। उन्होंने मृत शरीर की सहायता से शरीर विज्ञान का अध्ययन किया था। उनके द्वारा विरचित 'सुश्रुत संहिता' में लगभग 1100 बीमारियों का वर्णन मिलता है जिनमें छब्बीस प्रकार के ज्वर, आठ प्रकार के पीलिया, बीस प्रकार के मूत्राशय विकार सम्मिलित हैं।

इस पुस्तक में 760 पौधों का भी उल्लेख किया गया है। इन पौधों के सभी भागों जैसे पत्ती, तना, छाल, रस, फूल, जड़ इत्यादि का उपयोग औषधि निर्माण में किया जाता था। दालचीनी, तिल, काली मिर्च, इलायची, अदरक, लौंग इत्यादि आज भी घरेलू उपचार में काम में लिये जाते हैं। इसके अतिरिक्त, सुश्रुत ने प्लास्टिक सर्जरी में भी बहुत बड़ा योगदान दिया। उन्होंने शल्यचिकित्सा में प्रयुक्त 101 औजारों का अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है। सुश्रुत कटे अंगों को जोड़ने, सिजेरियन ऑपरेशन, मूत्राशय से पथरी निकालने आदि विधाओं में पारंगत थे।

9. महर्षि चरकः

चरक को भारतीय औषध विज्ञान के पितामह के रूप में माना जाता है। वे कनिष्क के दरबार में राजवैद्य थे। उनके द्वारा रचित 'चरक

संहिता' औषधि पर लिखा गया उल्लेखनीय ग्रंथ है। इसमें विभिन्न रोगों की विशद् व्याख्या सहित उनके कारणों को पहचानने की विधि और उनके उपचार का भी वर्णन किया गया है। वे पाचन, मेटाबॉलिज्म और प्रतिरक्षा जैसे विषयों पर चर्चा करने वाले प्रथम वैज्ञानिक थे। उन्हें आनुवांशिकता का भी ज्ञान था।

10. महर्षि पतंजलि:

योग भारत की संपूर्ण विश्व को देन है। प्राचीन भारत में योग आयुर्वेद की एक अनुषंगी विज्ञान के रूप में विकसित हुआ था। योग दवाई के बिना मानसिक और शारीरिक स्तर पर व्यक्ति को स्वस्थ करने का विज्ञान है। योग शारीरिक क्रिया के साथ-साथ मानसिक क्रिया है। शारीरिक योग हठयोग कहलाता है। सामान्यतया, इसका प्रयोजन बीमारी को हटाकर शरीर की स्वस्थ अवस्था का स्थापन है। राजयोग मानसिक योग है। इसका लक्ष्य शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक संतुलन द्वारा बंधन से मुक्ति और आत्मानुभव है। योग का प्रचार-प्रसार अधिकांशतः पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से हुआ। इस महान् विज्ञान को व्यवस्थित और क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने का श्रेय पतंजलि को गया है। पतंजलि द्वारा विरचित 'योगसूत्र' में ॐ का उच्चारण ईश्वर के प्रतीक के रूप में किया जाता है। उन्होंने ओम को व्योम में अनवरत् प्रवाहित होने वाली, प्रबुद्ध व्यक्तियों द्वारा जानने योग्य, ब्रह्माण्डीय ध्वनि बतलाया है। इसके अलावा, पतंजलि ने पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी' पर 'महाभाष्य' नामक ग्रंथ की भी रचना की थी।



पारिभाषिक शब्द

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी अनुवाद
1.	Denial of service	सेवा वंचन
2.	Deponent	अभिसाक्षी
3.	Derogation	अनादर, अल्पीकरण
4.	Destitute	निराश्रित
5.	Deterrence	प्रतिवारण
6.	Detoxification	निर्विषीकरण
7.	Disbursement	संवितरण
8.	Dole	निर्वाहदान
9.	Edutainment	शिक्षारंजन
10.	Ejectment	बेदखली
11.	Eloquence	वाक्-पटुता
12.	Embossing seal	उभरी मुहर
13.	Emoluments	परिलब्धियाँ
14.	Empathy	परानुभूति
15.	<i>En block</i>	एक साथ

मेला सोनपुर का

ऋषभ राज

लिपिक

यूँ तो मेला गाँव और शहरों में आए दिन लगते रहते हैं और भारत की विविधता को देखते हुए इस बात की और भी पुष्टि होती है क्योंकि भारत में अनेक संप्रदाय अलग-अलग प्रकार के उत्सव मनाते हैं और मेला उत्सवों की जान होती है।

यहाँ मैं बात कर रहा हूँ बिहार राज्य में मनाए जाने वाले उस मेले की जिसे 'हरिहर क्षेत्र' मेले के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यहाँ प्रसिद्ध ऐतिहासिक हरिहर नाथ जी का मंदिर है। पटना से 25 किलोमीटर दूर यह सोनपुर इलाके में हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा अर्थात् नवंबर या दिसंबर के समय लगाया जाता है। सोनपुर के स्थानीय लोग इसे छत्तर मेले के नाम से भी पुकारते हैं। इस मेले की एक विशिष्ट पहचान एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला होने के कारण है जिसके कारण देश भर से व्यापारी आते हैं और पहचान प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। यहाँ हाथियों एवं घोड़ों की खरीद हमेशा से सुर्खियों में रहती है।

कहा जाता है कि किसी ज़माने में सोनपुर मेला युद्ध कौशल वाले हाथियों का सबसे बड़ा केंद्र हुआ करता था। कुछ नाम अगर लिये जाएं तो उनमें नाम आता है मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य, मुगल सम्राट अकबर और 1857 क्रांति के नायक बिहार के ही वीर कुँवर सिंह का, जो यहाँ हाथियों की खरीद के लिए आया करते थे। इस मेले से न सिर्फ व्यावसायिक कारण जुड़े हुए हैं बल्कि पौराणिक आस्था भी जुड़ी हुई है। लोगों की आस्था को अगर देखा जाए तो उसके अनुसार मेले के केंद्र में हरिहर नाथ का एक मंदिर है, जहाँ पर लोग भक्ति भाव से भगवान विष्णु एवं भगवान शिव का पूजन करते हैं। इसका कारण है कि इसी जगह

पर कौन्हारा घाट की गंडक नदी में एक हाथी को पानी पीते समय एक मगरमच्छ ने पकड़ लिया था। दोनों में बहुत देर तक लड़ाई हुई और हाथी भी कमजोर पड़ने लगा तो उसने भगवान विष्णु का ध्यान किया। भगवान विष्णु ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन आकर अपना सुदर्शन चक्र चलाकर दोनों के युद्ध को खत्म किया। इस स्थान पर इन दो जानवरों का युद्ध हुआ था, इस कारण यहाँ पशु खरीदारी को शुभ माना जाता है। इसी स्थान पर हरि (विष्णु) और हर (शिव) का हरिहर मंदिर भी है जहाँ सैकड़ों भक्त श्रद्धा से आते हैं।

मेरी सोनपुर मेले की यात्रा: बात है वर्ष 2015 की जब मैं अपने बड़े भैया तथा गाँव के ही सहपाठी मित्रों के साथ पटना जंक्शन से ऑटो लेकर हाजीपुर (केले के लिए प्रसिद्ध) होते हुए दीघा पुल से सोनपुर पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही वहाँ के प्रथम दृश्य से मंत्रमुग्ध हो गए हम लोग। यद्यपि भीड़ भी आजकल परेशानी का कारण बन जाती है परंतु मेला देखने की चाह ने हमें एक बच्चा बना दिया था। कहीं विभिन्न राज्यों की लोक संस्कृति, लोक कला एवं लोक गायन की झांकियाँ कलाकार प्रस्तुत कर रहे थे तो कहीं "मौत का कुआँ" प्रसिद्ध खेल चल रहा था। हमने भीड़ से गुजरते हुए, पहले एक जगह रुककर, हाथ धोकर, जलेबियाँ खाईं। उसके बाद बगल में ही बिहार का प्रसिद्ध पकवान लिट्टी-चोखा दिख गया तो सभी का मन कर गया खाने का। वहाँ से लिट्टी-चोखा खाकर आगे सारी दुकानों पर एक नजर डालते हुए आगे बढ़ रहे थे सब, तभी हवा में तैरने वाला झूला दिखाई दिया। उसमें हम पाँच लोग बैठ गए और जैसे ही झूला ऊपर की ओर गया, मेरे बड़े भैया काफी डर गए। वो बोलने लगे कि जैसे भी हो मुझे उतारो वरना में कूद जाऊँगा। पहले से ही हम लोग मजे कर रहे थे उनकी बातों को सुनकर परंतु स्थिति की गंभीरता को देखते हुए हमने बोलकर झूला रुकवाया और तब तक भैया की तबीयत भी खराब लगने लगी तो सभी ने फ़ैसला किया कि अब लौट चलते हैं।

वापसी में मंदिर के दर्शन कर हम सोनपुर मेले की यादों को समेट कर पटना लौट आये।



बंगाल के प्रसिद्ध कवि एवं गीतकार श्री द्विजेन्द्रलाल रॉय के
जन्मदिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति



खाली समय

कुलदीप

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

**वक़्त सबको मिलता है जिंदगी बदलने के लिए,
पर जिंदगी दोबारा नहीं मिलती वक़्त बदलने के लिए।**

प्राचीन समय में हम मनुष्य खाना प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते थे जिसमें हमारा बहुत समय खर्च होता था। तब हम या तो शिकार करते थे या खेती। उस समय का जीवन मुख्य रूप से भोजन प्राप्ति के आसपास ही घूमता था और फिर मनुष्य को संसार की सबसे कीमती चीज़ का आभास हुआ, वह बहुमूल्य चीज़ क्या थी? वह कीमती चीज़ थी समय। उसके बाद मनुष्य ने ऐसे तरीके खोजने शुरू किये जिससे समय और मेहनत दोनों बचे। यदि हम विश्लेषण करें तो मनुष्य के प्रत्येक आविष्कार का मुख्य उद्देश्य समय बचाना है। हमने पैदल से बैल गाड़ी, घोड़ा गाड़ी, कार, मोटर और प्लेन बनाए, आधुनिकीकरण से हमने जो समय बचाया उसी ने हमारे सामने एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया कि खाली समय में हमें क्या करना चाहिए?

हमने समय तो बचाना सीख लिया पर उस समय का हमने क्या किया? ज़्यादातर लोग इस बहुमूल्य चीज़ को खर्च करते हैं टीवी देखने में, वीडियो गेम खेलने में, शराब पीने में, सोशल मीडिया साइट्स पर या यूट्यूब पर। अगर हमने अपनी व्यस्त दिनचर्या में से खाली समय का सदुपयोग करना सीख लिया तो हम अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल जिंदगी में बहुत ज्यादा सुधार लाकर अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं। तो आइए दोस्तों आपके कीमती समय से कुछ क्षण लेकर हम जानने की कोशिश करते हैं कि खाली समय में हम क्या-क्या कर सकते हैं।

- 1. योजना बनाएं:** अपने लक्ष्य प्राप्ति को ध्यान में रखकर हम करिअर प्लानिंग, फ्यूचर प्लानिंग कर सकते हैं। वह चाहे एक दिन, सप्ताह,

मासिक या वार्षिक हो सकती है क्योंकि एक अच्छी योजना ही जीवन के लक्ष्यों को सार्थक बना सकती है।

2. **अपनी ऑफिस फाइल और इनबॉक्स को मैनेज करें:** अगर आप कार्यालय में हैं और यदि कुछ समय खाली मिल जाए तो अपने काम से संबंधित सभी फाइल्स को मैनेज करें, अपने कंप्यूटर या लैपटॉप पर फाइल्स के काम के अनुसार फोल्डर बनाएं, ईमेल को मैनेज करें, महत्वपूर्ण दस्तावेजों को मैनेज करें।
3. **अधूरे कामों को पूरा करें:** बहुत से ऐसे काम होते हैं जो काफी समय से पेन्डिंग हो सकते हैं, ऐसे कामों की एक सूची बनाकर रख लें तथा जब भी कार्य से फ्री हो तब सूची चेक कर उन कामों को पूरा करने की कोशिश करें।
4. **खुद को अपडेट करें:** काम करते-करते हम खुद को भूल जाते हैं, हम स्वयं को व्यवस्थित नहीं रख पाते। फ्री टाइम में हम खुद को अपडेट कर सकते हैं कि हमारा डेली रूटीन क्या है, हम क्या खाते हैं, हमारा ज्ञान समय के अनुसार बढ़ रहा है कि नहीं। बदलते समय के साथ हम पीछे तो नहीं रह गए हैं। हमारे क्षेत्र में क्या नई चीज़ ईजाद हुई हैं जैसे लेखापरीक्षा में ए.आई., नये-नये दिशानिर्देश, परिपत्र इत्यादि। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमें यह पता होना चाहिए कि हमारे देश दुनिया में क्या घटित हो रहा है क्योंकि इससे हमारा जीवन प्रभावित हो सकता है। इसके लिए हम फ्री टाइम में अखबार पढ़ सकते हैं, न्यूज़ देख सकते हैं, नवीनतम ट्विटर की प्रवृत्तियों का अनुसरण कर सकते हैं।
5. **अपनी रुचि के काम करें:** हरेक मनुष्य के अपने कुछ पसंदीदा कार्य होते हैं जो अभिरुचि बन जाते हैं। हम फ्री समय में अपनी अभिरुचि पर काम करते हैं वह चाहे गार्डनिंग, राइटिंग, रनिंग, पेंटिंग,

जिम्नास्टिक, तैराकी इत्यादि कुछ भी हो। हम अपने मनपसंद कार्य से बहुत कुछ सीखते हैं जो हमारी मानसिक तथा शारीरिक रूप से बहुत मदद करता है।

6. **इंटरनेट और मोबाइल का प्रयोग:** आज के युग में लगभग हर आदमी इंटरनेट और मोबाइल का उपयोग करता है, हम इनका इस्तेमाल अपना ज्ञान बढ़ाने हेतु कर सकते हैं हम अपने मन पसंदीदा क्षेत्र के संदर्भ में इंटरनेट सर्फ कर सकते हैं। बहुत सारी वेबसाइट तथा ब्लॉग से अपनी जानकारी बढ़ा सकते हैं तथा अपना अनुभव दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं, दूसरे हमसे साझा कर सकते हैं।
7. **अच्छी किताबें पढ़ें और सीखें:** किताबें मनुष्य की सच्ची मित्र होती हैं। ट्रेन, फ्लाइट में यात्रा करने के दौरान हम किताबें अपने साथ ले जा सकते हैं। खाली समय में किताबें पढ़ने से नया सीखने को मिलता है तथा हमारा ध्यान एकाग्र रहता है।
8. **व्यक्तिगत विकास:** हम अपने व्यक्तित्व में सुधार हेतु खाली समय में कार्य कर सकते हैं। इस समय का उपयोग हम अपनी कम्प्युनिकेशन स्किल्स, एम.एस. ऑफिस के कुछ अनदेखे पहलू सीखने नई-नई डेटा एनालिटिक्स स्किल्स सीखने तथा अपनी प्रेजेन्टेशन स्किल्स को विकसित करने में कर सकते हैं।
9. **व्यायाम या कसरत:** इंसान का पहला सुख निरोगी काया है। हम अपने सभी सुखों को तब ही भोग पाएंगे जब हमारा शरीर स्वस्थ हो, दैनिक कामकाजों में हमें अपने शरीर की कसरत हेतु समय अवश्य निकालना चाहिए। कहा गया है कि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। प्रतिदिन समय निकालकर शारीरिक व्यायाम कर हम निरोगी बन अपने कार्यालय तथा पारिवारिक जीवन का अच्छे से निर्वाह कर पाएंगे।

10. **स्वैच्छिक काम:** हम अपने जीवन के खाली समय के कुछ क्षण दूसरों की मदद हेतु लगा सकते हैं जैसे कि एन.जी.ओ. में वोलिंटियर कार्य, गरीब और अशिक्षित लोगों को पढ़ाना, वृद्धाश्रम में जाकर उनकी सेवा करना या पीड़ित पशुओं की पशुघर में कुछ मदद करना, अपने आस-पास की जगहों को साफ रखना, आवारा पशुओं को खाना व दवा देना, पौधारोपण करना आदि।
11. **लोगों से मिलना:** हम अपने कामकाज में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि हम अपने बहुत से दोस्त तथा रिश्तेदारों से बहुत समय से मिल नहीं पाते। हम अपने खाली समय में अपने दोस्तों/ रिश्तेदारों से फोन पर बात कर सकते हैं या मिलने जा सकते हैं। फ्री टाइम में हम नए-नए लोगों से भी मिल सकते हैं जिससे हमें कुछ अलग सीखने को मिलेगा तथा हमारा आत्मविश्वास और सोशल ब्लॉगिंग बढ़ेगी।
12. **कुछ नया लिखें, ब्लॉगिंग करें:** अपनी दैनिक क्रियाओं को हम डायरी में लिख सकते हैं जिससे हमारे पास अपना ही एक रिकॉर्ड होगा। हम कुछ नया भी लिख सकते हैं जैसे अपने खाली समय में, मैं यह आर्टिकल लिख रहा हूँ। कार्यालय के बहुत से लोग अच्छी नॉलेज रखते हैं, वे उसको ब्लॉग के माध्यम से या यूट्यूब के माध्यम से साझा कर सकते हैं।
13. **घरेलू कामकाज:** छुट्टी के दिन हम अपने घर की साफ सफाई कर सकते हैं, नई-नई रेसिपी बनाना सीख सकते हैं। खाना बनाना एक महत्वपूर्ण कला है जो जरूरत पड़ने पर बहुत काम आ सकती है। कामकाज के दौरान बहुत-सी वस्तुएं हम खरीद नहीं पाते हैं। खाली समय में हम लिस्ट बनाकर सब जरूरत की चीजों को खरीद सकते हैं। हमें जब भी मौका मिले अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए उन्हें नई-नई जगह ले जाना चाहिए।

14. **भ्रमण/ ट्रेकिंग:** घूमने-फिरने का मन किसका नहीं करता लेकिन व्यस्त जीवनशैली से वक्त निकालना एक बहुत बड़ा टास्क माना जाता है। जब भी खाली समय मिले ट्रेवलिंग करें, यह मन, शरीर और आत्मा को खुश करने की सबसे अच्छी दवाई है। इससे आत्मविश्वास आता है, लोगों तथा अलग-अलग जगह की संस्कृति को जानने का मौका मिलता है।
15. **ध्यान/ तनाव दूर करें:** सिर्फ दस मिनट का मेडिटेशन आपके दिमाग की एनर्जी को बढ़ा देता है। यह एनर्जी हमारी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ में सुधार करती है। ध्यान से हम अपना तनाव दूर कर सकते हैं जिससे हम एक नई ऊर्जा के साथ अपने काम को कर सकते हैं। इसलिए काम के बीच खाली समय में थोड़ा मेडिटेशन हमारे दिमाग और इंटरपर्सनल रिलेशन को अच्छा कर सकता है।
16. **आध्यात्मिकता की ओर:** इस भाग दौड़ वाले जीवन में इंसान अपना अस्तित्व खोता जा रहा है। उसके रीति-रिवाज, संस्कार, सादगी भरा जीवन सब पीछे छूट रहा है। लोग अकेला रहना पसंद कर रहे हैं। दूसरों से बात करना, समय बिताना बहुत मुश्किल होता जा रहा है। खाली समय में कुछ ना करके भी शांति से बैठना और अपने जीवन की कड़ी को देखना भी बहुत बड़ा टास्क है। कभी फुर्सत मिले तो अपने बारे में सोचना तथा हमारे पास जो कुछ भी है उसके लिए आभार प्रकट करने मात्र से ही हमें अत्यंत खुशी व शांति का अनुभव हो सकता है।

**“वक्त आता है जाता है
वक्त को संभाल कर रखें
वक्त बेवक्त काम आता है।”**

सुज्विंदर कुमार दुबे



प्रेम और स्वतंत्रता

कृष्ण कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

आज के प्रेम को देखकर मन बड़ा व्यथित हो जाता है, जितने प्रेमियों को देखता हूँ वे भिखारियों की तरह दूसरों के पीछे प्रेम पाने के लिए हाथ फैलाए रहते हैं और प्रेम माँगने से पहले दावा करते हैं कि उन्हें उससे 'किसी व्यक्ति विशेष से' प्रेम चाहिए क्योंकि वे उसके प्रेम में पड़ गए हैं अर्थात् उससे प्रेम हो गया है। इससे ऐसा लगता है कि प्रेम 'द्विपक्षीय व्यापार' है जिसके लिए दूसरा पक्ष होना अनिवार्य है। और जहाँ द्वैत है वहाँ गुलामी है जबकि प्रेम स्वतंत्रता का द्योतक है। आज का प्रेम सिनेमा से आया है और सिनेमा के जितने भी कलाकार हैं वे पूर्णतः भौतिकवादी हैं अर्थात् वे शरीर को ही आत्मा मानते हैं और शरीर के स्तर पर ही जीते हैं। आप ये सब उनके कार्यों से देख सकते हैं। वे हमेशा शरीर बनाते रहते हैं, टैटू बनवाते हैं, महंगे प्रोडक्ट खरीदते हैं फिर सोशल मीडिया पर डालकर लोगों की वाहवाही पाते हैं और लोगों के मन में उन प्रोडक्ट्स को पाने की आग लगा देते हैं। हमारे युवा, खासकर पंद्रह से बीस साल की उम्र के, अंधे हो उठते हैं। वहीं ग्लैमर पाने के लिए वे भी अपने कर्मों (शिक्षा, सदाचरण, सादगी, दया, क्षमा) को छोड़कर शरीर के स्तर पर ही जीने लगते हैं। उनका सारा समय शरीर को आकर्षक बनाने, नए-नए ब्यूटी प्रोडक्ट ढूँढ़ने, सिनेमा के ऐक्टर/ ऐक्ट्रेस को फॉलो करने में लग जाता है। धर्म, अध्यात्म और दर्शन से वे पूरी तरह दूर हो चुके होते हैं। भारतीय मूल्य अब उन्हें काटने लगते हैं, नैतिकता उन्हें बोझ लगने लगती है, उनका मन अशांति और क्षोभ से भर जाता है और उनके मन में प्रेम और स्वतंत्रता की माँगे उठने लगती हैं। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि ये दोनों माँगे नैसर्गिक हैं और प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक हैं। इनके बिना व्यक्ति के जीवन का कोई मूल्य ही नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को इनको हासिल करने का प्रयास करना ही चाहिए। परन्तु वे अज्ञानवश आगे भी सत्य समझे बिना ही गलत दिशा में ही आगे

बढ़ते रहते हैं और अपनी अशांति का दोष अपने परिवार और अपने समाज पर मढ़ देते हैं जबकि हकीकत यह है कि यह अशांति और दुःख उन्हें उन भौतिकवादी लोगों की संगति से मिला। हम पाने तो दौड़ पड़े लेकिन, हम क्या पाने निकले हैं? इसका परिणाम क्या होगा? क्या हम इसके बारे में कुछ जानते भी हैं? आप कहेंगे पूरी दुनिया जानती है, इसमें बड़ी बात क्या है, हमारा परिवार जानता है, समाज जानता है, सिनेमा जानता है उन्हीं से सीख लेंगे। आपको मालूम होना चाहिए भारत पर ब्रिटिश शासन होने और इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति होने के पश्चात् भारत का पूर्ण पश्चिमीकरण हो चुका है। हम पश्चिमी सभ्यता के गुलाम हो चुके हैं, अंग्रेजी बोलने वाला मूर्ख भी विद्वान माना जाता है और संस्कृत का विद्वान भी मूर्ख और यह स्थिति लगभग 200 वर्षों से है अर्थात् हमारे माता-पिता, दादी-दादा भी किसी और नहीं बल्कि इसी परिस्थिति में पले-बढ़े। उनसे पूछ कर देखो, क्या आपने कभी गीता पढ़ी है? ज्यादा संभावनायें 'न' की हैं और अगर पढ़ी है तो उससे सीख क्या ली है? इस पर उनके पास कोई जवाब नहीं होगा। उम्र कोई बुद्धिमानी का पैमाना नहीं है। भगवान शुकदेव, ज्ञानदेव आदि इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं।

अब मुख्य विषय पर आते हैं, विषय है: स्वतंत्रता और प्रेम। सर्वप्रथम मन में विचार करना चाहिए, मजेदार प्रश्न है: 1. स्वतंत्रता किसको चाहिए? 2. किससे चाहिए? पहले प्रश्न का उत्तर मिलेगा- मुझको चाहिए। दूसरे प्रश्न के दो उत्तर हो सकते हैं- मुझसे चाहिए या संसार से चाहिए? उम्मीद है आप लोग दूसरे विकल्प को ही चुनेंगे क्योंकि हम अधिकतर संसार से ही परेशान रहते हैं।

दूसरा प्रश्न है, प्रेम किसको चाहिए? किससे चाहिए?

उत्तर मिलेगा-मुझको चाहिए। संसार से चाहिए। यद्यपि दोनों उत्तर गलत हैं तथापि इनका परीक्षण करना चाहिए। इन प्रश्नों का जवाब सिर्फ और सिर्फ अध्यात्म के पास है क्योंकि जहाँ से विज्ञान की सीमा समाप्त

होती है वहाँ से अध्यात्म शुरू होता है। तुम्हारे आस-पास की चीजों को खोलकर रख देना विज्ञान का कार्य है और तुम्हारे अस्तित्व (सर्वोत्कृष्ट रूप) को खोलकर रख देना अध्यात्म का कार्य है। सर्वप्रथम विचार करो तुम क्या हो और संसार क्या है? मैं बात सिर्फ तुम्हारे परिप्रेक्ष्य में कर रहा हूँ। क्या तुम्हारे लिए, तुमसे पहले संसार था? और मृत्यु के पश्चात् तुम्हारे लिए संसार रह जाएगा? उत्तर है कि तुम्हारे जन्म से संसार का जन्म हुआ है और तुम्हारी मृत्यु से संसार की मृत्यु हो जाएगी।

इससे यह निष्कर्ष निकला कि तुम संसार के केन्द्र में हो और संसार तुमसे है न कि तुम संसार से हो। हर व्यक्ति ने अपने संसार का निर्माण उसी प्रकार किया है जैसे मकड़ी अपने जाले का निर्माण करती है और मृत्यु पश्चात् व्यक्ति संसार को वैसे ही समेट लेता है जैसे मकड़ी अपने जाले को। जैसे तुम ("तुम" से मेरा आशय तुम्हारे मन से है) हो वैसे ही संसार है। तुम बदल जाओ संसार बदल जाएगा। अब इसके भी आगे जाओ संसार मात्र विचार है। क्या संसार ने कभी कहा है कि वो है? ये तो आप कहते हो कि वो है। आप कहते हो वो अच्छा है, वो बुरा है, वो छोटा है, वो बड़ा है इत्यादि। संसार को समझने से पहले तुम्हें समझना पड़ेगा कि तुम कौन हो? तुम शरीर हो, मन हो, या और कुछ।

दर्शन के सिद्धांतों ने एक तथ्य का अन्वेषण किया है कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। यह सार्वभौमिक सिद्धांत है। आप इसे अपने तर्क की कसौटी पर कस कर देख लें। दूसरा सिद्धांत है जो चीज परिवर्तनशील है वह भी नाशवान है। आप देखेंगे सूर्य, चंद्र, पृथ्वी आदि सभी वस्तुएं परिवर्तनशील हैं, कोई भी वस्तु उत्पन्न होकर परिवर्तित होते-होते एक दिन नाश को प्राप्त होती है। ये अनुमान की बातें नहीं प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। कोई साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी इसको जान लेता है। इन सिद्धांतों के अनुसार शरीर तो नाशवान है ही उसमें कोई संदेह नहीं है। मन भी परिवर्तनशील वस्तु है। यह गहरी नींद में विलुप्त हो जाता है लेकिन तब क्या

हमारा अस्तित्व खत्म हो जाता है? नहीं। बल्कि गहरी नींद में हमें संसार का ज्ञान नहीं होता इसके बाद भी हमें परम आनन्द की अनुभूति होती है। कोई भौतिकवादी और नास्तिक भी बिना देहभाव को भुलाए और बिना गहरी नींद के नहीं रह सकता। ऐसा करने से वह पागल हो जाएगा। अतः यह निष्कर्ष निकला हमारा 'मन' भी नाशवान है। बल्कि जन्म और मरण इस मन के ही होते हैं। लेकिन हमारा अस्तित्व तो इस मन के पार है। जो सदैव है, जिसका न तो जन्म होता है, न मृत्यु, वो सदैव एकरस 'आनन्द स्वरूप' है, वह सर्वज्ञ है, वहाँ भय नहीं है, वह प्रेम स्वरूप है, वह पूर्ण है, ऐसा ज्ञानियों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा है। यह कोई संकल्पना नहीं बल्कि हकीकत है।

मन (अहंकार अथवा अहं भाव) अज्ञानवश अपने को अपूर्ण मानता है और संसार के व्यक्तियों, वस्तुओं से जुड़कर पूर्ण होना चाहता है। इसके लिए वो भिन्न-भिन्न चालें चलता है उसी में से एक चाल है 'तथाकथित प्रेम'। यह जीव मोह में फँसकर जीवन भर विषय-वासनाओं में लिप्त रहता है। एक दिन उस अतृप्त जीवात्मा को मृत्यु अपने चंगुल में फँसा लेती है। वो जीव फिर से पूर्व संस्कारों के वशीभूत होकर अपनी वासनाओं को तृप्त करना चाहता है। जबकि सुख का श्रोत उसके अंदर ही है। वह अपने आप में ही पूर्ण है आनन्द स्वरूप है।

प्रेम-जब व्यक्ति आत्मा में ही रमण करने वाला होता है तब वह मन की गुलामी की सारी जंजीरें तोड़ देता है। वह स्वयं में ही तृप्त रहता है। तब जाकर उसके स्वतंत्र मन में प्रेम का जन्म होता है। प्रेम ईश्वर का रूप है वह किसी व्यक्ति विशेष से न होकर समष्टि के स्तर पर होता है। उसके हृदय में चींटी से लेकर मानव तक के लिए समान प्रेम होता है। वह प्रेम स्वरूप हो जाता है।

एक बात फिर से बताता हूँ, प्यारे भाइयो और बहनो! जो तुम आस-पास देखते हो यह प्रेम का लेबल लगी हुई विषय-वासनाएं हैं जैसे कि शहद का लेबल लगी बोतल में रखा जहर हो। ये दुःख रूप ही हैं। इनमें एक क्षण

की खुशी के बदले दुःख और निराशा का अम्बार मिलेगा। इसलिए परमात्मा के प्रेम को पाकर तृप्त हो जाओ। इन भौतिक वस्तुओं के बीच रहो लेकिन इन्हें अपना मत मानो। हमारा तो बस एक वासुदेव है जो सबसे सुन्दर है, सबसे बड़ा प्रेमी है, स्वार्थरहित दयालु है, अविनाशी है, सब पर करुणा करने वाला है, सबके अस्तित्व का आधार है।

अध्यात्म बहुत गम्भीर विषय है, यह तो एक झांकी मात्र है। जितना इसमें डूबोगे उतना ही आनन्द आयेगा। इस दुःख रूपी संसार को मन से निकालकर मन में करुणामय परमेश्वर को प्रेम से बुलाकर के तो देखो। श्रद्धापूर्वक श्रीमद्भगवद्गीता पढ़कर इसके सिद्धांतों को जीवन में धारण करके तो देखो। जीवन प्रेममय हो जायेगा, आनन्दमय हो जाएगा।



क्या आप जानते हैं?

प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2021 में दिनांक 14-15 सितंबर को वाराणसी, उत्तरप्रदेश में आयोजित किया गया था। द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2022 में दिनांक 14-15 सितंबर को सूरत, गुजरात में आयोजित किया गया था। तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2023 में अभी हाल ही में दिनांक 14-15 सितंबर को पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित किया गया है।

अंतिम स्वतंत्र नवाब की भूमि में

गौतम सरकार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोविड-19 के प्रसार और उसके बाद के लॉकडाउन, सख्त उपायों और कई मौतों ने हमें पिछले कुछ वर्षों से यात्रा के लिए बाहर ना जाने के लिए मजबूर कर दिया था।

मार्च 2022 में अपने बेटे की परीक्षा के बाद हम कहीं जाने की सोच रहे थे जो बहुत दूर भी न हो एवं ऐतिहासिक महत्व का स्थान भी हो। जैसा कि तय हुआ था, हवाईजहाज़ से कोलकाता जाने के बाद मैं, मेरी पत्नी और हमारा बेटा सियालदह रेलवे स्टेशन से शाम 6:20 बजे भागीरथी एक्सप्रेस ट्रेन में सवार हुये। हमारा गंतव्य मुर्शिदाबाद था। मुर्शिदाबाद पहुँचने में चार घंटे लगे। ट्रेन से उतरते ही मुझे एक कंपकंपी महसूस हुई। हो सकता है प्लैटफॉर्म पर रात की ठंडी हवा के कारण ऐसा हुआ हो, लेकिन मुझे लगा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं बंगाल तथा पूरे भारत के अंतिम स्वतंत्र नवाब की भूमि पर खड़ा था।

अगले दिन, नाश्ते के बाद, दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए हमने शंकर दास की बैटरी रिकशा (स्थानीय नाम टोटो) भाड़े पर लिया। पहले दिन सुबह वह (शंकर ने) एक-एक करके हमें काठगोला पैलेस, देबी सिंह के महल तथा नसीरपुर पैलेस, जाफरागंज या फिर निमकहराम देउड़ी, जगत सेठ के घर, मीर जाफर और उनके परिवार के कब्रिस्तान, इमामबाड़ा और हजारदुयारी पैलेस में ले गए। सभी जगह इतनी खूबसूरत और ऐतिहासिक थी कि हम सभी हैरान रह गए।

शाम में शंकर हमें मोतीझील पार्क ले गए जहाँ पर हमने डबल राइड साइकिल, पैडल बोट, टॉय ट्रेन, गोल्फ कार और भारत के अंतिम

स्वतंत्र नवाब के उत्थान और पतन के लाइट और साउंड शो का आनंद लिया।

अगले दिन सुबह हमारा ड्राइवर-कम-गाइड शंकर ठीक 7:30 बजे आया। हम भी तैयार थे। वह हमें सीधे भागीरथी नदी के घाट पर ले गया। वहाँ हमने देखा कि दो बड़ी-बड़ी मोटरयुक्त नावें आपस में बँधी हुई थीं और लोग, मोटर-साइकिल, ऑटोरिक्शा और यहाँ तक कि बड़ी गाड़ियाँ भी उसपर सवार होकर नदी पार कर रही थीं। यह हम सभी के लिए एक नया अनुभव था। हम अपने टोटो के साथ एक नाव पर सवार हुये और नदी के उस पार चले गए। वहाँ हमने पहले आखिरी स्वतंत्र नवाब सिराजुद्दौला के श्मशान घाट तथा खुशबाग में जहाँ पर उनके दादा नवाब अलीवर्दी खान, पत्नी लुत्फुन्निसा बेगम, निजी गार्ड मीर मदन और रिशतेदारों के साथ-साथ उनका भी कब्रिस्तान है, को देखा। जब हमारे गाइड ने मीर जाफर के विश्वासघात के बारे में बताया और बताया कि कैसे उसके बेटे मीर मिरान ने योजना बनाई और सिराजुद्दौला और उनके रिशतेदारों को मार डाला, तो हम अपने आँसू नहीं रोक सके। फिर हम एक-एक करके जगतबंधु मंदिर, किरीटेश्वरी माँ के मंदिर (माँ काली के 51 शक्तिपीठ में से एक), फूटी मस्जिद (माना जाता है कि इसे एक दिन में बनाया गया था), कटरा मस्जिद (यहाँ नवाब मुर्शिदकुली खाँ की समाधि है) और अंत में उस जगह गए जहाँ प्रसिद्ध जहान कोश कमान रखा गया है। शाम में हम फिर से पहले जैसे ही भागीरथी नदी पार करके अपने होटल लौट आए।

अगले दिन सुबह हम 6:20 बजे भागीरथी एक्सप्रेस में सवार हुये। कोई बात नहीं कर रहा था। कुछ देर बाद मेरी पत्नी ने मेरा हाथ छुआ और मेरे कान में बोली, "मैं यहाँ फिर से आना चाहती हूँ।" मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसे आश्वासन दिया। मेरे बेटे ने हमारी पूरी यात्रा के दौरान इस्तेमाल किए गए कैमरे को पकड़ रखा था और उन तस्वीरों को देख रहा

था जिन्हें उसने खींचा था। हम 10:40 बजे सियालदह रेलवे स्टेशन इस संतोष के साथ पहुँचे कि हमने एक अद्भुत ऐतिहासिक स्थान का दौरा किया है और यह उम्मीद भी मन में थी कि हम फिर से हमारे अंतिम स्वतंत्र नवाब की भूमि का दौरा करेंगे।



रक्षाबंधन पर्व 2023 में कार्यालय की बहनें भाइयों को राखी बांधते हुए

अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह की यात्रा का अनुभव

चन्द्रिमा विश्वास
एम. टी. एस.

मैं सपरिवार अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह की यात्रा करने की सोच रही थी। अतः हमने सितंबर 2022 में वहाँ जाने की योजना बनाई। हमने फ्लाइट के लिये अपनी टिकट पहले ही बुक कर ली थी और उस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। आखिरकार वह दिन आ ही गया। हम लोग नेताजी इंटरनेशनल एयरपोर्ट यानी कोलकाता एयरपोर्ट से पोर्टब्लेयर पहुँचे। पोर्टब्लेयर हवाई अड्डे के रास्ते में हमने बादलों और सूरज के विभिन्न प्रकार के खेल देखे। मेरी छोटी भतीजी उस सुंदरता का बहुत आनंद ले रही थी। हमने पहले से ही अपने टिकट के साथ अपना खाना भी बुक कर लिया था। लैंडिंग से कुछ देर पहले खिड़की से अण्डमान का जो नजारा दिखा वह बहुत ही चित्ताकर्षक था। पानी से घिरा हुआ जमीन का टुकड़ा चारों तरफ बिखरा हुआ था। वे ज़मीन पर एक रंगीन इंद्रधनुष प्रतिबिंबित कर रहे थे। हम सभी उस प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे। कुछ देर बाद हम अण्डमान के पोर्टब्लेयर पर उतरे। हमें समझ ही नहीं आया कि ढाई घंटे कैसे बीत गए।

अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह स्वर्ग जैसा है जो प्राकृतिक सुंदरता, रोमांच और सांस्कृतिक समृद्धि का मिश्रण प्रदान करता है। हमें होटल ले जाने के लिए, एक स्कोर्पियो कार हवाई अड्डे पर पहले से ही हमारा इंतज़ार कर रही थी। दोपहर का भोजन करने के बाद हम सेल्यूलर जेल के लिए निकल पड़े। सेल्यूलर जेल एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। औपनिवेशिक काल के दौरान अंग्रेजों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को कैद करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता था। यह स्मारक अब

उन लोगों को श्रद्धांजलि के रूप में खड़ा है जिन्होंने आज़ादी के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया था। सेल्यूलर जेल एक विशाल तीन मंजिला इमारत है जिसे कैदियों को अलग-अलग करने और उनके मध्य बातचीत को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया था। कैदियों के मध्य किसी भी तरह की बातचीत को रोकने के लिए विंग्स को एक-दूसरे के पीछे व्यवस्थित किया गया था। इसकी विशेषता सात विंग्स वाला एक अद्वितीय पैटर्न है, जो एक केंद्रीय पहरे की मीनार से फैला हुआ है। कमरे का निर्माण एक अकेले कैदी को रखने के लिए किया गया था और इसमें एक छोटा वेन्टिलेटर था जो न्यूनतम रोशनी और वेन्टिलेशन प्रदान करता था। जेल ईंट और पत्थर से बना है, जो इसे एक डरावना रूप देता है। सेल्यूलर जेल, जिसे काला पानी के नाम से भी जाना जाता है, उसके अंदर एक संग्रहालय है जो इसके इतिहास और भारत की आजादी के संग्राम की झलक दिखलाता है। संग्रहालय कैदियों और उनके बलिदानों से संबंधित तस्वीरें, दस्तावेज़ और कलाकृतियाँ प्रदर्शित करता है। यह कैदियों की कठिन जीवन परिस्थितियों और उनके द्वारा सामना किए गये संघर्षों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। हमने एक गाइड लिया था, जिसने जेल के विभिन्न वर्गों और उल्लेखनीय कैदियों की कहानियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

व्यक्तिगत कोठरियों के अलावा, सेल्यूलर जेल में एकान्त कारावास और सज़ा के लिए भी विभाग थे। फाँसीघर, जहाँ कैदियों को फाँसी दी जाती थी और तेल मिल, जहाँ कैदियों को काम करने के लिए मजबूर किया जाता था, कैदियों द्वारा सहन की गई कठिनाइयों की गंभीर याद दिलाते हैं। गाइड ने बताया कि अपने चरम पर जेल की कुल क्षमता लगभग 800 कैदियों की थी। परिसर के अंदर, हमने शहीद स्मारक देखा था, जो उन स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि है जो सेल्यूलर जेल में कैद थे और जिनकी मृत्यु हो गई थी। यह उनके बलिदान और स्वतंत्रता के संघर्ष की याद दिलाता है। हमने वीर सावरकर की जेल देखी थी, जिन्हें 28 साल की उम्र में दोषी

ठहराया गया और 50 साल की कैद की सजा सुनाई गई थी और 4 जुलाई 1911 को सेल्यूलर जेल में लाया गया था। सेल्यूलर जेल में शाम को एक लाइट एण्ड साउंड शो आयोजित किया जाता है, लेकिन दुर्भाग्य से उस समय नवीनीकरण के कारण इसे बंद कर दिया गया था।

सेल्यूलर जेल के बाद हम वापस अपने होटल आ गये थे। खाने की मेज पर हमसे कहा गया कि कल हम नाश्ते के बाद रॉस द्वीप जायेंगे। अगले दिन हम नाश्ता करके रॉस द्वीप के लिए निकले। हम कार से एबरडीन जेट्टी पहुँचे, फिर नाव से हम रॉस द्वीप पहुँचे, जिसे नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप के नाम से भी जाना जाता है। यह द्वीप घने जंगलों, ऊँचे पेड़ों और जीवंत वनस्पतियों से भरपूर है, जो एक शांत और ताज़ा वातावरण बनाता है। यह प्रकृति प्रेमियों और पक्षी देखने वालों के लिए एक स्वर्ग है, पक्षियों और विदेशी वनस्पतियों की कई प्रजातियाँ इस द्वीप को अपना घर कहती हैं। हमने मोरों को स्वतंत्र रूप से घूमते हुए देखा जो द्वीप के आकर्षण को बढ़ा रहे थे। द्वीप पर एक छोटा-सा संग्रहालय भी है जो तस्वीरें, कलाकृतियाँ और ऐतिहासिक जानकारी प्रदर्शित करता है।

इस द्वीप का नाम जेम्स रॉस के नाम पर रखा गया था। रॉस द्वीप अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में ब्रिटिश शासन के दौरान उनके प्रशासनिक मुख्यालय के रूप में कार्य करता था। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में, रॉस द्वीप को सरकारी भवनों, चर्च, अस्पतालों, स्कूलों, एक प्रिंटिंग प्रेस और अन्य बुनियादी ढांचे के साथ एक आत्मनिर्भर बस्ती के रूप में विकसित किया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के काल में, जापानी सेना ने अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह पर आक्रमण किया, जिसके कारण अंग्रेजों को रॉस द्वीप छोड़ना पड़ा। आज़ादी के बाद अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारतीय प्रशासन के अधीन आ गया। तब रॉस द्वीप भारतीय केन्द्र शासित प्रदेश का हिस्सा बन गया। द्वीप पर इमारतें खण्डहर हो गई थी, प्रकृति ने अधिकांश भूमि को पुनः प्राप्त कर लिया, जिससे इसे एक

रहस्यमय और भयावह माहौल बन गया। अपने ऐतिहासिक महत्व के अलावा, रॉस द्वीप आश्चर्यजनक समुद्र तटों और सुंदर दृश्यों का दावा करता है। यह द्वीप अण्डमान सागर के फ़िरोज़ा पानी के मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है, जिसमें दूर से सुन्दर मूंगा चट्टानें दिखाई देती हैं। हमने अपना दोपहर का भोजन रॉस द्वीप पर किया था जिसे हम अपने साथ ले गये थे।

रॉस द्वीप से वापस आने के बाद हम कॉर्बिन्स कोव समुद्र तट गये। यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता, शांत माहौल और कई मनोरंजक गतिविधियों के लिए जाना जाता है। समुद्र तट पर नरम, सफेद रेत का एक लंबा विस्तार था, जिसके किनारों पर ताड़ के पेड़ लहरा रहे थे। बंगाल की खाड़ी का साफ़ फ़िरोज़ा पानी तटरेखा से धीरे-धीरे टकराता है। पानी की शांति इसे तैराकी और अन्य जल-क्रीड़ाओं के लिए आदर्श बनाती है। समुद्र तट सुंदर पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जो इसके आकर्षण को बढ़ाता है और एक आदर्श पृष्ठभूमि प्रदान करता है। समुद्र तट बुनियादी सुविधाओं जैसे टॉयलेट, चेंजिंग रूम और छोटे फूड स्टॉल से सुसज्जित है। जेट स्कीइंग, बनाना बोट राइड जैसी जल-क्रीड़ाएं उपलब्ध थीं। कॉर्बिन्स कोव समुद्र तट का एक मुख्य आकर्षण सूर्यास्त का मनमोहक दृश्य है, जैसे ही दिन खत्म होता है, आकाश शानदार रंगों के कैनवास में बदल जाता है, जिससे समुद्र तट और आसपास के परिदृश्य पर एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला जादुई माहौल बनता है। कॉर्बिन्स कोव समुद्र तट के बाद हम पोर्टब्लेयर में अपने होटल पहुँचे और रात्रि का भोजन किया। अगले दिन हमें हैवलॉक द्वीप जाना था।

अगली सुबह चाय पीने के बाद हम हैवलॉक द्वीप जाने के लिए तैयार हुए। हमने अपना खाना अपने साथ पैक कर लिया। पहली बार कूज़ जहाज यात्रा के लिए हम बहुत उत्साहित थे। कूज़ जहाज़ से यात्रा करने के लिए मौसम बिल्कुल उपयुक्त था। यात्रा के दौरान लहरें सूर्य की किरण से चमक रही थीं। हमने उस यात्रा का बहुत आनंद लिया। लोग संगीत के साथ

नाच रहे थे कूज़ में, प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते हुए समय कैसे बीत रहा था, समझ ही नहीं आ रहा था।

हैवलॉक द्वीप अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित एक स्वर्ग के समान है। इस द्वीप को स्वराज द्वीप के नाम से भी जाना जाता है। यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता, प्राचीन समुद्र तटों और जीवंत समुद्री जीवन के लिए प्रसिद्ध है। हम इस द्वीप में एक गाड़ी से होटल पहुँचे। दोपहर का भोजन करने के बाद हम राधा नगर समुद्र तट के लिए निकल पड़े। अपनी प्राचीन सुंदरता के लिए इसे एशिया के सबसे खूबसूरत समुद्र तट में से एक माना जाता है। राधा नगर समुद्र तट सफेद रेत, अति स्वच्छ फ़िरोज़ा पानी और इसके चारों ओर हरी-भरी हरियाली का एक लंबा विस्तार समेटे हुए है। यह एक शांत माहौल प्रदान करता है। इस समुद्र तट का शांत और उथला पानी तैराकी और नौकायन के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। यहाँ पर भी चेंजिंग रूम, शॉवर सुविधाएं और भोजन के कुछ छोटे स्टॉल थे। राधा नगर समुद्र तट पर खड़े होकर क्षितिज के नीचे सूरज को डूबते हुए देखना, वास्तव में एक सुखद, जादुई अनुभव था। हमारी यात्रा के एक सप्ताह पहले स्कूबा डाइविंग के दौरान एक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी थी। इस कारण, सभी द्वीपों पर स्कूबा डाइविंग रोक दी गई थी।

राधा नगर समुद्र तट से हम अपने होटल आ गये। अगले दिन हमें नील द्वीप के लिए निकलना था। हम कूज़ जहाज़ द्वारा हैवलॉक द्वीप से नील द्वीप पहुँचे। नील द्वीप को शहीद द्वीप के नाम से भी जाना जाता है। हमने अपना सामान होटल में रखा, दोपहर का भोजन होटल में किया और नील द्वीप के सबसे अच्छे समुद्र तट, लक्ष्मणपुर समुद्र तट के लिए निकल पड़े। उस दिन बारिश शुरू हो गई थी, लेकिन बारिश रुकने के बाद मौसम बहुत बढ़िया था।

लक्ष्मणपुर समुद्र-तट पर अण्डमान द्वीप समूह के अन्य लोकप्रिय समुद्र तटों की तुलना में अपेक्षाकृत कम भीड़ होती है। इससे यह विश्राम

और प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने के लिए एक आदर्श स्थान बन जाता है। लक्ष्मणपुर समुद्र तट का एक मुख्य आकर्षण प्राकृतिक चट्टान संरचनाएं हैं, जो इसे स्नॉर्कलिंग और स्कूबा डाइविंग के शौकीनों के लिए एक लोकप्रिय स्थान बनाती हैं। हमने मूंगा चट्टानें देखीं और विभिन्न प्रकार की मछलियाँ, समुद्री खीरे और रंगीन समुद्री जीव देखे। इस समुद्र तट पर हमने ग्लास बॉटम बोट राइडिंग की, जो बेहद आकर्षक थी। हमने समुद्र की गहराई में विभिन्न प्रकार के मूंगे, मशरूम और मछलियाँ देखीं। अगले दिन भोर में हम स्कूटी से सूर्योदय देखने गए। हल्की हवा और लहरों की आवाज़ ने उस समुद्र तट पर एक जादुई माहौल बना दिया था।

कुछ देर बाद बारिश शुरू हो गई थी। पोर्टब्लेयर वापस लौटने का समय आ गया था। क्रूज़ जहाज चलने के कुछ देर बाद हवा की गति बढ़ गई और इसके साथ ही बारिश भी तेज हो गई। उन्होंने सभी को एक पेपर बैग दिया था जिसका उपयोग मेरे लिए अज्ञात था। जहाज़ बहुत ज़ोर से हिल रहा था। सीधा खड़ा होना भी असंभव था। हमसे कहा गया कि सबसे ऊपरी डेक को खाली कर दें और चयनित सीटों पर जाएँ। सभी लोगों को समुद्री बीमारी महसूस हुई और उनमें से कई लोगों को उल्टी होने लगी थी। उस समय मुझे उस पेपर बैग का उपयोग समझ आया! कुछ देर बाद तूफान की गति कम हो गई। क्रूज़ जहाज़ में एक ही यात्रा में अच्छे और बुरे, हमें दोनों अनुभव भी हो गए थे।

हम पोर्टब्लेयर में अपने होटल वापस आ गए। अगले दिन भोर में हमने दिलीपुर के लिए अपनी यात्रा शुरू की। शाम को हम अपने गंतव्य रॉस और स्मिथ द्वीप, जुड़वां द्वीप पर पहुँचे। दो द्वीप एक प्राकृतिक रेत पट्टी से जुड़े हुए हैं। पानी बिल्कुल साफ और फ़िरोज़ा रंग का है। उच्च ज्वार के दौरान, रेत की पट्टी दो द्वीपों के समुद्र-तट पर पानी का निशान छोड़कर गायब हो जाती है और कम ज्वार के दौरान रेत की पट्टी फिर से दिखाई

देती है जिससे द्वीप राजसी दिखते हैं। साफ नीला पानी पूरे अनुभव में स्वच्छता का स्पर्श जोड़ता है।

रॉस और स्मिथ द्वीप ओलिव रिडले कछुओं का घर है। दिगलीपुर में रात्रि विश्राम के बाद अगले दिन हम पोर्टब्लेयर में स्थित अपने होटल वापस आ गये। शाम को हम स्थानीय बाजार में घूमे। अगले दिन नाश्ते के बाद हम पोर्टब्लेयर हवाई अड्डे पर पहुँचे। हवाई जहाज में सफर करते समय मैंने खुद से वादा किया था कि हम इस द्वीप पर दुबारा जरूर आएंगे। जो लोग प्रकृति से प्रेम करते हैं, वे इस स्थान पर दुबारा आये बिना नहीं रह पाएंगे।



आवासीय कॉलोनी में स्वच्छ भारत अभियान का आयोजन

चाय और हमारा बचपन

पार्थसारथी चक्रवर्ती

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जब हम बच्चे थे तो हमें दूध और हॉर्लिक्स पीना बिल्कुल पसंद नहीं था और अगर दूध में मलाई तैर गई तो यह और भी खराब लगता था। फिर भी पिटने के डर से बार-बार पीना पड़ता था, लेकिन दोस्त सुमित की जेब में शक्कर और मिल्क पाउडर के मिश्रण, क्षीर पकाने के लिए घर में आए कंडेन्सड मिल्क आदि हथेली में रखकर चाटने का मजा अलग ही था, लेकिन वे तो नियमित रूप से नहीं मिलते थे। बल्कि गाय के दूध के गिलास या अमूलस्प्रे के घूँट ने हमारे बचपन को इतना कष्टमय बना दिया था कि हम जल्दी से बड़े होकर दूध न पी कर चाय पीना चाहते थे। चूँकि हमें चाय नहीं दी जाती थी, इसलिए हम चाय से ही सबसे ज्यादा आकर्षित होते थे। कभी-कभी दूध के एक बड़े गिलास में हमें दिखाकर एक चम्मच चाय मिला दी जाती और इसे ही चाय कह दिया जाता था। उस दिन हम बड़े मजे से चाय पीते थे। उन दिनों हम सभी भाई-बहन बड़े होने की पहचान मिलने की खुशी में, लिखाई-पढ़ाई और सारे काम-काज बहुत ही आसानी से कर लिया करते थे।

लेकिन कहा जाता था कि छोटों को दूध पीना चाहिए और बड़ों को चाय यही नियम है। नतीजतन, चाय हमारे लिए आसानी से नहीं मिलती थी। वो एक चम्मच चाय दूध में मिलकर भी नहीं। इसलिए जल्दी बड़े होने की इच्छा बार-बार जागृत होती थी।

हम समय के नियमों के अनुसार बड़े हुए हैं। धीरे-धीरे मैं घर के कामों में अपनी माँ की मदद करने लगा। एक दिन मेरी माँ अपने एक भाई के घर गईं, मतलब मेरे मामा का घर। उस घर में रहती थी मेरी ममेरी बहन, सोमा। तब तक वह चाय बनाना सीख चुकी थी। मेरी माँ के आने पर वो

अपने हाथ से चाय बनाकर अपनी बुआ को पिलाना चाहती थी। मेरी मामी भी मान गई और सोमा चाय बनाने के लिए किचन में चली गई। लेकिन बहुत देर तक उसके नहीं लौटने पर मेरी मामी किचन में देखने गई। पता है, उन्होंने क्या देखा किचन में जाकर? सोमा को पता था कि चाय कैसे बनानी है और एक चम्मच चाय चख कर देखना है कि सब कुछ ठीक है या नहीं। मतलब, जैसे मामी को करते हुए देखती थी लेकिन सोमा का टेस्ट एक चम्मच पर ही नहीं रुका। रुकता भी कैसे? कितने दिनों बाद चाय पीने का मौका जो मिला था उसे। बँधी गाय को छूट मिल जाए, तो क्या होता है पता है न? नतीजा यह हुआ कि चाय के प्याले में चाय तेजी से कम होती जा रही थी। परिणामस्वरूप, सोमा को प्याला भरने के लिए दुबारा दूध मिलाना पड़ा। फिर से कुछ चम्मच चखीं, दूध मिलाया फिर से... इसके बाद जब चाय का रंग लगभग सफेद हो गया, तब तक मामी किचन में आ चुकी थी। इस घटना को बार-बार सभी के सामने दोहराया गया। सुनकर भले ही सभी को हँसी आती थी लेकिन सोमा को बहुत दिन तक बहुत शर्मिंदगी महसूस करनी पड़ी।

दूसरी कहानी सुमित की थी, जो जेब में शक्कर मिला हुआ मिल्क पाउडर लेकर घूमता था। उसने भी चाय बनाना सीखा। जिस दिन ताऊ जी उनके घर घूमने आए, सुमित ने उत्साहपूर्वक अपनी माँ से चाय बनाने की अनुमति ली। ताऊ जी थे कवि, कविता लिखते थे और बहुत गंभीर व्यक्ति भी थे वो। कहीं लिखा था कि शायरों को लेमन टी पीना अच्छा लगता है। नतीजतन, सुमित ने अपने द्वारा बनाई हुई नींबू चाय ताऊ जी को पिलाने का फैसला किया। घर के पेड़ में ही बहुत सारे नींबू होते थे। वह बहुत सारे नींबू लाया और एक चाकू से एक नींबू के कुछ टुकड़े किये। फिर चाय बनाई और चाय में एक नींबू निचोड़ दिया। अपने जीवन की पहली नींबू वाली चाय लेकर ताऊ जी के हाथ में थमा दी, लेकिन गंभीर ताऊ जी के डर से उसमें चाय चखने की हिम्मत नहीं थी। सुमित ने समझदारी से प्लेट में दो बिस्किट भी दे दिये थे।

ताऊ जी सुमित की मां के साथ एक जरूरी बातचीत कर रहे थे। इसलिए उन्होंने बिना देखे ही प्याले से पहला घूँट लिया। एक घूँट के साथ, वह इतना चौंक गये कि लगभग आधा कप चाय उनकी सफेद धोती पर गिर गई। ताऊ जी को बहुत गुस्सा आया। नहीं, नहीं, वह नन्हें भतीजे पर इतना नाराज नहीं होते अगर चाय में ज्यादा नींबू निचोड़ने से चाय खट्टी न होती। लेकिन सुमित को पहले किसी ने नहीं बताया कि नींबू चाय बनाने के लिए दूध नहीं डालना होता है। नतीजा यह हुआ कि ताऊ जी को नींबू चाय नहीं, बल्कि नींबू का रस मिला हुआ 'छैना चाय' मिली थी, टू-इन-वन की तरह। नींबू के रस से प्याले का सारा दूध फट जो गया था।



कार्यालय प्रांगण के प्रवेश द्वार पर प्रसिद्ध साहित्यकारों व उनके कार्यों सहित पुस्तकों की मासिक प्रदर्शनी दीर्घा

मेरा राजस्थान

प्रधान चौधरी

एम. टी. एस.

भारत एक ऐसा देश है जिसका नाम राजा भरत के नाम पर पड़ा। एक देश होने के बावजूद यहाँ विभिन्न धर्म व संस्कृति के लोग आपस में मिलजुल कर बिना किसी परेशानी के एक साथ रहते हैं। भारत के पश्चिम में एक राज्य "राजस्थान" है। राजस्थान का नाम आते ही मन में रेगिस्तान, ऊँट, कालबेलिया नृत्य आदि का छायाचित्र उभर आता है। मेरा गाँव भी अरावली की गोद में बसा हुआ है। आज हम आपको राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर के भ्रमण पर ले चलते हैं। मेरे ग्राम से लगभग चार किलोमीटर दूर हाथीगाँव आता है जो शायद हमारे भारतवर्ष का पहला हाथीगाँव है। यह बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है जहाँ आपको बड़ी तादाद में हाथी देखने को मिलेंगे। यहाँ इनके लिए सभी सुविधाएं हैं तथा विदेशों से भी बड़ी संख्या में सैलानी आते हैं। यह दिल्ली रोड पर स्थित है। यहाँ के हाथियों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है तथा उनको आमेर किले में सवारी हेतु काम में लाया जाता है। हाथी की पीठ पर बैठकर आमेर फोर्ट जाना अपने आप में काफी रोमांच से भरपूर है। यहाँ से करीब तीन किलोमीटर आगे ऐतिहासिक आमेर महल है। यह अरावली पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। यह अपनी वास्तुकला के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है। यहाँ का प्रवेश नीचे स्थित दलारामजी के बगीचे से होता है जहाँ विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे लगाए गए हैं। यहाँ से सीढ़ियों के माध्यम से आप ऊपर मावठा के उद्यान में जाते हैं। माना जाता है कि आमेर को कछवाहा राजपूतों ने बसाया था। आमेर नगरी, वहाँ के मंदिर तथा किले राजपूती कला का अद्वितीय उदाहरण हैं। यहाँ का मुख्य आकर्षण गणेश पोत है। ऊपर मावठा झील है जिसके मध्य में "केसर क्यारी" बनाई गई है, जिसकी बनावट आपको अपनी तरफ आकर्षित करती है। यहाँ से ऊपर महल में जाने के लिए सीढ़ियाँ लगी हुई हैं जहाँ पर माँ शिला देवी का भव्य मंदिर बना हुआ है। हम जैसे ही दरवाजे के अंदर जाते हैं, वहाँ दरवाजे के

दोनों तरफ तोप रखी हुई है। इस किले को कई बार फिल्म निर्माताओं ने भी अपनी फिल्मों में दिखाया है।

यहाँ से सीधा अंदर जाते ही माँ शिला देवी की मूर्ति विराजमान है। उनकी आभामय आँखें व सुंदर चेहरा ऐसा लगता है मानो माताजी आपको साक्षात् देख रही हों। वहाँ से बाहर आते ही हम शीश महल पहुँच जाते हैं जहाँ दीवार और छत पर लगे रंग-बिरंगे शीशे आपको अनायास ही अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। फिल्म मुगल-ए-आजम का गाना “प्यार किया तो डरना क्या” भी यहीं फिल्माया गया था। यहाँ से आपको पूरा आमेर महल दिखाई देगा। वापस नीचे उतरकर पर्वत पर बने कच्चे रास्ते से होकर हम जयगढ़ जाते हैं। रास्ता बहुत रोमांचकारी था। वहाँ से चलते-चलते हमें बहुत थकान हो गई तो हम वहाँ बड़े वृक्ष के नीचे आराम करने लगे। थोड़ी देर बाद हमने सफर शुरू किया और हम जयगढ़ किले के पास पहुँच गए। वहाँ हमने ₹80 का टिकट लिया। अंदर कई रेस्तरां व आराम करने की कुर्सियाँ व पानी की उचित व्यवस्था की गई थी। यह किला बहुत बड़ा था जो राजा की सेना के लिए बनाया गया था। यहाँ अनेक सुरंगें बनी हुई हैं। इसी किले में एशिया की सबसे बड़ी तोप जयबाण भी है। इतनी बड़ी तोप देखकर हमने दाँतों तले अँगुली दबा ली। हमारी लंबाई तो उसके पहिये के आधे से भी कम थी। हम तो सोच में पड़ गए कि इतनी बड़ी तोप को इतनी ऊँचाई पर आखिर कैसे चढ़ाया गया। दोपहर के करीब एक बजे हम वहाँ से नीचे आ गए, हमने नाश्ता-पानी किया और पैदल ही जल महल की तरफ निकल पड़े। बड़ी-बड़ी पर्वतमाला को काटकर बनाया गया रास्ता अद्भुत था। हम पहाड़ों के बीच से होकर जा रहे थे। सबसे पहले हम कनक घाटी गए, वहाँ हमने खूब मौज-मस्ती की। वहाँ से तकरीबन 100 मीटर की दूरी पर जल महल है। यदि आप कभी जयपुर आते हो तो आपको इसे जरूर देखना चाहिए। यह एक झील के मध्य बनी विशाल इमारत है। इस झील में पहले नौका द्वारा जल महल जाया जाता था किन्तु कोरोना के बाद से ही नौका-

विहार बंद हो गया है। शाम के समय यहाँ ठंडी हवा चलती है तथा बाज़ार लगता है और रंग-बिरंगी रोशनी उत्पन्न की जाती है।

नौका विहार बंद होने के कारण हम जल महल के अंदर नहीं जा सके। बाहर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो यह जल में तैर रहा हो। ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण महाराजा सवाई प्रताप सिंह द्वारा करवाया गया है। इस पर गिरने वाली रंग-बिरंगी लाइटें रात में सभी को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। यहाँ से हमने बस ली तथा हम बड़ी चौपड़ पहुँच गए। यहाँ पर भारतीय इतिहास का प्रसिद्ध महल हवा महल बना हुआ है। जयपुर का सबसे सुंदर महल तो शायद यही है। हवा महल पाँच मंज़िला इमारत है। जब भी कोई पर्यटक घूमने के लिए आता है तो वह हवा महल अवश्य जाता है। इसकी सुंदरता के चर्चे देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी है। हवा महल में तकरीबन 950 छोटी-छोटी खिड़कियाँ बनी हुई हैं जहाँ से झरोखा दर्शन होता था। यहाँ जाने के लिए त्रिपोलिया गेट के अंदर गए। वहाँ हमने सर्वप्रथम सिटी पैलेस देखा। वहाँ की बनावट तथा पुराने ऐतिहासिक शस्त्र मानो हमें इतिहास का एहसास करा रहे हों। वहाँ बीचों-बीच एक छतरी है जहाँ तांबे के बड़े-बड़े पात्र रखे हुये हैं। ज्ञात होता है कि जब अकबर यहाँ आए थे तो रानी जोधाबाई ने उनके लिए खाना इन्हीं पात्र में बनाया था। वहीं हमें जानकारी प्राप्त हुई कि फिल्म "जोधा अकबर" की शूटिंग भी यहीं हुई थी। यहाँ पर नाना प्रकार के वस्त्र व राजस्थानी सांस्कृतिक परिधानों का विक्रय भी किया जाता है। वहाँ घूमने के तत्पश्चात् हम बाहर जंतर-मंतर आ गए जोकि मुश्किल से 50 मीटर की दूरी पर है। यह एक आश्चर्यजनक खगोलीय वेधशाला है जो कि यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है। इसमें कई वैज्ञानिक यंत्र हैं जो समय व तारों की स्थिति का विशुद्ध माप देते हैं। वहाँ बहुत से सैलानी आश्चर्य से उनका फोटो ले रहे थे। यह सवाई जयसिंह द्वारा बनवाई गई अद्भुत इमारत है। इसको पत्थर की सूर्य घड़ी भी कहते हैं क्योंकि यह धूप से समय का मापन करती है। यहाँ परकोटे में बहुत

चौड़ी सड़कें उस समय के निर्माणाधिकारियों की सूझ-बूझ का परिचय देती हैं। वहीं पर गढ़ गणेश की पहाड़ी है। माना जाता है कि सवाई जयसिंह ने जयपुर निर्माण से पूर्व यहाँ गणेश जी की पूजा-अर्चना की थी। तत्पश्चात् हम वहाँ से वापस चौड़ा रास्ता होते हुये सीधा रामनिवास बाग आ गए। रामनिवास बाग का निर्माण सन् 1868 में हुआ। यह बहुत ही खूबसूरत और विशाल उद्यान है। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे, हम बहुत थक चुके थे। इसलिए हमने वहाँ एक बड़े वृक्ष के नीचे खाना-पीना किया तथा थोड़ा-सा आराम करने लगे। इतनी देर में ही हमारी नज़र पास ही एक मोर पर पड़ी जो अपने सुंदर पंखों को खोलकर नृत्य कर रहा था। उसे देखकर हमारी सारी थकान दूर हो गई। रामनिवास बाग के ठीक बीचोंबीच एल्बर्ट हॉल बना हुआ है। इसमें भी आपको ऐतिहासिक बर्तन, शस्त्र देखने को मिलते हैं। सरकार ने इसे म्यूज़ियम बना दिया है। यह गोलाकार सर्किल में बनी एक इमारत है। वहीं पास में रवीन्द्र मंच भी है जहाँ पर कई नाटक, प्रतियोगिताओं का मंचन किया जाता है। रामनिवास बाग में दो प्रकार के चिड़ियाघर हैं जहाँ जाने हेतु आपको शुल्क देना होता है। यहाँ कई दुर्लभ वन्यजीव पाये जाते हैं तथा एक पक्षीगृह है। अभी वहाँ मिनी ट्रेन संचालन का कार्य ज़ोर-शोर से किया जा रहा है। वहीं त्रिपोलिया गेट से गणगौर की प्रसिद्ध सवारी निकाली जाती है जिसे देखने के लिए देश ही नहीं विदेशों से भी मेहमान आते हैं। वहीं जो आदिवासी समाज है, उनके लोग रामनिवास बाग में नाना प्रकार के लोकगीत गाते हैं।

इतना भ्रमण करते-करते हम काफी थक गए। अतः हमने आगे जाने का इरादा निरस्त कर दिया और वहाँ से पैदल चलकर सांगानेरी गेट होते हुये बड़ी चौपड़ आ गए। वहाँ से हमारे ग्राम नारदपुरा के लिए बस होती है। वो पकड़कर हम घर जा रहे थे। रास्ते में बहुत ठंडी हवा चल रही थी और हमारी आँखों में जयपुर का मनोहर दृश्य घूम रहा था। राजस्थान की रंग-बिरंगी संस्कृति, पहनावा, मेला अपने आप में अनूठा है। यहाँ के लोग

बहुत ही अतिथि सत्कारी होते हैं। शायद तभी यहाँ का प्रसिद्ध गीत “पधारो म्हारे देस” अपने आप में सभी का स्वागत करता है।

**“जिसका कण-कण वीरता की पहचान है
वह प्राणों से प्यारा मेरा राजस्थान है।”**



**स्वतंत्रता दिवस 2023 के दौरान आयोजित किये गये रंगारंग
कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कार्मिक गण**

वीकेन्ड

प्रियदर्शिनी सिंह

वरिष्ठ अनुवादक

सोमवार से शुक्रवार एक वार की तरह आता है
हर दिन अपनी काबिलियत को साबित करने में ही चला जाता है
सोम से शुक्र तक का सफर एक सपना-सा नज़र आता है

सोम हफ्ते की शुरूआत की याद दिलाता है
अभी पूरा हफ्ता बाकी है, ये तसल्ली देकर जाता है

मंगल कहता है, एक दिन बीत गया
रुक और सोच, और बचे तीन दिनों में
तेरा क्या जाता है

बुध तो सारी सुध ही लेकर चला जाता है
दो दिन और गुजारने हैं बस
तू और क्यों घबराता है

गुरू, एक दिन और बिताने का
बल देकर जाता है
तू परवाह ना कर, हिम्मत मत हार
थोड़ा-सा धैर्य रखने में, तेरा क्या जाता है

शुक्र को अपनी सारी फिक्र छोड़
वीकेन्ड की ओर मुँह मोड़
अपनी थकान मिटाने को, अपनों के साथ समय बिताने को

अपनी माँ के हाथ से खाना खाने का और अपने बच्चे को
खुद खिलाने का
एक रास्ता नज़र आता है

हफ्ते में होते हैं सात दिन पर
काम करने वाले व्यक्ति के लिए-चाहे वह ऑफिस हो या
घर का काम
बस ये दो दिन ही हैं उनके नाम

बाकी के पाँच दिन तो आज और कल को सँवारने में ही
चला जाता है
सुबह को घर से निकला पंछी, शाम को थक हार कर घर आता है
और घर की जिम्मेदारियों को संभालने में
न जाने जीवन के एक-एक पल को जीने का जज़्बा
कब थक कर सो जाता है

शनि और रवि आगे बढ़ने की हिम्मत दिलाता है
छोटे-छोटे पलों को अपनों के साथ आराम से जीने का एहसास कराता है

अपनी और अपनों की जरूरतों को पूरा करने में ये पाँच दिन
सबसे अहम भूमिका निभाता है
पर शनि और रवि की तो बात ही निराली है
ये रिफ्रेशर बन कर जो आता है
बस कोई इतना बता दे
ये वीकेन्ड इतनी जल्दी क्यों चला जाता है।

राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी, 1950 से संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात् राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल, 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित है-

राजभाषा अधिनियम धारा, 1963 (यथासंशोधित, 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किये जाने वाले कागजात:

निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जायें- संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र, संविदाओं और करारों का निष्पादन, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र और निविदा के लिए नोटिस और प्रारूप।

राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987, 2007, 2011) के प्रमुख नियम:

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिन्दी में दिया जाना: हिंदी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी

भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिया जाए।

नियम 6- हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग: अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाए एवं ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 7- आवेदन, अभ्यावेदन आदि की भाषा: कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7 (3)- सेवा संबंधी आदेश या सूचना: यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्रवाई भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

नियम 8- नियम बनाने की शक्ति:

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा बना सकेगी।
2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों

के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् यह निष्प्रभावी हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभावी होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नियम 9- हिन्दी में प्रवीणता: यदि किसी कर्मचारी ने

1. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या
2. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या
3. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10- हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान:

यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या यदि

वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

1. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
2. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।
3. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

नियम 10 (4) एवं 8 (4)

केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित

किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 11- मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि:

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्ट्रों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मर्दें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12- अनुपालन का उत्तरदायित्व:

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-
 - i. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

- ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।
2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

राजभाषा संबंधी भारतीय संविधान के अनुच्छेदों का संक्षिप्त परिचय:

अनुच्छेद 343- संघ की भाषा

अनुच्छेद 344- राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति

अनुच्छेद 345- राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अनुच्छेद 346- एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

अनुच्छेद 347- किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

अनुच्छेद 348- उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियम, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 349- भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।

अनुच्छेद 350- व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 351- हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश

अनुच्छेद 120- संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 210- विधानमण्डल में प्रयोग की जाने वाली भाषा



आंतरिक वातावरण में ताजा हवा की श्वास



बिल्ट साहा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कहने की जरूरत नहीं है कि ज्यादातर लोग अपना अधिकांश समय घर के अंदर ही बिताते हैं, चाहे वे अपने कमरे में हों या कार्यस्थल पर। हमारे घर तथा कार्यालय का अंदरूनी वातावरण स्वच्छ और काम करने लायक है कि नहीं यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। इसलिए जिन स्थानों पर हम अपने दैनिक जीवन का अधिकांश समय बिताते हैं, वहाँ इनडोर पौधों को लगाना आंतरिक प्रदूषण से निपटने और प्राकृतिक तरीके से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को रोकने के लिए सबसे आसान उपाय है। इनडोर पौधे वास्तव में अपने वायु को शुद्ध करने के गुणों के कारण फायदेमंद होते हैं। इसके साथ यह घरों और कार्यस्थलों के निवासियों के समग्र स्वास्थ्य को और बेहतर बनाता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, प्रकाश संश्लेषण के दौरान सभी पौधे कार्बन-डाई-ऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं। लेकिन रात में, प्रकाश संश्लेषण बंद हो जाता है और पौधे आमतौर पर हमारी तरह साँस लेते हैं। यानी वे कार्बन-डाई-ऑक्साइड उत्सर्जित करके ऑक्सीजन को अवशोषित करते हैं। हालाँकि, कुछ विशिष्ट पौधे इसके ठीक विपरीत कार्य करते हैं और वे रात में भी कार्बन डाईऑक्साइड को अपने भीतर लेकर ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं। ऐसे पौधों को हमारे आसपास की हवा को चौबीसों घंटे ताज़ा रखने के लिए घर के अंदर लगाया जा सकता है। इनडोर पौधे न केवल कार्बन-डाई-ऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन का प्रवाह बनाए रखते हैं बल्कि ये हवा में विषाक्त तत्वों को रोकते हैं और बीमारी को रोकने में मदद करते हैं। यह मानसिक

तनाव को कम करने तथा ध्यान और एकाग्रता में सुधार करने के लिए लाभदायक होता है।

यदि किसी इमारत में अपर्याप्त वेंटिलेशन के साथ-साथ हवा की खराब गुणवत्ता है, तो उसमें रहने वाले न केवल बीमार पड़ सकते हैं, बल्कि उनके अंदर मानसिक क्षमता भी कम हो सकती है। वैज्ञानिक शब्दावली में इस प्रकार की स्थिति को "सिक बिल्डिंग सिंड्रोम (एस.बी.एस.) कहा जाता है। एस.बी.एस. से निपटने का एक शानदार तरीका यह है कि हमारे घर और काम करने की जगह पर अधिक से अधिक इनडोर पौधे लगाए जायें। जैसा कि हमने चर्चा की कि सभी पौधे वायु परिशोधक के रूप में कार्य कर सकते हैं, लेकिन जब हमारे घरों के व्यस्त आंतरिक स्थानों में हवा से हानिकारक विषाक्त पदार्थों और प्रदूषकों को साफ करने की बात आती है तो कुछ अन्य की तुलना में इनडोर पौधे अधिक फायदेमंद होते हैं। यह हवा को अधिक साँस लेने योग्य बनाते हैं।

80 के दशक के अंत में 'नासा क्लीन एयर स्टडी' अंतरिक्ष स्टेशनों में हवा को साफ करने के तरीकों पर शोध करने के लिए एसोसिएटेड लैंडस्केप कॉन्ट्रैक्टर्स ऑफ अमेरिका (ए.एल.सी.ए.) के सहयोग से नेशनल एयरोनॉटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (एन.ए.एस.ए.) के नेतृत्व में एक परियोजना संचालित की गयी थी। इसके परिणामों से प्रकट हुआ कि कुछ इनडोर पौधे कार्यस्थलों में फँसी हवा से हर 24 घंटे में सतासी प्रतिशत तक वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों (वी.ओ.सी.) या विषाक्त तत्त्वों को रोकने का एक प्राकृतिक तरीका प्रदान करते हैं। एस.बी.एस. बनने के निम्न कारण हैं-

1. ट्राइक्लोरोएथिलीन

स्रोत: मुद्रण स्याही, पेट में पाया जाता है और गायब हो जाता है। प्रभाव: चक्कर आना, सिरदर्द आदि।

2. फॉर्मल्डिहाइड

स्रोत: पेपर बैग, चेहरे के ऊतकों, लकड़ी के उत्पादों और सिंथेटिक कपड़ों में पाया जाता है। प्रभाव: चेहरे पर जलन और गंभीर मामलों में सूजन, स्वरयंत्र और फेफड़ों पर असर इत्यादि।

3. बेन्जीन

स्रोत: प्लास्टिक रेजिन, फर्नीचर मोम, चिपकने वाले पदार्थ और डिटर्जेंट में पाया जाता है। प्रभाव: आँखों में जलन, सिरदर्द, नींद न आना इत्यादि।

4. जाइलीन

स्रोत: तंबाकू का धुआँ, रबर, झाग और पेन्ट में पाया जाता है। इसके प्रभाव मुँह में जलन, हृदय की समस्या और सिरदर्द इत्यादि हैं।

5. अमोनिया

स्रोत: विंडो क्लीनर, फर्श मोम और उर्वरक में पाया जाता है। इसके प्रभाव हैं-आँखों में जलन, खांसी और गले में खराश इत्यादि।

नासा के शोध में यह भी सुझाव दिया गया है कि घर और कार्यालय की जगह पर प्रति 100 वर्ग फीट में कम से कम एक इनडोर पौधा होना चाहिए। इनडोर पौधे जहरीले तत्वों को मिट्टी में जमा करके हवा को शुद्ध करते हैं, जहाँ जड़ क्षेत्र के सूक्ष्म जीव उन्हें पौधे के लिए भोजन में बदल देते हैं।

इनडोर पौधों पर अन्य अध्ययन:

1. इनडोर पौधे 30 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक मानव आराम सीमा के अनुसार आर्द्रता का स्तर बनाते हैं। नॉर्वे के कृषि विश्वविद्यालय के अध्ययन दस्तावेज़ से पता चलता है कि इनडोर स्थानों में पौधों

का उपयोग करने से शुष्क त्वचा, सर्दी और सूखी खांसी की घटनाएं कम हो जाती हैं।

2. अस्पताल के कमरे में पौधे लगाने से सर्जिकल रोगियों की रिकवरी दर तेज हो जाती है, हृदय गति और रक्तचाप भी कम हो जाता है। नॉर्वे के कृषि विश्वविद्यालय के एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि पौधों के साथ कार्यालय में बीमारी की दर 60 प्रतिशत से अधिक गिर जाती है।
3. इंग्लैण्ड के सिरेनसेस्टर के रॉयल कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर के अध्ययन में पाया गया कि जब छात्रों को पौधों वाले कमरों में पढ़ाया जाता है तो वे 70% अधिक ध्यान देते हैं।
4. इनडोर पौधे वाष्पीकरण उत्सर्जन की प्रक्रिया के माध्यम से अपने आसपास की हवा को ठंडा करने में मदद करते हैं।
5. कार्यालय स्थान पर अपेक्षाकृत कम घनत्व स्तर पर वायु जनित धूल/ प्रदूषकों को हटाने में प्रभावी हैं।
6. लंदन में साउथ बैंक यूनिवर्सिटी के पीटर कोस्टा ने प्रदर्शित किया है कि पौधे बैकग्राउंड नोइस को कम करने में प्रभावी हो सकते हैं। इस प्रभाव को प्राप्त करने के लिए प्रजातियों का चयन और कमरे में पौधों की स्थिति महत्वपूर्ण है।

हमारे, प्रधान महालेखाकार कार्यालय में आउटडोर पौधा के साथ-साथ कार्यालय के उन्मुक्त स्थानों (जैसे की कॉरिडोर, बालकनी इत्यादि) में इनडोर पौधे रखे जाते हैं। ये पौधे कार्यालय की अंदरूनी सुन्दरता को बढ़ाते हैं और आंतरिक वातावरण को स्वच्छ तथा आरामदायक बनाते हैं। घर के अंदर इनडोर पौधों को रखने से और उनकी देखभाल करने से हम

प्रकृति के साथ जुड़े रहते हैं। इससे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। मनोविज्ञान के अनुसार, हरियाली के करीब रहने पर तनाव से राहत मिलती है। जब हम हरे पौधों से घिरे होते हैं तो वास्तव में अच्छा महसूस करते हैं। सौंदर्य संबंधी महत्व के अलावा, घरेलू जगह में इनडोर पौधों को लगाया जाना, आज के समय की आवश्यकता है, क्योंकि यह ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण के खतरनाक प्रभाव के खिलाफ महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनडोर पौधे उन स्थानों पर गुणवत्तापूर्ण वातावरण बनाए रखते हैं, जहाँ हम रहते हैं, काम करते हैं और आराम करते हैं।



कार्यालय परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे

एक कार्यरत महिला के जीवन में मातृत्व की भूमिका

मंदाक्रांता नाथ चौधरी

सहायक पर्यवेक्षक

एक कार्यरत महिला के जीवन में मातृत्व की भूमिका जटिल और बहुआयामी है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें माँ अपने बच्चों को प्रेरणा, स्नेह और सुरक्षा प्रदान करती है। एक कामकाजी माँ को अपने कार्यालयी एवं व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करना पड़ता है और साथ ही एक माँ होने की जिम्मेदारियों को पूरा करना पड़ता है। यह एक मुश्किल काम हो सकता है, लेकिन जिसे उचित योजना और समर्थन के साथ प्रबंधित किया जा सकता है। एक कार्यरत माँ को कई जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। इनमें से कुछ जटिलताओं में परिवार से अपनी नौकरी छोड़ने या अपने करिअर से अधिक अपने बच्चों को प्राथमिकता देने का दबाव, कामकाजी माताओं के लिए सामाजिक स्वीकृति और सम्मान की कमी, कार्यस्थल पर भेदभाव और उत्पीड़न और काम करने वाली माताओं का कम आत्मसम्मान शामिल है।

एक कामकाजी माँ के जीवन में मातृत्व की भूमिका बच्चे के जन्म से शुरू होती है। माँ बनना जीवन का एक बड़ा निर्णय है जिसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। एक महिला को अपने वित्तीय और करिअर के लक्ष्यों के साथ-साथ अपने परिवार की जरूरतों और इच्छाओं का भी ध्यान रखना पड़ता है। उसे मातृत्व के साथ आने वाले शारीरिक और भावनात्मक परिवर्तनों के लिए भी तैयार रहना पड़ता है। काम और परिवार की जिम्मेदारियों को संभालना मुश्किल हो सकता है, और एक कार्यरत माँ अभिभूत और थका हुआ महसूस कर सकती है। उसके लिए जरूरी है कि वह खुद के लिए समय निकाले और जरूरत पड़ने पर मदद माँगे। वह अपने कार्यस्थल

और घर पर अपने सबसे महत्वपूर्ण कार्यों और उद्देश्यों की एक सूची बना सकती हैं और उन्हें पहले पूरा करने पर ध्यान दें। अपने आप की देखभाल करें। अपने आप को पर्याप्त सोने, अच्छी तरह से खाना, नियमित रूप से व्यायाम करने और उन्हें खुश करने वाले शौक या गतिविधियों में भाग लेने से आराम पा सकती हैं। यह उन्हें अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके परिवार और सहयोगियों के साथ उनके रिश्तों को बनाए रखने में मदद कर सकता है।

बच्चे के जन्म के बाद एक कार्यरत महिला के जीवन में मातृत्व की भूमिका, एक नया आयाम लेती है। उसे अपने काम और पारिवारिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने का एक तरीका खोजना पड़ता है। इसका मतलब उसके काम के शेड्यूल में बदलाव करना हो सकता है, जैसे कि कम घंटे लेना या घर से काम करना या एक चाइल्डकेयर प्रदाता ढूँढना भी हो सकता है जो काम पर होने के दौरान अपने बच्चे के लिए गुणवत्तापूर्ण देखभाल प्रदान कर सकता है।

एक माँ के जीवन में अपने बच्चों को भावनात्मक समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करना भी शामिल है। इसमें सीमा निर्धारित करना और आवश्यक होने पर अनुशासन प्रदान करना शामिल है, जिसमें उसके बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए एक सुरक्षित और पोषण युक्त वातावरण प्रदान करना शामिल है। एक कामकाजी माँ को अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद अपने बच्चों के लिए भी समय निकालना चाहिए। यह उनके साथ क्वालिटी टाइम बिताकर किया जा सकता है, जैसे कि एक साथ किताबें पढ़ना या गेम खेलना और उनके साथ क्वालिटी टाइम स्पेंड करना।

आज की वास्तविकता यह है कि उसे दोनों ही रोल मॉडल एक माँ और एक कामकाजी महिला के रूप में खरा उतरने की उम्मीद की जाती है और इन दोनों "रोल मॉडल" के साथ तुलना और मूल्यांकन किया जाता

है। सच्चाई यह है कि वह लगभग हमेशा कम पड़ जाएगा और यह केवल उसके तनाव के स्तर, अपराधबोध, खुद की अपेक्षाओं को जोड़ता जाएगा।

अतः उसके जीवन में माँ होना और काम व परिवार की जिम्मेदारियों को संतुलित करने का एक तरीका खोजना महत्वपूर्ण है। इसमें अपने बच्चों की देखभाल करना और खुद के लिए समय निकालना भी शामिल है। हालांकि मातृत्व, तनाव और चिंता का स्रोत भी हो सकता है और यह खुशी और पूर्ति का स्रोत भी। उचित योजना और समर्थन के साथ, अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन को संतुलित कर एक माँ होने की खुशी के एहसास को सफलतापूर्वक महसूस किया जा सकता है। अंत में, कामकाजी माताओं को अपने परिवारों और समुदायों की भलाई के लिए उनके मूल्यवान योगदान के लिए, समाज से अधिक मान्यता, प्रशंसा और समर्थन की आवश्यकता है।



क्या आप जानते हैं?

भारत का प्रथम हिन्दी समाचार पत्र "उदन्त मार्तंड" है। उदन्त मार्तंड का अर्थ 'बाल सूर्य' है। इस समाचार पत्र का प्रकाशन 30 मई 1826 ई. में कलकत्ता से एक साप्ताहिक पत्र के रूप में प्रारम्भ हुआ था।

भारत की प्रथम हिन्दी मासिक पत्रिका "सरस्वती" थी जो सन् 1900 में चिंतामणि घोष द्वारा इलाहाबाद में प्रकाशित की गई थी तथा इसका सम्पादन साहित्यकार महावीर प्रसाद द्विवेदी (1903-1920) द्वारा किया गया था।



नन्दलालः एक उल्लेखनीय प्रेरणा

राहुल कुमार

सहायक लेखा अधिकारी

यह एक प्रेरक कहानी है। एक समय की बात है, मुंगेर जिले में स्थित खड़गपुर नामक साधारण गाँव में नन्दलाल कुमार नामक एक उल्लेखनीय युवक रहता था। नन्दलाल की कहानी दृढसंकल्प, विषम परिस्थितियों में अनुकूलता और अटूट भावना की थी जिसने उनके आसपास के सभी लोगों को प्रेरित किया।

सात साल की छोटी उम्र में नन्दलाल को एक दुःखद सड़क दुर्घटना का सामना करना पड़ा, जिसमें उनके दोनों हाथ चले गए। कई लोगों ने सोचा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना उनके भविष्य को भी परिभाषित करेगी, उनकी क्षमताओं और अवसरों को सीमित कर देगी। हालाँकि, नन्दलाल अपनी शारीरिक सीमाओं से विचलित होने वालों में से नहीं थे। इसके विपरीत, उसने उन्हें केवल चुनौतियों से पार पाने के रूप में देखा।

कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद, नन्दलाल ज्ञान की खोज में अविचलित रहे। उनका मानना था कि 'शिक्षा' ही उनकी पूरी क्षमता को उद्भूत/ उजागर करने की मूल कुंजी है। दृढसंकल्प एवं अटूट समर्पण के साथ उन्होंने 2017 में अपनी 10वीं कक्षा तथा 2019 में अपनी 12वीं कक्षा पूरी की और सभी की उम्मीदों को पार करते हुए उल्लेखनीय अंक हासिल किये।

नन्दलाल की अदम्य भावना यहीं समाप्त नहीं हुई। वर्ष 2022 में उन्होंने अच्छे अंकों के साथ मुंगेर के विख्यात कॉलेज आर.एन.डी.ए. कॉलेज, मुंगेर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की जिससे उन्होंने साबित किया कि उनकी शारीरिक दिव्यांगता उनके बौद्धिक विकास में कोई बाधा

नहीं थी। लेखन, पेन्टिंग और दैनिक गतिविधियों के लिए अपने पैरों का उपयोग करते हुए नन्दलाल ने अपनी अविश्वसनीय अनुकूलनशीलता और संसाधनशीलता का परिचय दिया।

चित्रकारी नन्दलाल का आश्रय और जुनून बन गई। अपने फुर्सत के पलों में, वह लुभावनी कलाकृतियाँ बनाते थे जो प्रकृति, मानवीय भावनाओं और उसके आस-पास की दुनिया के सार को दर्शाती थी। उनकी पेन्टिंग सिर्फ़ खूबसूरत ही नहीं बल्कि उनकी आंतरिक शक्ति और असीमित कल्पना का प्रतिबिम्ब था। अपने कला के माध्यम से, नन्दलाल ने आशा और मानव आत्मा की शक्ति को संदेश दिया।

हालाँकि नन्दलाल की उपलब्धियाँ असाधारण थी, लेकिन प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में उत्तीर्ण होने की उनकी महत्वाकांक्षा ही उन्हें वास्तव में अलग करती थी। भारी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, नन्दलाल अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहे, उन्होंने अध्ययन, तैयारी और अपने ज्ञान के आधार का विस्तार करने में अनगिनत घंटे बिताये। उत्कृष्टता के लिए उनकी निरंतर खोज ने दूसरों के लिए प्रेरणा का कार्य किया, उन्हें साहस और दृढ़ संकल्प के साथ अपनी बाधाओं का सामना करने के लिए प्रेरित किया।

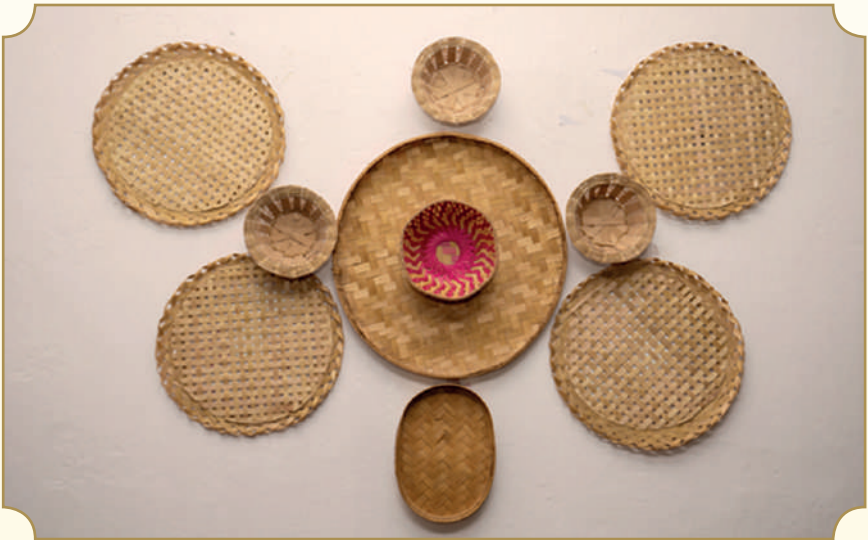
नन्दलाल कुमार की कहानी मुंगेर के छोटे से प्रखंड खड़गपुर की सीमाओं से परे तक गूँजती है। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों की खबरें फैल गई, जिन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों के दिलों को छू लिया। वह एक आशा का प्रतीक बन गए, और यह साबित कर दिया कि चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी विषम हो, अटूट भावना और अपने सपनों की निरंतर खोज के साथ, कुछ भी करना संभव हो जाता है।

मुंगेर के एक छोटे से गाँव से प्रेरणा की किरण बनने तक नन्दलाल की यात्रा मानवीय भावना की शक्ति का एक प्रमाण थी। उनकी प्रेरक कहानी ने हमें सिखाया कि असफलताएं सीमाएं नहीं हैं बल्कि विकास के

अवसर हैं और सच्ची ताकत प्रतिकूल परिस्थितियों से ऊपर उठने के दृढ़ संकल्प में निहित है।

हर चुनौतियों का सामना करते हुए अजय साह के पुत्र नन्दलाल कुमार ने कहावत "जहाँ चाह, वहाँ राह" को चरितार्थ किया।

यह एक प्रेरक कहानी सच्ची घटना पर आधारित है। हमारे ग्रुप द्वारा चलाये जा रहे "अपना मुंगेर" पेज की ओर से साक्षात्कार द्वारा एक सारांश प्रस्तुत किया गया है।



कार्यालय के प्रवेश द्वार एवं स्वागत कक्ष की साज-सजा

वन, वन विभाग और मेरा अनुभव

विनोद कुमार सोनी

लेखापरीक्षक

“वन” दो वर्णों का यह शब्द अपने आप में संपूर्ण जीवन-काल को समेटे हुए है। संपूर्ण मानव-जाति, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु इसी पर निर्भर हैं। वनों का महत्व तो हम भली-भाँति जानते हैं परंतु हममें से कम ही लोग हैं जो इनके संरक्षण के बारे में सोचते हैं। कहा जाता है कि प्रकृति एवं मानवजाति के संतुलन का मूल आधार वन ही हैं। वन पारिस्थितिक तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वृक्षारोपण एवं वनों का संरक्षण हमारे पारिस्थितिक तंत्र को मजबूत बनाता है। प्राणी मात्र का जीवन-चक्र, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वनों पर ही निर्भर है। वन हमारे जीवन का मूल आधार हैं। मनुष्य व जीव को जीवित रखने के लिए वन ही ऑक्सीजन देते हैं। अगर पौधे नहीं होंगे तो मनुष्य, जीव जंतु भी नहीं रहेंगे। मनुष्य जीवन में पेड़ों का बड़ा महत्व है। अर्थात् **वन है तो जीवन है**। इसीलिए वन संरक्षण अत्यावश्यक है। किंतु आज स्थिति कुछ और ही है। वनों की अवैध और अंधाधुन्ध कटाई भी एक बड़ी समस्या है। वनों के विनाश के कई कारण गिनाये जा सकते हैं जिनका मुख्य रूप से जिम्मेदार मनुष्य है। वनों के विनाश के पीछे मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या का दबाव भी है। वनों से हम लेते तो बहुत कुछ हैं पर वनों को देते बहुत कम हैं। जितने वन काटते हैं उस अनुपात में पौधारोपण और संरक्षण का प्रयास नहीं होता है। परिणामस्वरूप वन क्षेत्र का निरन्तर हास होता जा रहा है। बढ़ती आबादी ने अपने आवास, भोजन आदि प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए वनों का उपभोग किया है। आबादी की बसावट के लिए तो कहीं खेती के नाम पर वनों को काटा जा रहा है। वनों के विनाश के लिए औद्योगीकरण भी कम जिम्मेदार नहीं है। वनों की कटाई की समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। वनों का हास वन्य प्राणियों एवं पशु-पक्षियों के जीवन के लिए तो हानिकारक है ही

अपितु मानव जीवन के लिए भी बहुत दुष्प्रभावी है। भारत सरकार द्वारा वन संरक्षण एवं वन्य प्राणियों की सुरक्षा हेतु प्रत्येक राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेश में वन विभाग की स्थापना की गई है। परंतु यह केवल वन विभाग का नहीं अपितु हम सभी का कर्तव्य है कि हम वनों का संरक्षण करें एवं वृक्षारोपण करें।

चलिए आज मैं आप सभी के साथ अपना अनुभव साझा करता हूँ जिसे मैंने वन विभाग में कार्यरत होकर हासिल किया है। मैं भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश राज्य का निवासी हूँ इसलिए सर्वप्रथम यहाँ के वन विभाग के बारे में कुछ जानकारी आपके समक्ष रखता हूँ। मध्यप्रदेश प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता विशेषकर वन एवं वन्य प्राणियों की विविधता के लिये जाना जाता है। मृदा और जल के संरक्षक के रूप में वनों की महत्ता अद्वितीय है। मध्यप्रदेश की विभिन्न पर्वत श्रृंखलायें एवं उनका जलग्रहण क्षेत्र वनाच्छादित होने के कारण ही कृषि एवं कृषि पर आधारित जनसंख्या का पोषण कर पाती हैं। यहाँ उष्ण कटिबंधीय शुष्क, पतझड़ वाले सागौन, मिश्रित तथा साल के वन हैं। मंडला, डिण्डोरी, शहडोल तथा बालाघाट में साल वन हैं। चंबल क्षेत्र ग्वालियर, शिवपुरी, भिण्ड तथा दतिया में करधई तथा झाड़ीदार वन हैं, शेष क्षेत्र में बहुमूल्य सागौन वन हैं। वनों से लकड़ी के अलावा बाँस एवं प्रचुर मात्रा में विभिन्न प्रकार की लाखें एवं औषधियाँ मिलती हैं। प्रदेश औषधीय पौधों के समृद्ध संसाधनों से भी परिपूर्ण है। चूँकि वनों में तथा वनों की सीमा के आस-पास रहने वाले आदिवासी एवं अन्य ग्रामीण जनता का बहुत बड़ा भाग वनों पर निर्भर है, अतः वन विभाग का प्रमुख दायित्व वनों का वैज्ञानिक दृष्टि से इस तरह प्रबंधन करना है कि न सिर्फ़ ग्रामवासियों को वनों से जीविकोपार्जन का स्रोत निरंतर बना रहे, बल्कि प्रबंधन में उनकी भागीदारी भी सशक्त हो और वन एक प्राकृतिक धरोहर के रूप में संवहनीय, संरक्षित एवं संवर्धित संसाधन के रूप में विकसित होता रहे।



इंदिरा गाँधी वन प्रशिक्षण शाला, पचमढ़ी

मध्यप्रदेश में वन विभाग की स्थापना (वर्ष 1860) से ही वनों का वैज्ञानिक प्रबंधन प्रारंभ हो गया था और संभवतः मध्यप्रदेश, भारत का पहला राज्य है जहाँ भारत की प्रथम वन नीति (वर्ष 1894) से ही कार्ययोजना (वर्किंग प्लान) बनाना प्रारंभिक स्तर पर चालू किया गया था। प्रदेश के वनों का वैज्ञानिक प्रबंधन कार्ययोजना के अनुसार किया जाता है। कार्ययोजना दस वर्षीय वन प्रबंधन का दस्तावेज है जो वनों की न सिर्फ उत्पादन की दृष्टि से संवहनीयता को सुनिश्चित करता है अपितु वनों को उनके पर्यावरण संबंधी कार्यों जैसे जल एवं मृदा संरक्षण, कार्बन अवशोषण, वन्य प्राणी प्रबंधन, जैव विविधता प्रबंधन जैसे कार्यों को भी सुनिश्चित करता है। वन क्षेत्रों का वैज्ञानिक प्रबंधन, वन संसाधन का संरक्षण व संवर्धन क्षेत्रीय स्तर पर गठित प्रशासनिक इकाइयों के माध्यम से किया जाता है। वन विभाग में पदों का विवरण कुछ इस प्रकार है: वन चौकीदार, वनरक्षक, वनपाल, उप वनक्षेत्रपाल, वनक्षेत्रपाल, सहायक रेंज अधिकारी, रेंज अधिकारी, सहायक वन संरक्षक, वन संरक्षक, ब्लॉक वन अधिकारी, वन परिक्षेत्र अधिकारी, वनमण्डलाधिकारी आदि। हमारे वनों के लिए चंद्र पंक्तियाँ-

**अरण्य कहें या कहें गहन, विपिन कहें या कहें कानन।
वन तो है एक वृक्ष समूह, इनसे मिलती हमें छाया है।
देते हमें हैं ये प्राण वायु, जीवन इनसे ही हमने पाया है।**

मैं मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के एक छोटे से ग्राम परसवाड़ा का निवासी हूँ। परसवाड़ा भी वनों से घिरा हुआ है। इसी कारण मैं वनों से थोड़ा-बहुत परिचित तो था ही परंतु मुझे वनों को बेहतर तरीके से जानने का अवसर वर्ष 2016 में प्राप्त हुआ। जी हाँ वर्ष 2016, इसी वर्ष मैंने मध्यप्रदेश सरकार (व्यावसायिक परीक्षा मण्डल, भोपाल) द्वारा आयोजित वनरक्षक की परीक्षा उत्तीर्ण कर 01 जुलाई, 2016 को वनरक्षक का पदभार ग्रहण किया था। वन विभाग में वनरक्षक पद पर नियुक्ति उपरांत ही मुझे वनों को भीतर से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। आप सभी जानते ही होंगे की वनरक्षक पद, एक वर्दी धारी पद है। वनरक्षक बनने पर मुझे भी वर्दी धारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मेरी प्रथम पदस्थापना उत्तर वनमण्डल (सामान्य) कार्यालय, बालाघाट के अंतर्गत पूर्व बैहर परिक्षेत्र के मण्डई परिवृत्त के बाकलबीट में सहायक बीटगार्ड के रूप में हुई थी। यह (सहायक बीटगार्ड) पदनाम अप्रशिक्षित वनरक्षक को दिया जाता है। बीट के रक्षक को बीटगार्ड कहा जाता है। मैंने कुछ समय बाकल के बीटगार्ड के साथ रहकर थोड़ा-बहुत कार्यानुभव हासिल किया। इसके कुछ ही महीने पश्चात् मुझे मण्डई परिवृत्त के बीजाटोलाबीट के बीटगार्ड का कार्यभार सौंप दिया गया। वन संरक्षण, वन्य प्राणियों की रक्षा, विभिन्न आधिकारिक वानिकी कार्य और वन अपराधों का पता लगाना ये सभी एक बीटगार्ड के प्रमुख कर्तव्य हैं। मैंने इन कर्तव्यों के निर्वहन का संपूर्ण प्रयास किया जिसके लिए प्रतिदिन वन गस्तियाँ की गयी, समय-समय पर ग्रामों में वन सभाएं आयोजित कर ग्रामवासियों को वनों के महत्व के बारे में बताया एवं आग्रह किया कि यदि कोई भी अवैध क्रियाकलाप उनके संज्ञान में आए तो तुरंत सूचित करें आदि। नौकरी के दौरान सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण समय ग्रीष्म ऋतु (अग्नि सीज़न) का था क्योंकि

इसी समय में वनों में आग लगने की सूचना मिलती थी जोकि या तो अपने आप लगती थी या असामाजिक तत्वों द्वारा लगायी जाती थी और इस पर नियंत्रण कर पाना बहुत परिश्रम का कार्य होता था। अग्नि सीज़न में परिवृत्त के सभी बीटगार्ड आग पर काबू पाने के लिए एक-दूसरे की सहायता करते थे। मैंने भी साथी वन कर्मियों के साथ मिलकर वनों की आग पर नियंत्रण, अवैध कटाई, अतिक्रमण एवं अवैध रेत उत्खनन पर अंकुश लगाने का संपूर्ण प्रयास किया। इस प्रकार मैंने अप्रशिक्षित वनरक्षक रहते हुए सितम्बर, 2017 तक बाकलबीट में सहायक बीटगार्ड, बीजाटोला एवं मानेगांव-1। बीट में बीटगार्ड के पद पर कार्य किया। इसके पश्चात् मुझे इंदिरा गांधी वनरक्षक प्रशिक्षण शाला, पचमढ़ी में छह माह के प्रशिक्षण हेतु बीटगार्ड के प्रभार से भारमुक्त कर प्रशिक्षण शाला जाने के लिए आदेशित किया गया और मैं, आदेशानुसार वन प्रशिक्षण शाला, पचमढ़ी में प्रशिक्षण हेतु रवाना हो गया।

पचमढ़ी, मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित एक सुरम्य हिल स्टेशन है। यह बालाघाट जिले से लगभग 300 किलोमीटर एवं प्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 210 किलोमीटर दूर स्थित है। मध्यप्रदेश का हिल स्टेशन पचमढ़ी, सतपुड़ा की खूबसूरत पहाड़ियों के मध्य स्थित होने के कारण सतपुड़ा की रानी के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। पचमढ़ी के घने वन, बड़े-बड़े जलप्रपात, निर्मल स्वच्छ जल के तालाब, औपनिवेशिक शैली की वास्तुकला में निर्मित आकर्षक चर्च को देखने के लिए दुनिया भर के लोग यहाँ आते हैं। यहाँ पाण्डवों के पचमढ़ी में आवास करने और गुफाओं में प्राचीन शैलचित्र बने होने के कारण ये गुफाएं पौराणिक और पुरातात्विक महत्व रखती हैं। भगवान शिव के जटा शंकर, गुप्त महादेव, चौरागढ़ और महादेव गुफा में रुकने के कारण इसे भगवान शिव का दूसरा घर भी कहा जाता है।

इसी पचमढ़ी में स्थित है इंदिरा गांधी वनरक्षक प्रशिक्षण शाला जहाँ मध्यप्रदेश के भिन्न-भिन्न जिलों से अप्रशिक्षित वनरक्षक प्रशिक्षण हेतु आते हैं। मैं भी अपने प्रशिक्षण के लिए अपना सामान समेट कर यहाँ पहुँच

गया। प्रशिक्षण शाला में प्रत्येक कार्य के लिए अलग पहनावा (ड्रेस) था एवं यहाँ कार्यों की समय-सारणी बनी थी जिसमें प्रातः 06:00 बजे शारीरिक शिक्षण (फिज़िकल ट्रेनिंग) से लेकर 08:00 बजे रात्रि भोजन तक विभिन्न कार्यों के लिए समय निर्धारित था। इस समय-सारणी का पालन करना प्रत्येक प्रशिक्षार्थी के लिए आवश्यक था अन्यथा उसपर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती थी। शुरूआत में मुझे समय-सारणी अनुसार ढलने में दिक्कत हुई परंतु बाद में सब कुछ आसान हो गया। शनिवार एवं रविवार को छोड़कर प्रतिदिन हमारी यही दिनचर्या थी। हमें यहाँ अलग-अलग प्रकार के वनों के बारे में पढ़ाया गया एवं प्रत्येक शनिवार को हमें आस-पास के वनों में ले जाया जाता था एवं विभिन्न वृक्षों एवं पौधों के औषधीय गुणों की भी जानकारी दी जाती थी। रविवार को हमें प्रशिक्षण शाला से बाहर जाने की अनुमति थी। प्रशिक्षण के दौरान ही मैंने बाघ गणना करना, परेड करना और बंदूक चलाना आदि सीखा। बंदूक पकड़ना एवं इसे चलाने का एक अलग ही अनुभव था। प्रशिक्षण शाला में हमने अनुशासन में रहकर कार्य करना सीखा। यहाँ रहते हुए ही हम सभी प्रशिक्षार्थियों को सप्ताह भर के लिए अलग-अलग बीटों में पदस्थ किया गया था जहाँ हमने प्रतिदिन 25 से 30 किलोमीटर सतपुड़ा की पहाड़ियों में गस्त लगायी एवं कुछ एक वन अपराध भी पकड़े थे। सतपुड़ा के इन वनों में गस्त के दौरान मैंने बहुत से वन्य प्राणी भी देखे जैसे-बारहसिंगा, गौर, कोटरी, भालू आदि। इसके बाद बाघ गणना के लिए सभी प्रशिक्षार्थियों को जनवरी 2018 में पचमढ़ी के मढ़ई रेन्ज में पदस्थ कर दिया गया और मैं भी बाघ गणना का हिस्सा बना। इस गणना में मध्यप्रदेश में सर्वाधिक बाघ होने के कारण इसे बाघ राज्य (टाइगर स्टेट) का दर्जा मिला। गणना का कार्य खत्म होते ही हमें पुनः प्रशिक्षण शाला के लिए भारमुक्त कर दिया गया। प्रशिक्षण शाला में आने के कुछ दिनों बाद हम सभी को मध्यप्रदेश राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों के वनों की जानकारी देने हेतु विभिन्न जिलों जैसे उज्जैन, सिवनी, बड़वानी, माण्डू, भोपाल, खरगौन, इंदौर आदि का भ्रमण भी कराया गया।

यह भ्रमण मेरे स्मरण में जीवन पर्यन्त रहेगा। आपको भी इसके बारे में अवश्य बताता परंतु यदि इस भ्रमण का वृत्तांत कहना प्रारंभ कर दूँ तो शायद यह लेख ही पूर्ण नहीं कर पाऊँगा। इसीलिए इसका वर्णन पत्रिका के अगले अंक में करूँगा।

भ्रमण के पश्चात् हम सभी वापस इंदिरा गांधी वन प्रशिक्षण शाला में अपने प्रशिक्षण का आनंद लेने लगे और लगभग 15 से 20 दिनों के भीतर ही मेरा चयन इस कार्यालय [कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) त्रिपुरा, अगरतला] में होने का आदेश मेरे घर पर पोस्ट के माध्यम से प्राप्त हुआ और मैंने अपनी वनरक्षक की सेवा से

09 मार्च, 2018 को त्यागपत्र देकर इस कार्यालय में 21 मार्च, 2018 को कार्यभार ग्रहण कर लिया।

यह थी मेरी वनविभाग, मध्यप्रदेश से कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा तक की यात्रा या कहूँ वनों के साथ व्यतीत किया गया बहुमूल्य समय।



कार्यालय परिसर में सृजित नवीन ग्रंथागार



भारत में खेलों का भविष्य

विशाल सिंह

लिपिक

भारत एक अरब से अधिक लोगों का देश है। हमारे स्टोर में मौजूद प्रतिभाओं, क्षमताओं की कल्पना करना मुश्किल है। हैरानी की बात यह है कि मानव संसाधनों का भण्डार होने के बाद भी हमारी लगभग दो प्रतिशत जनता ही खेल में नियमित रूप से भाग लेती है। क्या यह अवसरों की कमी है या भारतीय समाज के लोगों को खेल में रुचि नहीं है? या फिर इसके इच्छुक खिलाड़ियों में सामर्थ्य और उनके उचित मार्गदर्शन की कमी है? इसका जवाब सही मायने में यह है कि हमारे यहाँ न तो सामर्थ्य की कमी है न ही खेल में रुचि लेने वालों की बल्कि हमारे देश में संसाधनों तथा उचित मार्गदर्शन की कमी रह जाने की वजह से हमारे देश के बहुत सारे प्रतिभावान खिलाड़ी आगे नहीं बढ़ पाते हैं। हालांकि धीरे-धीरे बहुत सारे परिवर्तन हुए हैं, सरकार इस दिशा में सार्थक प्रयास कर रही है और उचित परिणाम भी आए हैं। इस बात के सबूत के तौर पर ओलंपिक गेम, कॉमनवेल्थ गेम तथा एशियन गेम में भारत का प्रदर्शन देख सकते हैं। हालांकि अभी भी बहुत से क्षेत्रों में बहुत ज्यादा काम करने की आवश्यकता है।

भारत में प्रतिभा: भारत में प्रतिभा का भण्डार है, खासकर खेल के क्षेत्र में। लेकिन इस प्रतिभा को खोजा नहीं गया और उचित लाईमलाइट नहीं मिल पाई। ऐसा प्रेरणा की कमी से हुआ या राजनीतिक नेताओं के समर्थन और सबसे महत्वपूर्ण जनता द्वारा मान्यता के कारण भी हो सकता है।

ऐसा माना जाता है कि प्राचीन भारत में माता-पिता और शिक्षक दोनों ही खेल को उचित महत्व देते थे। उस समय लोग समझ गए थे कि खेलकूद में शामिल होना बच्चे के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। मार्शल आर्ट, तीरंदाज़ी, तलवारबाजी, वजन उठाना आदि गतिविधियों का बहुत सम्मान किया जाता था। महाभारत तथा रामायण में भी खेल को काफी महत्व दिया गया है। परंतु जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया लोग पदार्थवादी होते गए, उन्हें आराम की जिंदगी तथा वैसे क्षेत्र जिसमें पैसे और करिअर दोनों सुरक्षित हों, उसकी तरफ ज्यादा झुकाव होता गया। हम अपने जीवन से खेल को दूर करके विभिन्न प्रकार के रोगों को अपने शरीर में आमंत्रित करते गए।

पिछले कुछ दशकों में माता-पिता ने शारीरिक तंदुरुस्ती को ज्यादा महत्व देना बंद कर दिया है और उन्हें केवल अपने बच्चों की अकादमिक उत्कृष्टता की चिंता है। यदि वे कोई रुचि लेते हैं तो बच्चे का आकर्षण क्रिकेट के प्रति होना चाहिए।

माता-पिता का यह पूर्वाग्रह एक प्रमुख कारण है जिसने इस योग्य उद्योग के विकास को विफल कर दिया। इसके अलावा प्राधिकरणों की अज्ञानता में भी भारत में खेल के अन्य रूपों की लोकप्रियता को कम करने में एक भूमिका निभाई। लेकिन पिछले तीन से पाँच सालों में इस चलन में बदलाव देखा गया है।

भारतीय खेल परिदृश्य सभी प्रकार के खेलों में गहरी दिलचस्पी ले रहा है जिसके परिणामस्वरूप भागीदारी, दर्शकों की संख्या और खेल संबंधी उद्योगों में वृद्धि हो रही है। भारत के आर्थिक माहौल में सुधार, खर्च योग्य आय में वृद्धि और बदलते दृष्टिकोण में खेल-संबंधी वस्तुओं और सेवाओं की मांग में वृद्धि को बढ़ावा दिया है।

खेल के क्षेत्र में सुधार: भारत खेल के लिए उभरता हुआ बाजार है। इस उद्योग ने पिछले कुछ वर्षों में सभी क्षेत्रों में विकास का अनुभव किया है। भारत में करोड़ों खेल प्रेमी हैं और इन खेलों में बढ़ती दर्शकों की संख्या के साथ-साथ खिलाड़ियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। भारत सरकार ने एथलेटिक सुविधाओं और प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण निवेश किया है जो आने वाले समय में अधिक एथलीटों और खिलाड़ियों को पंप करेगा।

फलते-फूलते खेल उद्योग से रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि हुयी है। इसने उन युवाओं की भी उम्मीद जगायी है जो किसी दिन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने का सपना देखते हैं। भारत सरकार ने 'खेलो इण्डिया' नामक प्रोग्राम चलाकर पूरे देश में खेल के प्रति नया उत्साह प्रदान किया है। देश के छोटे से छोटे गाँव तक इसकी पहुँच बढ़ रही है। युवाओं तक जागरूकता बढ़ रही है जिससे गाँव का मेहनती बच्चा भी विभिन्न प्रकार के खेलों में अपनी रुचि दिखा रहा है। सरकार स्कूल में भी विभिन्न प्रकार के खेलों की प्रतियोगिता का आयोजन करा रही है ताकि भारत का प्रत्येक विद्यार्थी शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से अधिक विकास कर सके। इसका सकारात्मक परिणाम देखने को भी मिल रहा है। भारत अब राष्ट्रमण्डल खेल, एशियन गेम और ओलंपिक में पहले से अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। खेलो इंडिया ने खेल के प्रति लोगों की धारणा को लेकर लोगों के मन में भी महत्वपूर्ण बदलाव किया है। यह खिलाड़ियों को उनकी स्कूली जीवन के दौरान सहायता करता है और इन्हें खेल में करिअर बनाने के लिए प्रेरित करता है। यह आठ साल के कार्यकाल के लिए पाँच लाख रुपये प्रति वर्ष की छात्रवृत्ति प्रदान करता है जो खिलाड़ियों को बहुत कम उम्र से अपने कौशल को विकसित करने में मदद करेगा, हमारे भविष्य के नायकों को केंद्रीय सहायता प्रदान करेगा।

खेलों में सुधार की जरूरत: भारतीय जनता की बदलती मानसिकता ने देश में खेल उद्योग को नया जीवन दिया है। फिर भी, अभी

हमें लंबा रास्ता तय करना है। उन लोगों के लिए अधिक सामाजिक स्वीकृति और अवसर होने चाहिए जो खेल में भाग लेना चाहते हों और अपना करिअर बनाना चाहते हों। हमें यह भी पता लगाने की जरूरत है कि बदलते समय के साथ खेल के सार को कैसे जीवित रखा जाये।

ऐसे कई बदलाव हैं जिन्हें भारतीय खेलों को वास्तव में प्रगति करने से पहले लागू करना होगा। उदाहरण के लिए, देश को खेल के बुनियादी ढांचे में निवेश करने और बेहतर प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करने की जरूरत है। एथलीटों को भी अपने नजरिए से कुछ बदलाव करने की जरूरत है जो अंततः उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करेगा। इसलिए हमें खेल को एक फलते-फूलते, आकर्षक व्यवसाय और खेल उद्योग के रूप में बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

भारत का प्रदर्शन: भारत हमेशा खेल में महाशक्ति रहा है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हाल के दिनों में ओलंपिक खेलों और राष्ट्रमण्डल खेलों में अब तक सर्वाधिक पदक जीते हैं। बेहतर अभ्यास, सुविधाओं और समर्थन के साथ खिलाड़ियों ने दुनिया के सामने अपनी ताकत साबित की है।

परिवर्तन की एक हवा जो 21वीं सदी के मोड़ पर बहना शुरू हुई, अधिकांश खेल विधाओं में बह गई। खिलाड़ी अन्य खेल श्रेणियों जैसे मुक्केबाज़ी, कुश्ती, तीरंदाज़ी, हॉकी आदि में गहरी रुचि ले रहे हैं और उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।

राष्ट्रमण्डल खेल 2022 में, भारतीय एथलीटों ने कुल 61 पदक (22 स्वर्ण, 16 रजत, 23 कांस्य) पदक जीते। संकेत सरगार बर्मिंघम में पदक जीतने वाले पहले भारतीय थे जिन्होंने पुरुषों की 55 किलोग्राम भारोत्तोलन स्पर्धा में रजत पदक जीता था। मीराबाई चानू राष्ट्रमण्डल खेल 2022 में स्वर्ण जीतने वाली पहली भारतीय थी, जबकि जेरेमी लालरिनुंगा बर्मिंघम में

शीर्ष पोज़ियम हासिल करने वाले पहले भारतीय व्यक्ति थे। सभी पदकों के साथ-साथ इन खिलाड़ियों ने देश का गौरव बढ़ाया है।

निष्कर्ष: भारत ने पिछले सात दशकों में कई अग्रणी खेल क्षणों का सामना किया है। भारत में खेल का तात्पर्य भारत में खेले जाने वाले विभिन्न प्रकार के खेलों से है जो आदिवासी खेलों से लेकर मुख्यधारा के खेलों तक हैं। भारत में खेल में शानदार प्रदर्शन करने वालों को बहुत सम्मान की नजरों से देखा जाता है। हम महसूस कर सकते हैं कि भारतीय खेलों का स्वर्ण युग अभी शुरू हुआ है। सन् 1948 में अपना पहला ओलंपिक पदक जीतने से राष्ट्रमण्डल खेल 2022 में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दर्ज करने तक भारत ने आज़ादी के बाद से खेल में एक लंबा सफर तय किया है।

भारत ने एक प्रसिद्ध कहावत "खेलोगे कूदोगे होंगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब" से अपना रास्ता अलग कर लिया है। आज भारतीय खिलाड़ी दुनिया के हर हिस्से में जाकर शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं और देश का नाम रोशन कर रहे हैं। देश में खेल के लिए बुनियादी सुविधाएं भी लगातार बढ़ रही हैं। हर प्रदेश तथा जिला में बेहतर सुविधाएं प्रदान करने की कोशिश की जा रही है। हालांकि अभी भी बहुत सारे प्रयास करने की आवश्यकता है। यूरोप के देशों की तुलना में देखें तो आज भी हम बहुत पीछे हैं। हालांकि क्रिकेट एक अपवाद है। क्रिकेट के क्षेत्र में हमने बहुत काम किया है जो अन्य किसी भी देश से ज्यादा है। इसी की वजह से आज हम क्रिकेट के क्षेत्र में बेहतर खिलाड़ी और प्रदर्शन दोनों दे पा रहे हैं। हमें क्रिकेट को उदाहरण के तौर पर लेकर अन्य खेलों के लिए भी सरकार तथा खेल संगठनों को मिलाकर बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराना चाहिए ताकि गाँव से शहर तक बच्चा जिस खेल में रुचि रखता हो, वो देश का प्रतिनिधित्व कर सके और देश का नाम रोशन कर सके।

सरकार को खिलाड़ियों के भविष्य को देखते हुये उन्हें सरकारी नौकरी में भी विशेष सुविधा मिलनी चाहिए ताकि जब वह खेल से रिटायर हो तो उसे भविष्य की चिंता ना हो और आर्थिक संकट ना आए। इस सार्थक प्रयास में केवल सरकार को ही नहीं बल्कि निजी संस्थाओं तथा देश के अमीर लोगों को भी आगे आना चाहिए क्योंकि एक सामूहिक प्रयास से यह बहुत तेजी से आगे जाएगा और देश का नाम दुनिया के कुछेक देशों में शुमार होगा।

**“खेल दोस्ती है, खेल स्वास्थ्य है, खेल शिक्षा है,
खेल जीवन है और खेल दुनिया को एक साथ लाता है”**

जे. ए. लमरंच (अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के पूर्व अध्यक्ष)



**वर्ष 2023 में सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों द्वारा 77^{वें} स्वतंत्रता
दिवस समारोह पर ध्वजारोहण**

प्रेरणा स्रोत: मेरी खता या तुम्हारी गलती

संदीप विश्वकर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आज हम उस दौर से गुजर रहे हैं जहाँ रिश्तों की बागडोर, पैसे की बैशाखी पर टिकी है, मैं यहाँ कुछ अपवाद को छोड़ देना चाहूँगा। आज जहाँ रिश्ते की मर्यादा में लगातार भावनात्मकता की गिरावट दर्ज की जा रही है जिससे हमारा समाज कमज़ोर होकर एक कमज़ोर राष्ट्र का निर्माण कर रहा है। चूंकि भावनात्मकता का सीधा संबंध मानवीय मूल्यों से है। आज छोटी-छोटी बातों के लिए समाज में खूनी संघर्षों को देखा जा सकता है। हाल ही में मध्य प्रदेश के मोरेना जिले में दो परिवारों के बीच खूनी झड़प में जमीन विवाद के कारण छह लोगों की हत्या हो गई। मेरा मानना है कि कहीं न कहीं पारिवारिक रिश्तों में भावना की कमी के कारण हमारे समाज में ऐसी घटनाओं की बाढ़-सी आ गई है।

अब आप लोग सोच रहे होंगे कि मेरी कविता से इन सारी बातों का क्या संबंध है? लेकिन उपर्युक्त सारी बातों का खास कर मोरोना वाली घटना ने मुझे अपनी पंक्तियों को लिखने पर विवश कर दिया। ऐसे मैं सोच बहुत दिनों से रहा था कि मैं पारिवारिक रिश्तों, खास कर भाई-भाई के कड़वाहट भरे रिश्तों पर कुछ लिखूँ ताकि इन रिश्तों में आई खाइयों को कुछ पाटा जा सके।

मैं अपने इस उद्देश्य में कितना सफल हो पाऊँगा ये मैं नहीं जानता लेकिन अगर मेरी पंक्तियों से किसी में भी सकारात्मक प्रभाव आया तो शायद मैं अपनी इस कविता को लिखने के उद्देश्य को सफल मानूँगा।

कविता के बारे में: इस कविता में एक भाई अपने दूसरे भाई को समझाने की कोशिश कर रहा है और अपनी इस कोशिश में अपने बचपन की पुरानी बातों को उसे याद दिला रहा है और आह्वान कर रहा है कि तुम पहले जैसे अपने जीवन में लौट आओ अर्थात् जैसे पहले हम लोग साथ मिलकर रहा करते थे। आगे यह भी कहता है कि अगर हमलोगों के बीच कोई गलतफहमी हो गई है तो मिल बैठकर बात कर उसको दूर करते हैं। आगे आप मेरी कविता को पढ़कर समझेंगे कि क्यों आज के परिवेश में इस तरह की बातों का होना जरूरी है ताकि परिवार में टूट न हो सके।

मेरी खता या तुम्हारी गलती

अपनी अस्तित्व की लड़ाई मैं सदैव लड़ता रहा हूँ,
तुम्हारी नादानियों को भूलने की कोशिश करता रहा हूँ।

तुम सोचते रहे कि मैं बिल्कुल बदल गया हूँ,
तुम गलत थे, मैं तो तुमको मौका देता रहा हूँ।

कि शायद तुम कभी बदल जाओ,
और फिर वही जिंदगी में वापस लौट आओ।

इंतजार है तुम्हारा कि कब आओगे,
फिर वही अपने पुराने ख्यालात को लाओगे।

कि फिर वही माँ का बेटा बन पाओगे,
या फिर वही अनमने जिंदगी में रह जाओगे।

आज भी जब पुरानी याद में तुम्हें पाता हूँ,
मत पूछो, कितना तन्हा हो जाता हूँ।

सब कुछ पा कर भी लगता है तुम छुप गए,
सामने से देखता हूँ तो लगता है तुम रूठ गए।

कुछ तो बात होगी जो मैं जान नहीं पाया,
या तुम्हारे कुछ अरमानों को पहचान नहीं पाया।

कहीं कोई खता तो नहीं हो गयी तुम्हें जानने में,
या कहीं तुम गलत हो मुझे पहचानने में।

आओ हम लोग मिल बैठकर बात करते हैं,
खता और गलती को मिलकर बर्बाद करते हैं।



क्या आप जानते हैं?

भारत के राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त (3 अगस्त 1886 - 12 दिसंबर 1964) हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। हिन्दी साहित्य के वे खड़ी बोली के प्रथम कवि थे। वर्तमान में भारत के राष्ट्र कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर हैं। वे ओजस्वी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कवि के रूप में जाने जाते हैं। 'रश्मिरथी' उनकी प्रमुख रचना है।

पारिभाषिक शब्द

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी अनुवाद
1.	Expedite	शीघ्र कार्रवाई करना
2.	Expunge	निकालना, हटा देना
3.	Facsimile	प्रतिकृति
4.	Fallacious argument	भ्रामक तर्क
5.	Fast unto death	आमरण अंशन
6.	Fiduciary fund	न्यासीय निधि
7.	Flimsy excuse	थोथा बहाना
8.	Hire and fire policy	'रखो-निकालो' नीति
9.	Hierarchy	पदसोपान
10.	Honoris causa	सम्मानार्थ
11.	Hypothecation	मालबंधन
12.	Ibidem	वही
13.	Impersonation	प्रतिरूपण
14.	Implicit	निहित
15.	In situ	स्वस्थाने
16.	Insolvency	दिवाला, दिवालियापन
17.	Installation	संस्थापन
18.	Instalment	किस्त
19.	Instigate	उकसाना
20.	Institute	संस्थान

ढलता हुआ सूरज

सायक नंदी

लेखापरीक्षक

हर रोज की तरह आज भी पश्चिम आसमान में सूरज ढल रहा है। लगता है कोलकाता शहर में कुछ जल्दी ही शाम हो रही है आजकल। अभी तो सितंबर का महीना चल रहा है, दुर्गा पूजा आने में अभी एक महीने की देरी है। क्या पता दुर्गा माँ के आशीर्वाद से फिर से सब कुछ सही हो जाये। इस बार की दुर्गा पूजा हर बार से बहुत अलग है। हर बार की तरह इस बार दुर्गा पूजा आने की कोई खुशी नहीं हो रही है। हर बार बाबा हम सबको कितने सारे नए कपड़े खरीद कर देते थे, पर पता नहीं इस बार मैं माँ को एक दो सौ रुपये की साड़ी भी खरीद कर दे पाऊँगा क्या? आज फिर से एक इंटरव्यू था, जिसमें मैं बड़ी ही शान से असफल हुआ हूँ। पिछले तीन महीनों में दस से ज्यादा इंटरव्यू की यह एक ही कहानी है। बी.टेक. के आखिरी वर्ष में आने के बाद जो लड़का परीक्षा में नहीं बैठता है, उसको कौन काम देगा? गंगा किनारे बैठकर यह सब सोचते-सोचते पास वाली चर्च की पाँच बार बजने वाली घंटी ने बता दिया कि शाम के पाँच बज चुके हैं। कब इतना समय बीत गया आज उसका कुछ पता ही नहीं चला। घर पर अनु अकेली है। तीन बजे तक घर वापस चला आऊँगा, बोला था। बहुत चिंता कर रही होगी। उसके पास तो कोई मोबाइल फोन भी नहीं है कि मुझको पूछ सके मैं कहाँ हूँ और ज्यादा कुछ सोचे बिना बैग और हेलमेट उठाकर बाइक स्टार्ट की।

मेरा नाम अरुणभ है, जिसका मतलब है सूरज की किरण, जिससे सारे जहान को रोशनी मिलती है। लेकिन मुझे लगता है मेरे परिवार को मेरे से सिर्फ और सिर्फ अँधेरा ही मिलता है। बाबा को लगता था मैं पूरे परिवार

का नाम रोशन करूँगा, सबके चेहरे पर मुस्कान लाऊँगा। इसलिए यह नाम रखा था। पता नहीं अभी भी वह घर के एक कोने में जिंदा लाश की तरह सोये हुये यही सोचते हैं क्या? बाबा पोस्ट ऑफिस में प्यून का काम करते थे। दादा जी कभी पोस्ट मास्टर हुआ करते थे, लेकिन बाबा की 12वीं की परीक्षा के पहले ही अचानक हार्ट अटैक से उनका देहांत हो गया। सबसे बड़ा बेटा होने के कारण पोस्ट ऑफिस से बाबा को प्यून की नौकरी मिली थी। “पोस्ट मास्टर का बेटा प्यून बनकर घर-घर चिट्ठी बांटने का काम करेगा क्या?” सब लोग यही सोचते थे। लेकिन बाबा अपने चार छोटे-छोटे भाई बहन को बड़ा करने के लिए यही काम करने के लिए राजी हो गए थे। बाबा तब 12वीं की परीक्षा तक नहीं दे पाये थे, इसलिए 40 साल की नौकरी में कभी प्यून के पद से पदोन्नति भी नहीं हो पाई थी। इतने समय में अपने भाई-बहनों की बड़ी धूमधाम से बड़े घरों में शादी करवाई, अपने दोनों भाईयों की पढ़ाई की पूरी ज़िम्मेदारी उठाई। एक भाई को वकील और दूसरे भाई को डॉक्टर बनाया। फिर उन दोनों की भी बड़े धूमधाम से शादी करवाई और इन सबके बाद जाकर खुद 35 साल की उम्र में शादी की। आज करीब चार महीने हो गए उस हादसे को। बाबा को एक दिन कड़ी धूप में चिट्ठी बांटते समय सनस्ट्रोक हो गया और वो साइकिल से गिर गए। अस्पताल में एक हफ्ते रहने के बाद जब घर वापस आए तब वो हमारे पहले वाले बाबा नहीं थे। उनके शरीर का 80 प्रतिशत हिस्सा पैरालाइज़ हो गया था और तब से बाबा बिस्तर पर ही हैं। जिन भाई-बहनों के लिए उन्होंने अपनी जिंदगी कुर्बान कर दी, उन्होंने मदद करना तो दूर की बात है, एक बार फोन करके खबर तक नहीं ली बाबा की।

यह सब याद करते-करते एक बड़े चौराहे पर सिग्नल में लाल बत्ती होने के कारण बाइक रोकनी पड़ी। कोलकाता शहर की यह एक बड़ी समस्या है, एक बार सिग्नल पर रुक गए तो दस मिनट से ज्यादा एक ही

जगह पर खड़ा रहना पड़ता है। यह जो बाइक मैं चला रहा हूँ, यह मुझे अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी है। आखिरी जन्मदिन पर बाबा ने मुझे यह बाइक तोहफे में दी थी। बाबा ने अपने पूरे जीवन साइकिल पर चिट्ठी बांटने का काम किया है और मेरे लिए बाइक खरीद कर लाये। सिर्फ इसलिए कि बेटे को बस और मेट्रो की भीड़ ठेलते हुये कॉलेज न जाना पड़े। मेरी माँ इस बात पर बाबा से बहुत नाराज़ थी। बड़ी मेहनत से जमा किए हुये प्रोविडेंट फंड के पैसे तोड़कर बाइक खरीदने की क्या जरूरत थी? घर में तो मेरी और भी दो बहने हैं; छोटी बहन अनु अभी कक्षा नौ में है और बड़ी बहन अवनि की उम्र 26 साल हो गई है। उसकी शादी करवाने से पहले इतनी महंगी बाइक क्यों खरीदी? इस बात पर माँ ने बाबा से एक महीने तक बात नहीं की। लेकिन बाबा को अपने बेटे से इतना प्यार और उम्मीद थी कि वो बोले, “मैंने अरुण को आज बाइक खरीद कर दी है और एक दिन देखना अरुण हम सबको अपनी मारुति में पूरा कोलकाता शहर घुमाएगा।” पता नहीं बाबा को सिर्फ मेरे से ही क्यों इतनी उम्मीदें थी।

मेरी बड़ी बहन अवनि हमेशा से ही पढ़ाई से लेकर हर एक चीज़ में मुझसे बहुत ज्यादा अच्छी थी। उसकी बनाई हुई चित्रकला और हस्तकला को सभी से बहुत तारीफ मिलती थी। लेकिन बाबा कभी भी उसको इस काम के लिए उत्साहित नहीं करते थे। दीदी का जब 10वीं कक्षा का रिजल्ट आया था तो पूरा मोहल्ला चौंक गया था। विज्ञान के तीनों विषयों में एक में भी अंक 95 प्रतिशत से कम नहीं थे और कुल मिलाकर 92 प्रतिशत नंबर आए थे। उसको आगे भी विज्ञान लेकर ही पढ़ना था, लेकिन तब बाबा ने कहा था कि उसके लिए ट्यूशन फीस नहीं भर पाएंगे। बाबा को शायद लगता था कि लड़कियों को सिर्फ घर का काम सीखना चाहिए जो आगे जाकर शादी के बाद काम आयेगा। लेकिन वह शादी भी कहाँ हो पाई दीदी की! एक साल पहले से उसका रिश्ता पक्का हो रखा था और इस बार दिसंबर की ठंड में उसकी शादी की तारीख थी। दीदी जिस स्कूल में अस्थाई शिक्षिका के रूप

में काम करती थी, वहाँ के प्रिंसिपल को दीदी बहुत पसंद थी। अपने बेटे के लिए रिश्ता लेकर खुद आई थी हमारे पास। उनका बेटा, मतलब विक्की दा बेंगलुरु में बहुत बड़ी कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर काम करते हैं। सुना है कि बेंगलुरु में उनके खुद के दो फ्लैट और एक विदेशी कंपनी की बहुत महंगी गाड़ी भी है। लेकिन बाबा के एक्सीडेंट की खबर मिलने के कुछ दिनों के अंदर ही उन्होंने दीदी से बात करना पूरी तरह बंद कर दिया। शायद उनको यह लगा होगा कि दीदी के साथ रिश्ता रखने से उनको बाबा की देखभाल का सारा खर्च उठाना पड़ेगा। कुछ दिन बाद उनकी माँ से पता चला कि विक्की दा अब यह शादी नहीं करना चाहते हैं; साथ में दीदी को यह भी बोला गया था कि दीदी उनके स्कूल में पहले जैसे ही शिक्षिका का काम कर सकती है।

अपना आत्मसम्मान छोड़कर फिर से उसी स्कूल में पढ़ाने जाना दीदी के लिए संभव नहीं था। दीदी अगले दिन सुबह ही किसी को कुछ बताए बिना घर छोड़कर चली गई थी। तीन दिन बाद फोन करके बताया कि वह अभी जमशेदपुर में है। वे तीन दिन हमारे लिए 30 साल के बराबर थे, सबको लगा था कि बदनामी के डर से दीदी ने आत्महत्या कर ली है। लेकिन हकीकत में वैसा नहीं हुआ। दीदी ने वहाँ के किसी आर्ट स्कूल में शिक्षिका के पद के लिए दो महीने पहले आवेदन किया था। साथ ही अपनी बनायी हुयी चित्र कलाओं के फोटो भी भेजे थे। बाबा के एक्सीडेंट से एक हफ्ता पहले ही उसके पास भर्ती का पत्र आया था, लेकिन बाबा के डर से वो घर पर कुछ बता नहीं पाई थी। दुर्गा माँ की यह भी क्या इच्छा थी, जिस बेटे को जिंदगी में आगे बढ़ने में बाबा ने कभी साथ नहीं दिया, आज उसके पैसे से ही उनकी चिकित्सा, दवाई और परिवार के बाकी तीन लोगों का भी पेट चल रहा है। साथ में अब माँ भी चार घरों में बाई का काम करती है। अनु तो अभी स्कूल में है, साथ में बाबा की दिनभर देखभाल भी करती है। बाबा को नहलाने से लेकर समय पर सटीक दवाई खिलाना, सब कुछ अनु ही करती

है। इस घर में सिर्फ़ एक मैं ही हूँ जिससे बाबा को सबसे ज्यादा उम्मीदें थीं। अभी तक घर पर बैठे-बैठे माँ और बड़ी बहन की इतनी मेहनत से कमाए हुये पैसे पर ऐश कर रहा हूँ।

पीछे की 50 गाड़ियों का हॉर्न एक साथ सुनने के बाद अपनी सोच में डूबी हुई दुनिया से फिर से इस दुनिया में वापस आना पड़ा और मालूम चला कि सिग्नल की बत्ती हरी हुई है। इस चौराहे से दाहिने वाला रास्ता घर की तरफ़ जाता है और बायें वाला रास्ता शहर से बाहर जाने वाले हाइवे पर जाकर मिलता है। पता नहीं क्यों आज मेरी बाइक ने चौराहे से अपने आप ही बायें तरफ़ मोड़ ले लिया। यह रास्ता शहर से दूर जाता है और बाइक में ज्यादा पेट्रोल भी नहीं बचा है। यह पता होते हुये भी आज बाइक घुमाने का मन नहीं किया। किस मुँह से आज घर वापस जाऊँ? माँ के सामने जाकर खड़ा होने की हिम्मत और मुझ में नहीं है। इतने दिनों से एक के बाद एक इंटरव्यू में नाकामयाब होते-होते थक चुका हूँ मैं। किस काम का हूँ मैं? परिवार के खर्चों में माँ और बहन को एक पैसा देकर मदद करने के लायक नहीं हूँ मैं! क्या फायदा है इस जिंदगी का? मन में जब यह सब सोच आ रही थी, ठीक उसी समय मेरी बाइक हाइवे वाले मोड़ पर आकर पहुँची। दो सेकेण्ड के लिए आसमान की तरफ़ देखकर सोचा और फिर हाइवे वाला रास्ता पकड़ लिया।

पश्चिम आसमान में अभी सूरज लगभग ढल चुका है। अभी सूरज का बस थोड़ा-सा ही हिस्सा दिख रहा है। लेकिन उससे कोई भी रोशनी नहीं मिल रही है। ठीक वैसे ही जैसे मेरी जिंदगी के आसमान का सूरज लगभग ढल चुका है, हाँ थोड़ा-सा हिस्सा बचा है मगर वह किसी के कुछ काम में नहीं आता है। इसीलिए लगता है अब शायद उसको पूरी तरह से ढल जाना चाहिए। पता है अनु को बहुत दुःख पहुँचेगा। जिंदगी भर बड़ा भाई कहने लायक कोई नहीं रहेगा। लेकिन माँ और दीदी को तो एक पेट कम पालना

पड़ेगा, उनके सिर से इतना बड़ा एक बोझ उतर जाएगा। बस अब तो सोच लिया है। धीरे-धीरे मेरी बाइक की गति बढ़ने लगी, 40 से 60, 60 से 80 और बहुत दूर एक लंबा ट्रक आते दिखाई दे रहा है उस साइड से, दस या बारह चक्के का तो होगा जरूर। इस शहर के साथ-साथ मेरी जिंदगी का सूरज भी अब पूरी तरह से ढल चुका है और यह जो शाम आई है, मेरे लिए लेकर आई है बस अँधेरा और अँधेरा। देखते ही देखते मेरी बाइक की गति अब 80 से 100 पार कर गई।

लेकिन एक मिनट! वह क्या है? दूर से ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है! पास आया तो दिखाई दिया कि एक कुतिया मरी पड़ी है, लगता है कोई बड़ी गाड़ी उसके ऊपर से निकल गयी होगी। उसके पास उसका एक छोटा बच्चा भी है जो उसकी माँ के मरे हुये शरीर से दूध की आखिरी घूँट पी रहा है। बाइक से उतरकर मैंने उसको अपनी गोद में उठा लिया। ठीक उसी समय मेरी जिंदगी की लगभग होने वाली शाम मेरी कुछ ही दूरी से हॉर्न बजाते-बजाते निकल गई। अभी-अभी मैं यह क्या करने जा रहा था, यह सोचकर ऊपर आसमान की तरफ देखा। आसमान में आज पूर्णिमा का चाँद निकला है। मेरे गोद में पड़ी नन्ही-सी जान ने मुझे आवाज देकर बताया कि वह बहुत भूखा है। सामने ही रास्ते की उल्टी तरफ एक चाय की दुकान नजर आई। बाइक को रास्ते से साइड में खड़ा करके उसको चाय की दुकान पर लेकर गया। फिर पॉकेट से आखिरी बचा हुआ पन्द्रह रुपया निकालकर उसके लिए दो बिस्कुट और थोड़ा-सा दूध खरीद कर उसको खिलाया। इसको इधर ऐसे ही छोड़कर चला जाऊँगा तो कोई दूसरी गाड़ी आकर इसको भी ठीक उसी तरह इसे इसकी माँ के पास भेज देगी। इसको तो अपने साथ घर लेकर जाना ही पड़ेगा। पता है कि माँ बहुत गुस्सा होगी इसको देखकर, सोचेगी कि खुद तो बोझ है ही, ऊपर से एक और को रास्ते से उठाकर घर ले आया। लेकिन साथ में यह भी पता है कि अनु बहुत खुश

होगी इसे देखकर। यह रहेगा तो अनु दिन भर इसके साथ खुशी-खुशी खेल पाएगी। उसको फिर से अपनी गोद में उठाकर ऊपर आसमान की तरफ देखा। चाँद की रोशनी पूरे आसमान में फैली हुई है। "जैसे सूरज ढल जाने के बाद उसकी जगह चाँद आकर पूरी धरती को फिर से रोशन करता है, उम्मीद की दिशा दिखाता है; ठीक वैसे ही मेरी जिंदगी में तूने आकर मुझमें फिर से जीने की उम्मीद जगाई है। परसों फिर से एक इंटरव्यू है, घर जाकर उसकी तैयारी करनी पड़ेगी। शशि, मेरी नन्ही-सी जान, चलो अब घर जाने का समय हो गया है। आज से तेरा नाम होगा शशि, अरुण का शशि।"



कार्यालय परिसर में 77^{वें} स्वतंत्रता दिवस, 2023 का आयोजन

रिक्त स्थान की पूर्ति करें

हिमांशु काश्यप धर्मदर्शी

प्रधान महालेखाकार

बचपन में परीक्षा के दौरान प्रश्न-पत्र में एक प्रकार के प्रश्न सदैव रहते थे, 'रिक्त स्थान की पूर्ति करें।' याद है न आपको? ये प्रश्न हर विषय में होते थे, भाषा, गणित, विज्ञान एवं समाज-विज्ञान में भी। छोटी कक्षाओं में तो मुझे यह प्रश्न बड़े अच्छे लगते थे क्योंकि उनके सारे उत्तर मुझे मालूम रहते थे और उनके पूरे नंबर भी जो मिलते थे।

परीक्षा में रिक्त स्थान रखने के कई फायदे हैं। किसी विषय पर विद्यार्थी का ज्ञान नापने का यह एक बढ़िया तरीका है। यह प्रश्न हमें मजबूर करता है कि हम उत्तर दें। यहाँ अनुमान लगाने से काम नहीं चलता, हमें उस विषय की सटीक जानकारी होनी चाहिए। शिक्षक यह तुरंत महसूस कर सकते हैं कि उनके छात्र वास्तव में किसी विषय का कितना गहरा ज्ञान रखते हैं।

ये प्रश्न शाला जीवन से संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) की परीक्षा तक चले। रिक्त स्थान ज्यादातर एक ही रहता था और उस का एक ही उत्तर हो सकता था। जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए, कई बार एक से अधिक रिक्त स्थान आने लगे। प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा में कई बार रिक्त स्थान भरने के लिए एक से अधिक विकल्प भी दिए जाते थे। ये विकल्प सही उत्तर के इतने करीब होते थे कि हम सोचते रहते थे।

हमें सिखाया गया है कि रिक्त स्थान की पूर्ति का मतलब है जो सब से सही हो, उसी शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करना। दूसरे शब्दों में रिक्त स्थान को ऐसे शब्द से भरना ताकि वह रिक्त स्थान, सही स्थान बन सके।

लेकिन ये सही शब्द क्या हो सकता है? सोचने वाली बात यह है कि यह सही शब्द कुछ भी हो सकता है। ज़िंदगी में कभी-कभी सही स्थान कोई वक्त हो सकता है। कोई जगह हो सकती है, कोई अनुभूति हो सकती है। व्यक्ति-व्यक्ति के अनुसार इस खाली स्थान शब्द की परिभाषा बदल जाती है। कोई एक रिक्त स्थान को कभी अलग-अलग शब्द से भी भर सकते हैं और फिर उसके बाद पूरे वाक्य के भिन्न-भिन्न अर्थ निकल सकते हैं।

मैं सोचता हूँ कि क्या यह रिक्त स्थान सिर्फ़ परीक्षा के सवाल तक ही सीमित रहता है? बिल्कुल नहीं। रिक्त स्थान सिर्फ़ पाठशाला जीवन तक सीमित नहीं है। हमारे आस-पास ऐसी कितनी सारी घटनाएं घटती रहती हैं, जहाँ किसी न किसी तरह रिक्त स्थान की पूर्ति होती रहती है।

कोरोना-काल याद है? कामवाली बाई, रसोईवाली बाई, माली, कार साफ़ करने वाला लड़का- सभी अपने-अपने शहर-गाँव चले गए। झाड़ू-पोंछा, बर्तन, बगीचे और गाड़ी की सफाई, सब कुछ हम सभी ने स्वयं ही किया और उन के रिक्त स्थानों की पूर्ति की।

कभी कोई रोमांचक (thriller) फिल्म देखने गए हैं? अंत तक पता नहीं चलता कि खूनी कौन है? फिल्म के दौरान हम मन ही मन उस के रिक्त स्थान की पूर्ति करते रहते हैं। फिल्म के अंत में खुलासा हो जाता है तथा सारे रिक्त स्थान (जो कुछ हमें समझ नहीं आया था) भर जाते हैं।

महाभारत के युद्ध से पहले की एक घटना हम सब जानते हैं, जब दुर्योधन और अर्जुन दोनों कृष्ण के पास युद्ध में सहायता मांगने जाते हैं। एक तरफ से देखें तो दोनों को लगता है कि यह लड़ाई लड़ने के लिए उनके पास सब कुछ नहीं है। किसी चीज़ की कमी है, रिक्त स्थान है। इस रिक्त स्थान को लड़ाई से पहले भरना चाहिए। जब उनसे पूछा गया कि क्या चाहिए?

मैं या मेरी सेना? दुर्योधन को लगता है कि एक अकेले आदमी से क्या पूर्ति होगी? तो वह सेना मांग लेता है, करोड़ों सैनिकों की सेना। अर्जुन के पास मांगने के लिए शेष रहता है। एक ही आदमी बचता है, कृष्ण! और हम देखते हैं कि अकेले कृष्ण, पूरे युद्ध में जहाँ-जहाँ कोई रिक्त स्थान दिखा, उसको भर देते हैं।

जब कोई समय बीत जाता है और उस समय के दौरान जो काम होना था, करना था, वह अगर नहीं हुआ या ठीक से नहीं हुआ तो उसे हम दुबारा नहीं कर सकते। किसी के भी जीवन में कितनी सारी जगह खाली होती हैं। ढेर सारे संबंध आधे-अधूरे ही छूट जाते हैं। उन बिछड़े-बिखरे संबंधों के कोई विकल्प हो सकते हैं क्या? उस रिक्त स्थान में पूर्ति हो सकती है क्या? रिश्ता करीबी हो या दूर का, गहरा हो या ऊपर-ऊपर से, किसी भी संबंध की पूर्ति करना आसान काम नहीं।

मैं सोचता हूँ कि कितनी सारी चीजें, स्थिति, पल, व्यक्ति, ऐसे हैं जो अब जीवन में उपलब्ध नहीं हैं। यह सब कभी जीवन का एक अहम हिस्सा थे, आज नहीं। वह आए और चले गए, एक कभी न भरने वाला रिक्त स्थान छोड़कर।

जीवन में एक बहुत बड़ी रिक्तता आ जाती है, जब कोई अपना हमें छोड़कर चला जाता है। जीवनसाथी का चले जाना या फिर माता-पिता या संतान से बिछड़ना भी एक तरह से ऐसी ही घटना है। कुछ भी करो, यह रिक्तता कभी भी भरी नहीं जा सकती। कुछ लोग किसी न किसी काम में जुट जाते हैं और अपनी रिक्तता को भरने की कोशिश करते हैं। कुछ लोग टूट जाते हैं, बिखर जाते हैं और फिर कभी अपने आप को संभाल नहीं पाते।

26 जुलाई, आज कारगिल विजय दिवस है। टीवी पर एक दुःखी माता कह रही है कि उसका 19 साल का बेटा जो गया सो गया, लौटकर वापस नहीं आया। किसी का भी रिक्त स्थान कहाँ भर सकता है, किसी अन्य के द्वारा?

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मैं पैदा ही हुआ हूँ, रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए। घर में छोटा होने के कारण जब घर में कुछ सामान की जरूरत हो, बड़े भैया को कौन कहेगा? रिक्त स्थान की पूर्ति करो! मुझे ही बाजार जाना पड़ता। खेलकूद में शुरू से उतनी दिलचस्पी नहीं थी जितनी किताबों में या इधर-उधर भटकने में, क्रिकेट खेलते वक्त कभी एक खिलाड़ी कम हुआ तो? रिक्त स्थान की पूर्ति करो! मुझे ले लिया जाता।

आज नौकरी में देखता हूँ कि यह काम अधूरा है, उसको पूरा करो। यह काम कभी नहीं हुआ था, तो उसको करो। इस कार्यालय में कोई नहीं है, उसका अतिरिक्त कार्यभार संभालो, रिक्त स्थान की पूर्ति करो। देखने वाली बात यह है कि नौकरी भी मिली है, क्योंकि कहीं कोई रिक्त स्थान था, उस की पूर्ति करने के लिए।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करते-करते अब समझ नहीं आ रहा है कि मेरा अपना कोई स्थान कहाँ है? क्या मेरा भी कोई स्थान कहीं बन पाएगा?

कहते हैं कि हमारे ब्रह्माण्ड में अरबों आकाशगंगाएँ हैं, जिनका एक बहुत छोटा हिस्सा हमारा सौरमण्डल है। लेकिन यह ब्रह्माण्ड भी तो पूरी रिक्तता से भरा पड़ा है, जिस के बीच-बीच में कहीं ये सारी आकाशगंगाएँ हैं। ब्रह्माण्ड की तुलना में यह अपनी दुनिया कितनी छोटी-सी है लेकिन यह भी बड़ा-सा रिक्त स्थान है। सचमुच मनुष्य तो सिर्फ कोई अत्यंत सूक्ष्म बिंदु समान, रिक्त स्थान की पूर्ति करता है, फिर भी कितना गुर्रर.....

यह सब जब मैं सोचता हूँ तो हर बार एक मनुष्य के रूप में अपने आप को कुछ कमतर ही पाता हूँ, किसी भी रिक्त स्थान के लिए।

बचपन में परीक्षा का 'रिक्त स्थान भरें' भाग, हमें उन वाक्यों को पूरा करने के लिए अपनी शब्दावली का उपयोग करने के लिए प्रेरित करता था, जिनमें शब्द गायब रहते थे। आज आवश्यकता उस बात की है कि हम अपने अन्तःकरण में झाँके और पता लगाएं कि कौन-सा स्थान रिक्त है और उसे किस शब्दावली से भरें।

अगर देशभक्ति, ईमानदारी की कमी है तो उसे पूरा करें। अगर आपसी व्यवहार में मानवता, बंधुता, समानता नहीं है, तो उस का आचरण करें। अगर हृदय में स्नेह, सद्भाव करुणा नहीं है, तो उसे उससे भरें।



**भारत के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रबीन्द्रनाथ टैगोर के जन्मदिवस
पर परंपरागत परिधानों का प्रदर्शन**

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाएँ एवं उनकी लिपियाँ

क्र.सं.	भाषा	लिपि	क्र.सं.	भाषा	लिपि
1.	असमिया	असमिया	12.	ओड़िया	ओड़िया
2.	बांग्ला	बांग्ला	13.	पंजाबी	गुरुमुखी
3.	गुजराती	गुजराती	14.	संस्कृत	देवनागरी
4.	हिंदी	देवनागरी	15.	सिंधी	अरबी
5.	कन्नड़	कन्नड़	16.	तमिल	तमिल
6.	कश्मीरी	शारदा	17.	तेलुगू	तेलुगू
7.	कोंकणी	देवनागरी	18.	उर्दू	अरबी
8.	मलयालम	मलयालम	19.	बोडो	देवनागरी
9.	मणिपुरी	मेइतेई	20.	संथाली	ओल चिकि
10.	मराठी	देवनागरी	21.	मैथिली	देवनागरी
11.	नेपाली	देवनागरी	22.	डोगरी	देवनागरी

- इनमें से 14 भाषाएँ संविधान के प्रारंभ में शामिल कर ली गई थीं।
- भारत सरकार ने छह भारतीय भाषाओं को 'शास्त्रीय भाषा' के रूप में सूचीबद्ध किया है:-
- तमिल (2004), संस्कृत (2005), कन्नड़ (2008), तेलुगू (2008), मलयालम (2013) और ओड़िया (2014)
- वर्ष 1967 में सिंधी भाषा को 21वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया था।
- वर्ष 1992 में 71वें संशोधन अधिनियम द्वारा कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली को शामिल किया गया।
- वर्ष 2003 में 92वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया।

कार्यालय में आयोजित गतिविधियों की झलकियाँ



गणतंत्र दिवस समारोह 2023 के
उपलक्ष्य में सुसज्जित कार्यालय परिसर



गणतंत्र दिवस समारोह वर्ष 2023 में झंडा
फहराते हुए सेवानिवृत्त कार्मिक



कार्यालय आवासीय परिसर: स्वच्छता
अभियान से पूर्व



कार्यालय आवासीय परिसर: स्वच्छता
अभियान के पश्चात्



कार्यालय परिसर में प्रधान महालेखाकार
महोदय द्वारा पौधारोपण



श्री द्विजेन्द्रलाल रॉय के जन्म दिवस
(19 जुलाई 1863) के अवसर पर मनोरंजन
क्लब द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रम



प्रधान महालेखाकार महोदय की त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक साहा के साथ सौहार्दपूर्ण भेंट



बाँस से बने इको-फ्रेंडली हस्तशिल्प



लेखापरीक्षा सप्ताह 2022 में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन



महात्मा गाँधी द्वारा प्रयोग किये जाने वाले चरखे की प्रतिकृति



सेवानिवृत्त कार्मिक को विदाई समारोह में प्रतीक चिह्न भेंट करते हुए



रक्षाबंधन 2023 के पावन पर्व पर वृक्ष को रक्षा सूत्र बाँधते हुए कार्मिक



जगन्नाथ देव मंदिर, उदयपुर, त्रिपुरा

काले स्लेट पत्थर से बने जगन्नाथ मंदिर के खंडहर त्रिपुरा राज्य के उदयपुर (त्रिपुरा की राजधानी अगरतला से लगभग 55 कि.मी. दूर) में जगन्नाथ दिघी के दक्षिण-पश्चिम कोने पर देखे जा सकते हैं। पूरे पूर्वोत्तर भारत में स्लेट पत्थर से बने मंदिर नहीं हैं।

त्रिपुरा के महाराजा कल्याण माणिक्य के दो पुत्रों महाराजा गोविंद माणिक्य और जगन्नाथ देव ने शक संवत् 1583 (1661 ई.) में कार्तिक पूर्णिमा पर इस मंदिर को भगवान विष्णु को समर्पित किया था। बाद में, महाराजा विजय माणिक्य के शासनकाल के दौरान, उनके सेनापति दैत्यनारायण उत्कल से जगन्नाथ देव की मूर्ति लाये और इसे यहाँ स्थापित किया।

भूकंप में मंदिर को भारी क्षति पहुँची थी। लेकिन धन के अभाव के कारण इस मंदिर का जीर्णोद्धार नहीं हो सका।





त्रिपुरी जनजाति

त्रिपुरी जनजाति त्रिपुरा राज्य में सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय है। सभी जनजातीय समूहों में संख्यात्मक रूप से यह सबसे बड़ा समूह है। त्रिपुरी (जिसे त्रिपुरा, टिपरा, टिपरासा, द्विप्रा के नाम से भी जाना जाता है), पूर्वोत्तर भारतीय राज्य त्रिपुरा का एक तिब्बती-बर्मन भाषी जातीय समूह है। वे उत्तर-पूर्व भारत और बांग्लादेश में त्विप्रा/ त्रिपुरा साम्राज्य के निवासियों के वंशज हैं।

त्रिपुरी, त्रिपुरा के मूल निवासी हैं जिनकी अपनी अनूठी और विशिष्ट समृद्ध संस्कृति, परंपरा और इतिहास है। वे अपना प्रभाव दक्षिण में चटगांव डिवीजन तक, पश्चिम में कोमिला और नोआखली और उत्तर में सिलहट डिवीजन (सभी वर्तमान बांग्लादेश में) तक बढ़ाने में सक्षम थे।